मेरा संघर्ष मुझ से बेहतर कोई नहीं जान सकता : रितु फोगाट

सजग सरस युवा पत्रिका

दिसंबर 2020 ₹ 30.00

मुक्ता

वैडिंग सीजन में
ग्लैमरस लुक

औनलाइन गैंबलिंग
यूज फिर मिसयूज

सफलता के लिए
पढ़ना जरूरी

जब
गर्लफ्रैंड
हो खर्चीली

खुद को कैसे करें
प्रैजेंट

स्टाइल
औफ द मंथ

टीना आहूजा के
मदमस्त अंदाज

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Piramal
TETMOSOL®
डॉक्टर का सुझाया
No.1
ब्रैंड#
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
टेटमोसॉल
Prescribed by Doctors*
नींबू जैसी ताज़ी महक
खुजली
चकत्ते
फोड़े
पपड़ी
से राहत दे
CMAC - TE/20200901-28

टेटमोसोल से रोज़ नहाना, मतलब, त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना।

अपने सुझावों तथा सवालों के लिए, हमारे कंस्यूमर केयर अफसर से इस टोल फ्री नंबर 1800 22 9898 पर या consumercare@piramal.com पर सम्पर्क करें।

^खुजली (स्केबीज़) के कणो द्वारा हुए संक्रमण के लिए। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह ले। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT मई २०२० में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित।

सभी प्रमुख मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

मुक्ता
दिसंबर 2020 अंक: 991

लेख

औनलाइन गैंबलिंग : यूज फिर मिसयूज 4
जब गर्लफ्रैंड हो खर्चीली 12
बबल रैप फोड़ने का मजा 16
खुद को कैसे करें प्रैजेंट 18
वैडिंग सीजन में ग्लैमरस लुक 20
सफलता के लिए पढ़ना जरूरी 22

बातचीत

अभिनेत्री टीना आहूजा 32
मिक्स मार्शल आर्टिस्ट रितु फोगाट 38

कथा साहित्य

दीदी, मुझे माफ कर दो 10
अपनापन 14
दिल वर्सेस दौलत 26
सांझा दुख 34

स्तंभ

मुक्त विचार 9
प्रेम समस्याएं 31

फीचर

वैब सीरीज रिव्यू : क्या देखें 24
Style of the month 36
बौलीवुड buzz 40
Small screen 46

कविता

कुंआरे नैन 45
तेरा प्यार नशीला 45
अपना गम छिपाना पड़ता है 45
गूंगा सा 45

दिल्ली प्रैस
साम्पाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल:
editor@delhipress.biz

8527666772

निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz
ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय : दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845** ● ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जी.डी. अंबेडकर मार्ग, **वडाला-400021. फोन : 022-24122661** ● 11, फर्स्ट क्रौस, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बैंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076** ● 14, पहली मंजिल, सीसंस कौंप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448** ● 122, पहली मंजिल निजाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596** ● जी-7 पार्वेनियर टावर्स, 1 मैरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** ● 16 ए, अमृता बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा **कोलकाता-700026.** ● 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840** ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 05222618856** ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुटा रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264.
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 30.00. एक/दो वर्ष : ₹360/720. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.4 है डाक व्यय अतिरिक्त)

	International Subscription Price Air mail Charges	Express Delivery Europe & South America	Express Delivery SAARC Countries	Express Delivery Rest of Countries
1 year	50	210	120	140
2 year	95	420	240	275

(All the Prices given are in US$)

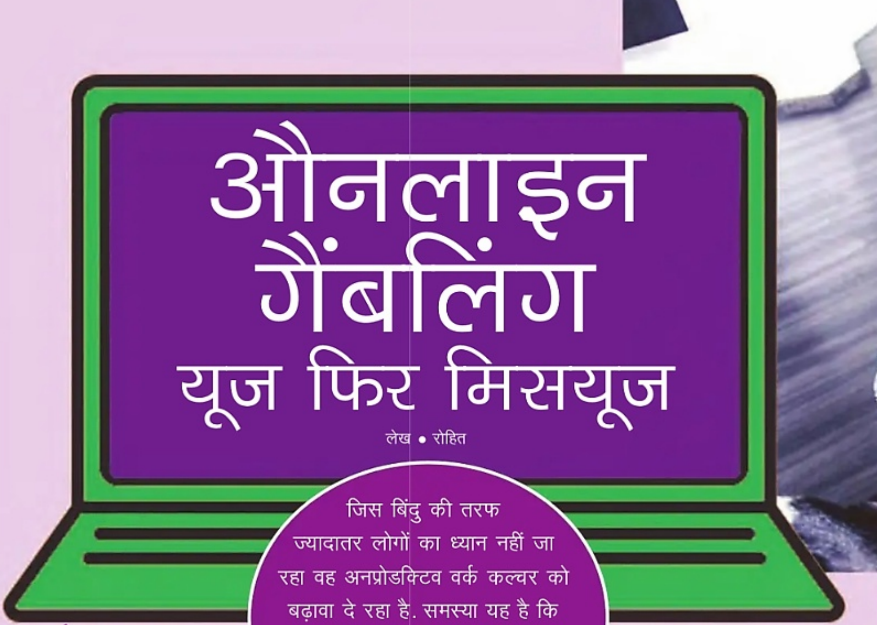

औनलाइन गैंबलिंग यूज फिर मिसयूज

लेख • रोहित

> जिस बिंदु की तरफ ज्यादातर लोगों का ध्यान नहीं जा रहा वह अनप्रोडक्टिव वर्क कल्चर को बढ़ावा दे रहा है. समस्या यह है कि समाज ने उसे नैतिकअनैतिक की बहस में उलझा कर रखा हुआ है, जबकि वह किसी भी तरह से प्रोडक्टिव नहीं है.

''चौराहे पर लगे ट्रैफिक सिगनल यातायात को सुचारु रूप से चलाए रखने के लिए निर्णायक हैं. अब अगर कुछ बाइकसवार यातायात के बने इन नियमों की अवहेलना करते हुए रैडलाइट जंप कर दें, तो क्या इस अपराध को रोकने के लिए ट्रैफिक सिगनल से रैडलाइट ही हटा देना उचित कदम होगा?'' यह सवाल करते हुए अशोक ने एक अनबुझी पहेली मेरे सामने रख दी.

दरअसल, कुछ दिनों पहले आईपीएल मैच देखते हुए भारत में औनलाइन गैंबलिंग के बढ़ते चलन को ले कर मेरी अपने मित्र अशोक से चर्चा चल रही थी. और यह सवाल उस ने मेरे उस बात के प्रतिउत्तर में दागा था जिस में मैं ने उस से कहा कि गैंबलिंग को वैधानिकता मिलने से इस से जुड़े छिपे गैरकानूनी धंधों में कमी आएगी, सबकुछ सामने होगा और सरकार को टैक्स के तौर पर रैवेन्यू में भारीभरकम रकम प्राप्त होगी.

अशोक का इस मसले पर सीधा सोचना था कि ''अगर गैंबलिंग की वैधानिकता से सरकार को टैक्स का फायदा होता है तो ड्रग्स, कालेधन, स्मगलिंग, ट्रैफिकिंग जैसे दो नंबरी धंधों को कानूनी बना कर उन से भी भारीभरकम टैक्स कमाने में क्या बुराई है, ये धंधे भी वैधानिक कर दिए जाने चाहिए?'' उस के सवाल तीखे थे, लेकिन जिज्ञासा जगा रहे थे.

मैं ने गाजियाबाद में रह रहे अपने एक अन्य मित्र 28 वर्षीय प्रदीप (बदला नाम) को फोन मिलाया. दरअसल, मुझे जानकारी थी कि प्रदीप ने पिछले साल से ही औनलाइन गैंबलिंग में हिस्सा लेना शुरू किया था. वैसे तो इसे सीधेसीधे गैंबलिंग कोई स्वीकार नहीं करता लेकिन प्रदीप ने सीधेतौर पर बताया कि यह एक तरह का सट्टा या जुआ ही है. जो जुआ आप मटका या औफलाइन छिपेतौर पर खेल रहे थे, बस, अब वह पूरी मान्यता के साथ खेला जा रहा है.

प्रदीप लौकडाउन से पहले गुरुग्राम स्थित एक एमएनसी में काम कर रहा था. उस की नौकरी 2 साल पहले लगी थी. उस ने शुरू से ही कंप्यूटर लाइन चुनी थी. उस ने पहले बीसीए किया, फिर जौब करते हुए अपनी एमसीए की पढ़ाई भी पूरी की. जिस कंपनी में वह कार्यरत था वहां उसे 25 हजार रुपए प्रतिमाह सैलरी मिलती थी. इसलिए उस ने घर से दूर लेकिन औफिस के नजदीक ही गुरुग्राम में कहीं अपने कुछ सहकर्मियों के साथ किराए के फ्लैट में रहने का फैसला किया था.

परिवार की जिम्मेदारी संभालते हुए वह नियमिततौर पर सैलरी का एक हिस्सा घर भिजवाता रहा. वहां रह कर उस ने परिवार की आर्थिक स्थिति को संतुलित किया, और साथ ही अपने लिए कुछ सेविंग्स भी की. लेकिन इस बीच धीरेधीरे वह अपने दोस्तों के साथ औनलाइन गेमिंग की जकड़ में भी फंसता गया. शुरूआत मजे से हुई लेकिन धीरेधीरे यह उस की आदत का हिस्सा बनता चला गया.

देश में तालाबंदी हुई तो शुरुआती डेढ़ महीना वह अपने सहकर्मियों के साथ फ्लैट में ही फंसा रहा. वहां वह अधिकतर खाली समय औनलाइन गेम खेलता रहा. तालाबंदी के तुरंत बाद ही कंपनी ने छंटनी कर उसे काम से निकाल दिया. प्रदीप वापस अपने घर गाजियाबाद में आ तो गया, लेकिन धीरेधीरे वह अपने ही फ्रैंड सर्कल में शौर्टकट तरीके से पैसे कमाने के लिए छोटीछोटी औनलाइन बैट यानी शर्त लगाने लगा.

इस बीच, आईपीएल क्रिकेट टूर्नामैंट शुरू होने के बाद उस ने 'ड्रीम 11' पर खेलना (बैट लगाना) शुरू किया. हालांकि

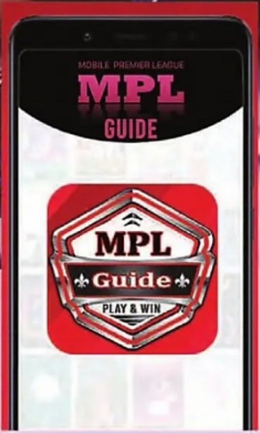

My11Circle
PLAY
With
CHAMPIONS

इस से पिछले साल वह इसे खेल चुका था लेकिन इस साल, उस के कथनानुसार, उस ने अपनी की हुई सेविंग से लगभग 36 हजार रुपए गंवा दिए हैं. लेकिन, उस का मानना है कि औनलाइन गेमिंग से वह इसे जल्द ही रिकवर कर लेगा, अपने नुकसान की भरपाई कर लेगा.

वहीं, यूपीएससी की प्रतियोगिता की तैयारी कर रहे प्रखर लौकडाउन के बाद से ही अपने होमस्टेट बिहार चले गए थे. वे कम से कम इस साल तो कोरोना के चलते दिल्ली का रुख नहीं करना चाहते. वे कहते हैं, 'मैं ने पिछले साल से ही आईपीएल पर की जाने वाली औनलाइन सट्टेबाजी में हिस्सा लेना शुरू किया. पिछले साल 'ड्रीम 11' पर खेल कर लगभग 2,200 रुपए जीते थे. लेकिन इस साल मैं हारा हूं.' हालांकि, उन्हें उम्मीद है कि वे किसी दूसरे औनलाइन गेम से इस नुकसान की भरपाई कर लेंगे.

इस साल के जून माह में ही आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में स्थित पंजाब नैशनल बैंक के भीतर एक फोरजरी का मामला सुर्खियों में था. बैंक के कैशियर रवि तेजा ने औनलाइन गेम (रम्मी) में होने वाली गैंबलिंग में फंस कर पहले अपना पैसा बरबाद किया, फिर कर्ज ले कर गेम खेलने लगा. जब कर्ज का बोझ बढ़ा और कर्ज लेने वाले घर के इर्दगिर्द तकाजा करने लगे, तो उस ने बैंक में जमा लोगों के पैसों को अपने अकाउंट में ट्रांसफर करना शुरू कर दिया. अंत में जब बैंक औडिट हुआ तो पता चला लगभग 1 करोड़ 57 लाख रुपए की कमी पाई गई है. इस की जांच की गई. जांच में पता चला, यह सारा पैसा कैशियर के अकाउंट में ट्रांसफर हुआ था. फिर वहां से कैशियर द्वारा औनलाइन गेमिंग साइट्स पर ट्रांसफर किया गया.

ये ही कुछ मामले नहीं हैं, बल्कि पिछले कुछ वर्षों में औनलाइन गेमिंग के जरिए गैंबलिंग करने के ऐसे अनेक मामले सामने आए हैं. कई मामले ऐसे हैं जिन में सट्टे की रकम न चुकाने की स्थिति में व्यक्ति द्वारा सुसाइड करने की नौबत आ चुकी है. भारत में गैंबलिंग के अवैध होने के बावजूद सरकार और न्यायालयों के सामने या यों कहें कि उन की परामर्श या मंजूरी के बाद ही इस धंधे का क्षेत्रफल विशालकाय होता जा रहा है.

स्किल और चांस के बीच वैधअवैध का खेल?

इस साल आईपीएल में औनलाइन जुआ से संबंधित गेम्स को खूब प्रमोट किया गया. कल तक जिस पेटीएम पर गूगल ने सट्टेबाजी को ले कर प्रतिबंध लगाया था, उसे मात्र 4 घंटे के भीतर ही समझौता कर गूगल ने वापस ले लिया. इसी प्रकार गैंबलिंग से जुड़े गेम्स इस साल काफी बड़े स्तर पर देखने को मिले हैं. इस का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इस साल आईपीएल क्रिकेट लीग को 'ड्रीम 11' ने स्पौंसर किया.

वहीं, माय सर्किल 11, एमपीएल जैसे औनलाइन गैंबलिंग से संबंधित एकसाथ कई ऐसे गेम्स की बाढ़ सी आ गई है. ये खुलेतौर पर लोगों से पैसा लगाने का आह्वान कर रहे हैं. यह आह्वान, खासकर, उन युवाओं को सीधे लुभा रहा है जिन के पास एंड्रौयड फोन है और जो बेरोजगारी के मौजूदा दौर में शौर्टकट तरीके से पैसे कमाने की जुगत में लगे हैं. किंतु इन सारी चीजों के बावजूद बड़ा सवाल यह है कि भारत में जब जुआ या सट्टे से जुड़े कारोबार पर पाबंदी है तो यह खुलेआम इतने बड़े लैवल पर कैसे सुचारु रूप से चल रहा है?

भारत में इस समय पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1867 लागू है. इस के अनुसार, कोई

भी घर, जो दीवारों से घिरा या बंद हो और वहां कार्ड्स, डाइस, टेबल और गेम के अन्य यंत्र रखे हों जिन का इस्तेमाल किसी व्यक्ति, फिर चाहे वह मकानमालिक ही क्यों न हो, द्वारा लाभ कमाने की मंशा से किया जा रहा हो, इस कानून की श्रेणी में आता है.'' इस परिभाषा के अनुसार, किसी गैंबलिंग को गैंबलिंग मानने के लिए 3 चीजों की जरूरत है– संभावना, आपसी सहमति, दांव पर लगने वाली कीमत (गिफ्ट).

लेकिन, यह जितना आसान दिखता है उतना है नहीं. इस के भीतर कई उठापटक हैं. इस एक्ट के सैक्शन 12 में यह कहा गया कि जिन गेम्स में संभावना कम और स्किल, हुनर या कौशल की मात्रा अधिक होती है, वे पनिशेबल नहीं हैं. यानी, वे गैंबलिंग की श्रेणी में नहीं आते हैं. यह कानून ब्रिटिश समय से ही भारत में लागू है, इसे ले कर भारतीय न्यायिक मामले में अलगअलग समय 3 डिसीजन लिए गए.

पहला 1957 में, जब आरएमडी चमरबउगवाला वर्सेस यूनियन औफ इंडिया के मामले के तहत अपैक्स कोर्ट ने कहा, जिन गेम्स में स्किल्स की जरूरत होती है उन्हें गैंबलिंग से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता. दूसरा 1967 में, आंध्र प्रदेश वर्सेस के सत्यनारायण मामले में जब सुप्रीम कोर्ट ने 13 पत्तों वाले 'रम्मी गेम' को यह कहते हुए उन क्लब्स या संस्थाओं में खेलने की आज्ञा दी, जहां यह लाभ कमाने के उद्देश्य से न हो. कथनानुसार, ''रम्मी खेल, तीन पत्ती गेम की तरह 'गेम औफ चांस' नहीं है. रम्मी में एक प्रकार का स्किल चाहिए होता है क्योंकि इस में अपने पत्तों को बनाने के लिए कार्ड्स को गिराने, उठाने और सजाने के लिए विशेष ध्यान देना पड़ता है.'' जिस के बाद इसे 'गेम औफ स्किल' कहा गया. इसी तौर पर तीसरा 1996 में, जहां अपैक्स कोर्ट ने के आर लक्ष्मण वर्सेस स्टेट औफ तमिलनाडु मामले में हौर्स रेसिंग गेम को गैंबलिंग के दायरे से दूर रखते हुए इस में खुली सट्टेबाजी की वैधानिकता प्रदान की.

हालांकि, भारत के संविधान, 1950, लिस्ट 2 के 7वें शैड्यूल के एंट्री 34 और 62 में सभी राज्यों को यह ताकत दी गई है कि राज्य विधानसभाएं अपने अधीन गैंबलिंग और बैटिंग के मैटर पर विधेयक बना सकती हैं. इसी के तहत, देश में 3 राज्यों (गोवा, सिक्किम, दमन) को छोड़ कर सभी ने गैंबलिंग या बैटिंग से जुड़े किसी भी प्रारूप पर पाबंदी लगाई हुई है.

गोवा ने भी 1996 में अनुमति दी. इस के बाद दमन एंड दीव ने 'पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1976' में संशोधन के बाद पांचसितारा होटलों में इस की अनुमति दी. फिर सिक्किम ने भी तय किया कि सिक्किम रेगुलेशन औफ गैंबलिंग (अमैंडमैंट) एक्ट 2005 के तहत इसे लीगल किया. वर्ष 2013 में सरकारी आंकड़ों के हवाले से रिपोर्ट आई थी कि अकेले गोवा राज्य में चलने वाले कैसीनों से 2012–13 में 135 करोड़ रुपए का रैवेन्यू सरकार को प्राप्त हुआ.

Search phone
YouTube
Play Store
Microsoft Apps
Google
Samsung
Samsung Members
Gmail
Chrome
Google
Maps
Gallery
Camera
Messages
Phone
Facebook
Calculator
Calendar
Settings
Contacts
Clock
Reminder
Game Launcher
Secure Folder
Samsung Notes
Play Music
BlackDesert Mobile
Samsung Pay

यानी, देखा जाए तो खेलों में होने वाली सट्टेबाजी को 2 कैटेगरी में बांटा गया है, एक– 'गेम औफ स्किल्स' दूसरा– 'गेम औफ चांस'. इसी अनुसार कोई सट्टा वैध है अथवा अवैध, इस की वैधानिकता इस बात पर निर्धारित होती है कि वह कितना स्किल्स पर निर्भर है या कितना संभावना पर.

औनलाइन सट्टेबाजी का बढ़ता चलन

देश में चूंकि डिजिटलीकरण के चलते चीजें बहुत तेजी से बदलीं, तो एंड्रौयड फोन और इंटरनैट ने 5–7 सालों के भीतर काफी तेजी से इस इंडस्ट्री पर भी अपना प्रभाव छोड़ा. पहले जो चीजें छिपछिपा कर गैरकानूनी तरीके से डार्क साइड में चला करती थीं, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय तौर पर अब पहले की अपेक्षा सुसंगठित करने व नई पहचान देने में डिजिटलीकरण ने भारी योगदान दिया.

'औनलाइन गेमिंग इन इंडिया 2021' रिपोर्ट में बताया गया कि भारत का औनलाइन गेमिंग उद्योग जो 2016 में 29 करोड़ डौलर का था वह 2021 तक 1 अरब डौलर तक पहुंच जाएगा. और इस में 19 करोड़ गेम्स शामिल हो जाएंगे. इन यूजर्स में उन लोगों को शामिल किया गया है जो गेम के नाम पर जुआ खेल रहे हैं या फैंटेसी स्पोर्ट के नाम पर उन्हें खिलाया जा रहा है.

वर्ष 2013 में फिक्की ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में यह कहा था कि भारत में गेमिंग इंडस्ट्री से सरकार को लगभग 7,200 करोड़ रुपए का टैक्स प्राप्त होता है. ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह कितने बड़े स्केल पर आज चल रहा है.

औनलाइन रम्मी का प्रचलन पिछले कुछ समय से बढ़ता ही जा रहा है. देश में औनलाइन रम्मी उद्योग के मौजूदा समय में करीब 5 करोड़ खिलाड़ी हैं. और लौकडाउन के दौरान घर में बैठे लोगों के बीच इस का प्रचलन और भी बढ़ा है. फरवरीमार्च में गेमिंग साइट्स और ऐप इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या में 24 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई. इस के प्रचलन बढ़ने के साथसाथ बात इस की सेफ्टी पर भी आ गई है.

इस साल के अगस्त माह में हैदराबाद कमिश्नर औफ पुलिस और उन की टीम ने ऐसे ही एक बड़े औनलाइन गैंबलिंग घोटाले का भंडाफोड़ किया. पुलिस के अनुसार, पूरे प्रकरण में 1,100 करोड़ रुपए के लेनदेन की बात सामने आई. जिस में पुलिस का कहना था कि कई युवा इस गैंबल घोटाले में अपने

Dream11
Winning
Tips
&
Tricks

लाखों रुपए गंवा चुके हैं. हैरानी वाली बात यह सामने आई कि पुलिस ने कई युवाओं के इस के चलते आत्महत्या करने की बात भी बताई.

इन मसलों के बाद भारत में सट्टेबाजी और गैंबलिंग को ले कर एक नई बहस छिड़ गई है. यह बहस इसे पूरी तरह से वैधानिकता दिए जाने या इस पर सख्ती से पाबंदी लगाए जाने को ले कर है. इस पूरी बहस में 2 सवाल केंद्रबिंदु बन गए हैं. पहला, क्या इतने पुराने समय से चले आ रहे कानून को बदल कर गैंबलिंग को वैधानिक करने का समय आ गया है? दूसरा, सरकार अगर इस अपराध को रोक नहीं पा रही तो क्या इस के सामने घुटने टेक देना इस का समाधान है?

हालांकि, भारत सरकार किसी प्रकार से औनलाइन सट्टेबाजी को ले कर किसी प्रकार का रोडमैप बनाने में फिलहाल असफल रही है, जिस के चलते औनलाइन चलने वाली गैंबलिंग काफी कंफ्यूजन से भरी हुई है. इसे टैक्निकल भाषा में 'ग्रे एरिया' कहा जा रहा है. यानी, जिस जगह पर 'हां और ना' या 'काला और सफेद' दोनों की स्थिति बनी हुई है. जैसा कि देखा सकता है कि एक तरफ कर्नाटक हाईकोर्ट पोकर गेम को 'गेम और स्किल' मान रही है, जबकि दूसरी तरफ गुजरात हाईकोर्ट ने इसे 'गेम औफ चांस' माना.

स्किल–चांस की नैतिकता–अनैतिकता

जुआ किसी भी समाज में कभी भी नैतिक तौर पर स्वीकृत नहीं रहा है. सभ्यताओं के बनने से ही जुआ लोगों को लुभाते जरूर रहे हैं, चाहे इस के उदाहरण महाभारत में पाए गए हों या अन्य धार्मिक ग्रंथों में लेकिन जुए में 'जर, जोरू और जमीन' गंवाने की मिसाल सदियों से आज तक कायम है. महाभारत में जुए की लत को बहुत ही सरलता से दर्शाया गया. जब युधिष्ठिर, धर्मराज और सचाई के राजा, ने अपने भाइयों की संपत्ति और पत्नी द्रौपदी सहित सबकुछ जुए में खो दिया. कहने वाले कहते हैं, यही संपत्ति का विवाद आगे चल कर धर्मयुद्ध में कन्वर्ट हुआ, जिसे महाभारत कहा गया.

जुआ किसी भी समाज में खेलने वालों के प्रति न्यायिक नहीं रहा. एक की हार से ही दूसरे की जीत संभव है. हालांकि, इस की नकारात्मकता पर बाद में आया जाएगा लेकिन यह तय है कि यह नैतिक तौर पर समाज द्वारा कभी स्वीकृत नहीं हो पाया. फिर क्या यह प्रश्न बन सकता है कि इसे अब तक अवैध किए जाने के पीछे इस की अवांछनीयता रही है?

जी हां, एक पल के लिए कानूनों के वैधअवैध ठहराए जाने में कुछ अपवादों को छोड़ कर 2 बातें देखी जा सकती हैं. पहली, हर अनैतिक कार्य अवैध नहीं. दूसरी, हर अवैध कार्य हो सकता है अनैतिक हो. मसलन, झूठ बोलना अनैतिक है, लेकिन जरूरी नहीं कि हर मामले में अपराध हो. जब तक किसी कृति का परिणाम अधिसंख्य लोगों को विपरीत प्रभावित न करे तब तक वह अपराध की श्रेणी में नहीं आता. फिर सवाल यह है कि औनलाइन चाहे औफलाइन गैंबलिंग तो यह बड़े हिस्से को प्रभावित करती है, खासकर इस की जकड़ में युवा अधिक संख्या में हैं, तो फिर वह बिंदु कहां छूट रहा है कि जहां राज्य कहे कि 'अब बस, आप यह कार्य नहीं कर सकते.'

2017 में सपोर्ट फैंटेसी 'ड्रीम 11' के एक प्लेयर वरुण गुम्बर, जो लगभग 50 हजार रुपए इस खेल (बैटिंग) में गंवा चुका था, ने फैसला किया कि इस मामले को ले कर वह पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में शिकायत दर्ज कराएगा. वरुण ने अपनी पिटीशन में चैलेंज किया कि यह फैंटेसी लीग 'गेम औफ स्किल' नहीं है. जिस के बाद जस्टिस अमित रावल की सिंगल जज बैंच ने इस मामले को औब्जर्व करते हुए पाया कि इस में यूजर सपोर्ट की जानकारी के साथ "पिछले परफौमैंस, डाटा, प्लेयर की चल रही फौर्म के आधार पर इस में पैसे लगाता है. जिस के बाद निर्णय लिया गया कि यह 'गेम औफ स्किल' के भीतर आने वाली गतिविधि है, और वरुण की कंप्लेंट खारिज कर दी गई. भारत में औनलाइन फैंटेसी के तौर पर चल रहे गेम्स के लिए यह बहुत बड़ी जीत और टर्निंग पौइंट था. यह पहला मामला था जब किसी कोर्ट ने इस तरह के फैंटेसी लीग वाले खेलों को गेम औफ स्किल में डाला. जिस के बाद 'ड्रीम 11' के कोफाउंडर और सीईओ हर्ष जैन ने सैल्फ रेगुलेटेड 'इंडियन फैडरेशन औफ स्पोर्ट्स गेमिंग' की इसी साल स्थापना की.

इस समय 'ड्रीम 11' के लगभग साढ़े 4 करोड़ यूजर्स हैं, जिन में से 15 प्रतिशत यूजर्स पैसों के लिए खेलते हैं. यही यूजर्स हैं जो ड्रीम 11 के लिए रैवेन्यू जनरेट करते हैं. आज यह कंपनी आईसीसी, द बिग बेश, कैरिबियन सुपर लीग, प्रो कबड्डी, एफआईएच इत्यादि की औफिशियल पार्टनर है. यहां तक कि यह देखा जा सकता है कि कंपनी को अपने प्रचार में एम एस धौनी को एंबैसडर बनाया गया जिस का स्लोगन 'खेलो दिमाग से' था.

हालांकि, इस के बाद भी वरुण गुम्बर ने अगस्त 2017 में सुप्रीम कोर्ट में इस मामले के लिए एप्रोच किया, जिस के बाद सितंबर माह में सुप्रीम कोर्ट के डिविजनल बैंच के जस्टिस रोहितो और जस्टिस संजय किशन कौल द्वारा इस पिटीशन को खारिज कर दिया गया.

वैधअवैध के अपनेअपने तर्क में 'ग्रे एरिया'

सट्टा बाजार, गैंबलिंग या जुआ को वैधअवैध किए जाने को ले कर काफी समय से बहस चली आ रही है. इस के पक्षविपक्ष में लगातार दलीलें दी जाती रही हैं. दोनों तरफ के लोगों की अपनीअपनी दलीलें हैं.

इसे वैधानिक किए जाने वाले जानकारों का कहना है कि यूरोप के कई देशों में सट्टेबाजी के लिए कानून बदले जा चुके हैं. कई देशों ने तो इसे पूरी तरह वैधानिक कर दिया है, जैसे इंग्लैंड, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, कनाडा, इत्यादि. वहीं, कुछ देशों ने कुछ शर्तों के साथ अपने कुछ राज्यों को विशेष छूट दी. उदाहरण के तौर पर यूएसए है जहां के 'लास वेगास' को जाना ही इसी के लिए जाता है.

इस के पक्ष में जो सब से बड़ा तर्क दिया जा रहा है वह अवैध तरीके से होने वाले इस धंधे की दो नंबरी कमाई है, जिस का कोई हिसाब सरकार के सामने नहीं आ पाता. वहीं, इस के अवैध होने के चलते, टैक्स के दायरे में नहीं आने से सरकार की आय का एक बड़ा स्रोत खत्म हो जाता है.

भारत समेत पूरी दुनिया में गैंबलिंग कारोबार (औनलाइन व औफलाइन) पहले ही काफी ज्यादा ग्रोथ पर था, लेकिन लौकडाउन के बाद इस में तेजी से उछाल आया है. आंकड़ों की मानें, तो भारत के 80 प्रतिशत युवा किसी भी रूप के गैंबलिंग में हर साल में कम से कम एक बार जुड़ जाते हैं. इस का पूरा बाजार लगभग 60 बिलियन डौलर का बताया जा रहा है. फिर ऐसे में सवाल इस की कमाई को ले कर होने लगे हैं, यह पैसा कहां लग रहा है, किसे फेसिलिटेट कर रहा है इत्यादि?

इस में एक तर्क इस के 150 साल पुराने हो चुके कानून को ले कर है. यह कहा जा रहा है कि जिन अंगरेजों ने यह कानून बनाया, उन्होंने इसे अपने देश में रैगुलेट कर लिया है. साथ ही, यह भी कहा जा रहा है कि इस के रैगुलेट होने और वैधानिक किए जाने से इस पूरे प्रोसैस में पारदर्शिता आएगी. इस पर ईसिस्टम के जरिए नजर रखी जा सकती है और ट्रैक किया जा सकता है. इस में खेलने और खिलाने के लिए नियमावली रखी जाए.

किंतु इस के विपक्ष में दी जाने वाली दलीलें भी कई हैं. सरकार अगर इस अपराध को रोकने में असफल है, तो इस कारण इसे लीगल किए जाने वाली दलीलें देश के संविधान पर नकारात्मक असर डालेंगी. संवैधानिक तौर पर इस से मिलतेजुलते अपराधों को भी लीगल करने की बात आएगी, जिन्हें सरकार रोक नहीं पा रही. यही बात ड्रग्स को लीगल करने को ले कर कही जा रही है. वहीं इस के माध्यम से कालेधन को सफेद करने की वैधानिकता प्राप्त हो जाएगी, जिसे रोजगार कहा जा रहा है. तो फिर इस से कई युवा जुए की खराब लत के शिकार होंगे. ऐसे में क्राइम और सुसाइड की प्रवृत्ति में बढ़ोतरी होगी. इस से खेल की शुद्धता और सुचिता पर भारी खतरा होने की आशंका होगी. ऐसे ही स्पौट फिक्सिंग का उदाहरण हम आईपीएल में पीछे देख चुके हैं.

2018 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस के लीगल–इललीगल पर बहस चली, जिस के बाद विधि आयोग को इस पर एग्जामिन कर अपनी रिपोर्ट पेश करने को कहा गया. यह तब जब लोडा कमेटी ने रिकमैंड किया कि बैटिंग को रैगुलेट किया जाना चाहिए. विधि आयोग ने इस पर अपना स्टैंड लेने के बजाय इसे 'ग्रे एरिया' में ही रख दिया, यानी इसे 'इफ एंड बट' वाली स्थिति पर छोड़ दिया. इस से होने वाले फायदे और नुकसान गिना कर रिपोर्ट सैंट्रल गवर्नमैंट को सौंप दी गई. फिक्की के स्टेक होल्डर ने भी इस पर अपनी राय रखी.

ऐसे में इस क्षेत्र में कमर्शियल पहलू हावी होने लगे हैं. देशीविदेशी कंपनियों का भी इस में बड़ा रोल देखने को मिल रहा है. चूंकि यह एक बड़ा व्यवसाय बन चुका है तो बड़े पूंजीपतियों और सरकार दोनों ही इस में अपने फायदे तलाश रहे हैं. जाहिर है, इस में बड़ा आरोप इस बात का लग रहा है कि बदलते स्वरूप में इस के वैधानिक होने की बहस का कारण बड़े पूंजीपतियों और कौर्पोरेटरों का संगठित तौर पर इस में मुनाफे के लिए कूद पड़ना है. कई लोगों का तर्क है कि यह गेमिंग के नाम पर चलाए जाने वाला मात्र जुआ है, जो कानून के लूप होल्स के साथ खेला जा रहा है.

फिर इस के विपक्ष में एक तर्क यह भी है कि राज्य सरकार की भूमिका ऐसे मामलों में 'गार्जियन स्टेट' की होती है. स्टेट को देखना है कि उस की जनता के लिए यह कितना वांछनीय है अथवा कितना नहीं. किसी भी कानून को लाने के लिए सरकार का उद्देश्य यह होता है कि वह कानून राज्यवासियों के लिए कितना उपयोगी है. खेलों में भारी सट्टेबाजी से यह जरूर है कि इस का खेलों पर प्रतिकूल ही असर पड़ेगा. 2013 आईपीएल मैचों के दौरान राजस्थान रौयल्स और सीएसके को 2 साल का बैन उठाना पड़ा है. वहीं उन के मालिकों राजकुंद्रा, मय्यापन, एन श्रीनिवासन पर खेल से दूर रहने की आजीवन पाबंदी लगा दी गई. एन श्रीनिवासन को तो अपनी बीसीसीआई की कुरसी तक गंवानी पड़ी, जिस ने खेल की सुचिता पर बड़े प्रश्न खड़े किए हैं.

अनप्रोडक्टिव वर्क कल्चर को बढ़ावा

जिस बिंदु की तरफ ज्यादातर लोगों का ध्यान नहीं जा रहा वह इस के अनप्रोडक्टिव वर्क कल्चर के बढ़ावा होने का है. समस्या यह है कि फिलहाल इसे नैतिकअनैतिक की बहस में उलझा कर रखा हुआ है. जबकि, इस तरह के काम किसी भी तरीके से प्रोडक्टिव नहीं हैं. 'इस की टोपी, उस के सिर' के बीच अपना कट लेती कंपनी के मुनाफे का यह सारा खेल सदियों से चल रहा है. ऐसे कामों में ज्यादातर मामले बरबाद होने के ही देखे गए हैं.

समस्या इस के गैरउत्पादन काम को ले कर है. समाज में हर तबका किसी न किसी तरीके से खुद के स्वार्थ को पूरा कर, समाज के हितों की पूर्ति करता है. उदाहरण के तौर पर, फैक्ट्री में काम करने वाला मजदूर अगर कोई कमीज सिलता है तो उस से वह तनख्वाह पाता है, साथ ही, समाज के किसी व्यक्ति के लिए उत्पादन भी करता है. रोड बनाता है तो दिहाड़ी पाता है और समाज के चलने लायक रास्ता तैयार करता है. वहीं, कोई किसान खेती करता है तो खुद के हित के साथ समाज के हित भी पूरे करता है. इसी तौर पर सर्विस से जुड़े कामों में भी यही बात लागू होती है.

लेकिन जुए से जुड़ा धंधा किसी प्रकार से सामाजिक हितों की पूर्ति नहीं करता. यह प्रोडक्टिव वर्क भी नहीं है. रही बात टैक्स कमाने की, सरकार को ऐसे कामों के पीछे छिप कर टैक्स कमाने की मंशा खुद ही सवालिए निशाने पर ले जाती है. कल को हवाला के पैसों से भी सरकार भारीभरकम टैक्स कमा सकती है. इस से समाज का नवयुवक तबका न सिर्फ जुए की फंतासी में फंस रहा है, बल्कि साथ ही संभवतया भविष्य में उस के वर्क कल्चर के हैबिट में नकारात्मक बदलाव देखने को मिल सकते हैं.

बिना मेहनत शौर्टकट पैसे कमाने की होड़ और उस से हुए नुकसान से क्रिमिनल ऐक्टिविटी में भी बढ़ावा होने का अंदेशा है. ऐसे कई उदाहरण हमारे आसपास देखने को मिल सकते हैं जब लोगों ने सट्टे, जुए के चक्कर में घर, संपत्ति तक गिरवी रखवा दिए. कानून में यह स्किल और चांस का मायाजाल जरूर बुना गया है लेकिन इसे खेलने वाले लोग भी और खिलाने वाले उद्योगपति भी बखूबी जानते होंगे कि वे क्या कर रहे हैं. ●

मोबाइल वीडियो एक मजबूत हथियार

पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ आम लोगों के हाथ में आज सब से बड़ा हथियार मोबाइल है. सैकड़ों वीडियो क्लिप्स आज सोशल मीडिया में घूम रही हैं जिन में पुलिस वालों को किसी को बेरहमी से पीटते, किसी से रिश्वत लेते, लोगों से जोरजबरदस्ती करते देखा जा रहा है. इस बीच, पुलिस वाले चौकन्ने हो गए हैं, वे ऐसे मोबाइलों को तोड़ने की कोशिश करने लगे हैं.

मोबाइलों से खींची या बनाई गईं वीडियो क्लिप्स कोई असर डालती हैं, इस बारे में कोई आंकड़ा तो जमा नहीं किया गया पर पुलिस वालों को इस से फर्क जरूर पड़ता है. कई बार जब ये क्लिप्स टीवी चैनलों में पहुंच जाती हैं और चैनल सरकारी भोपू न हों और चुप न रहने की हिम्मत रखते हों, तो पुलिस की आमजन के प्रति क्रूरता जगजाहिर हो जाती है.

आज युवा ज्यादा उत्साह दिखाते हैं जो गलत बातों का विरोध करते हैं. उन के लिए पुलिस के डंडों से बचने का यह एक उपाय है. पर फ्रांस में एक कानून बनने वाला है जिस में इस तरह की वीडियो बनाना ही अपराध घोषित कर दिया जाएगा. ऐसी एक वीडियो क्लिप हमारे देश भारत में किसान आंदोलन के दौरान एक वृद्ध सिख पर पुलिस वाले का डंडा बरसाने की बनाई गई थी जिस पर राहुल गांधी की टिप्पणी पर भाजपा आईटी सैल ने ट्विटर पर एक अधूरा वीडियो डाला था. ट्विटर कंपनी ने भाजपा के अमित मालवीय के इस प्रतिउत्तर वाले ट्वीट को गलत ठहराया है. फ्रांस तो उसे पकड़ लेगा जिस ने पुलिस वाले का वीडियो बनाया था.

फ्रांस में बन रहे कानून के खिलाफ वहां देशभर में 1 दिसंबर से प्रदर्शन होने लगे हैं. लोग कहते हैं कि उन्हें पुलिस की ज्यादतियों का वीडियो लेने का मौलिक अधिकार है. पुलिस कानून को हाथ में नहीं ले सकती. वह जबरन किसी को पीट नहीं सकती. नागरिकों के पास अकेला हथियार उस समय उस के साथी या आसपास के लोगों द्वारा बनाए गए वीडियो ही हैं.

पुलिस किस तरह हमारे देश भारत में थानों में अत्याचार करती है, यह जगजाहिर है. दिसंबर के पहले सप्ताह में सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया है कि सारे थानों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं ताकि थानों के भीतर पुलिस के अत्याचार कम हो सकें.

ये सीसीटीवी कैमरे लग तो जाएंगे पर पहले ही दिन से खराब रहेंगे. सुप्रीम कोर्ट हर थाने में थोड़े ही मौजूद रहेगा? वहां तो आरोपी के रिश्तेदार ही होंगे और यदि उन के पास पूछताछ के समय वीडियो बनाने का अधिकार हो तो पुलिस अपनी बर्बरता से उन्हें वीडियो बनाने से रोक सकती है.

दुनिया के हर देश को पुलिस की जरूरत है पर हर देश में पुलिस अपनेआप में आपराधिक गिरोह बन जाती है. जो किसी वजह या बेवजह पकड़ा गया, वह पुलिस अत्याचारों का शिकार रहा था या नहीं, यह कभी पता नहीं चल सकता.

सरकारें पुलिस पर रोक लगाने के पक्ष में नहीं हैं क्योंकि सत्ता में बैठे नेता अपने विरोधियों को इसी पुलिस के सहारे कुचलते हैं. वैसे, मार खाने वालों में ज्यादातर युवा ही होते हैं, वे चाहे राजनीतिकविरोधी हों या समाज के प्रति असल गुनाहगार.

एमेजौन का वर्चस्व

दुनियाभर में नवंबर का आखिरी शुक्रवार औफर्स का मनभावन दिन होता है जब बड़े स्टोर अपना बचा माल बहुत सस्ते दामों पर बेचते हैं. इसे 'ब्लैक फ्राइडे' कहते हैं. अमेरिका से शुरू हुआ यह तमाशा अब दुनिया के सभी समृद्ध देशों के स्टोर मनाते हैं और औनलाइन स्टोरों, जैसे एमेजौन आदि ने भी ब्लैक फ्राइडे मनाना शुरू कर दिया है.

इस बार इसी दिन एमेजौन के खिलाफ एक आंदोलन शुरू हुआ है. ऊपर से तो यही कहा जा रहा है कि एमेजौन अपने कर्मचारियों को पूरे पैसे नहीं देता और बहुत से देशों में टैक्स नहीं देता, पर असली वजह यह है कि लोग इस की बढ़ती मोनोपौली से घबरा रहे हैं. एमेजौन अब आप को अपनी मरजी का सामान बेचता है और जो जरूरत नहीं, वह भी मनमाने दामों में बेच डालता है.

मोबाइल या कंप्यूटर पर खरीदारी एक तरह से जुए की शक्ल लेने लगी है जिस में लोग फोटो या वीडियो देख कर सस्ती चीजों को खरीदते हैं और फिर इंतजार करते हैं कि पासा उन के पक्ष में पड़ा या नहीं. एमेजौन जुआघर बनने लगा है. इस में लोगों को घर बैठे सस्ते सामान का लालच दे कर जुआ खेलने की आदत डाली जा रही है. यह काम आप के घर के करीब की दुकानें नहीं कर सकतीं. एमेजौन छोटे बिजनैसों को हड़प रहा है और आज के या भविष्य के लाखों छोटे व्यापारी अब डिलीवरीमैन बने जा रहे हैं.

एमेजौन ने बुद्धिहीन डिलीवरीमैनों की आर्मी खड़ी कर ली जो एक भाषा, एक सा व्यवहार, एक सी पोशाक पहन रहे हैं. यही नहीं, वे जल्द से जल्द सामान पहुंचाने के लिए ट्रैफिक का वह जोखिम ले रहे हैं जो सीमा पर दुश्मन से लड़ने के लिए सैनिक लेते हैं.

आम किसी कंपनी का घरेलू सामान आज बिक ही नहीं सकता अगर एमेजौन का वरदहस्त न हो. चीनी कंपनी अलीबाबा भी वैसी ही है, पर एमेजौन तो उस से 8–9 गुना बड़ी है. कोई बड़ी बात नहीं होगी जो कभी रहस्य खुले कि अमेरिकाचीन संबंध एमेजौन के कारण खराब हुए थे जो अलीबाबा को आगे बढ़ने नहीं देना चाहती. यह संभव है कि आज एक कंपनी अमेरिका और चीन की सरकारों को प्रभावित कर ले.

बहरहाल, शिकार हर हालत में आज के युवा ही होंगे जो या तो फालतू सामान खरीदेंगे या फिर फालतू टिकटौक पर नाचेंगे. ●

दीदी, मुझे माफ कर दो

कहानी • डा. रंजना जायसवाल

नेहा द्वंद्व में फंसी थी. उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था. मरने वाला तो मर कर चला गया था, लेकिन उस की आखिरी इच्छा उसे जिंदा लाश बनाने पर तुली हुई थी. फिर एक दिन...

सुबह से यह चौथा फोन था. फोन उठाने का बिलकुल मन नहीं था. पर मां समझने को तैयार ही नहीं थी. फोन की घंटियां उस के मनमस्तिष्क पर हथौड़े की तरह पड़ रही थीं. आखिरकार, नेहा ने फोन उठा ही लिया.

‘‘हैलो, हां मां, बोलो.’’

‘‘बोलना क्या है, घर में सभी तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रहे हैं. तुम किसी की बात का जवाब क्यों नहीं देतीं?’’

‘‘मां, इतना आसान नहीं है यह सब. मुझे सोचने का मौका तो दो,’’ नेहा ने बुझे स्वर में कहा.

‘‘सोचना क्या है इस में. तुम्हारी बहन की अंतिम इच्छा थी. क्या बिलकुल भी दया नहीं आती तुम्हें. उन बच्चों के मासूम चेहरों को तो देखो.’’

‘‘मां, मैं समझती हूं पर...’’

‘‘पर क्या? वह सिर्फ तुम्हारी बहन नहीं थी. मां की तरह पाला था उस ने तुम्हें. आज जब उस के बच्चों को मां की जरूरत है तो तुम्हें सोचने का समय चाहिए?’’

‘‘मां, इतनी जल्दबाजी में इस तरह के फैसले नहीं लिए जाते.’’

‘‘हम ने भी दुनिया देखी है. ठीक है, अगर तुम्हें उन बच्चों की छीछालेदर होना मंजूर है तो फिर क्या कहा जा सकता है.’’

‘‘यह क्या बात हुई. तुम इस तरह की बातें क्यों कर रही हो?’’ नेहा बोली थी.

मां का गला भर आया, ‘‘तुम अभी मां नहीं बनी हो न. जब मां बनोगी तब औलाद का दर्द समझोगी. फूल से बच्चे मां के बिना कलप रहे हैं और तुम हो कि सब दरवाजे बंद कर के बैठी हो.’’

नेहा का मन खराब हो चुका था. क्या इतना आसान था यह सब. 4 भाईबहनों में सब से छोटी थी वह. सब से छोटी. सब से लाड़ली. पर जिंदगी उसे इतने कड़वे और कठिन मोड़ पर ला कर खड़ा कर देगी, उस ने सोचा न था. दीदी की शादी के वक्त महज 17 साल की नाजुक उम्र थी उस की. पहली बार साड़ी पहनी थी. कितना उत्साह था. जीजाजी का जूता चुराऊंगी. 10,000 से एक रुपए कम न लूंगी. उन्हें खूब तंग करूंगी.

जीजाजी उस की हर शरारत पर मुसकरा कर रह जाते. वे सिर्फ उस की बहन के पति ही नहीं, नेहा की हर बात के हमराज, समझदार और सुलझे हुए व्यक्ति थे. नेहा बहुत सारी ऐसी बातें, जो दीदी को नहीं बताती थी, जीजाजी से डिस्कस करती थी. जीजाजी के प्रोत्साहित करने पर ही उस ने सिविल सर्विसेज की तैयारी करनी शुरू की थी. नहीं तो मां के आगे तो वह भी दीदी की तरह मजबूर हो जाती और आज वह भी दीदी की तरह किसी की घरगृहस्थी देख रही होती. दीदी पढ़ने में बहुत अच्छी थी. पर बाबा की अंतिम इच्छा का मान रखने के लिए दीदी बलि का बकरा बन कर रह गई और अचारमुरब्बे व नएनए पकवानों के अलावा आगे कुछ भी न सोच सकी.

याद है उसे आज भी वह दिन, जब दीदी की कैंसर की रिपोर्ट आई थी. कैंसर थर्ड स्टेज पर था. घर में कुहराम मच गया था. मां का रोरो कर बुरा हाल था और दीदी दीवार का कोना पकड़े बुत बनी पड़ी थी. नेहा को समझ में नहीं आ रहा था किसकिस को संभाले और क्या समझाए. समझते सभी थे, पर झूठी दिलासा एकदूसरे को देते रहे.

प्रवीण जीजाजी का सुदर्शन चेहरा अचानक से बूढ़ा लगने लगा था. अपनी जीवनसंगिनी की दुर्दशा उन से बरदाश्त नहीं हो रही थी. कितने सुखी थे वे. न जाने किस की नजर लग गई थी उस खुशहाल परिवार

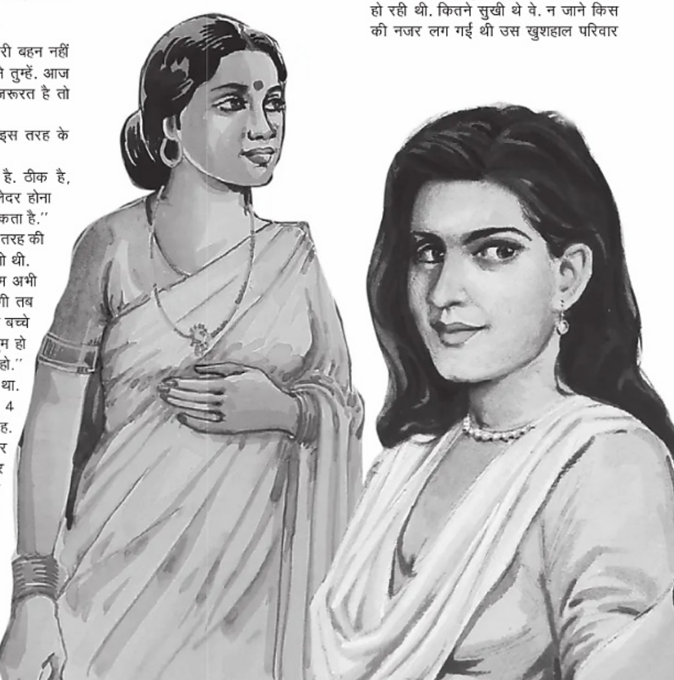

पर. जीजाजी ने दीदी को बचाने के लिए हर संभव कोशिश की. मुंबई, मद्रास कहांकहां नहीं दौड़े. किसकिस के आगे हाथ नहीं जोड़े. पर सब बेकार गया. जीजाजी की आलीशान कोठी, रुपयापैसा सब धरा रह गया और दीदी हमें रोताबिलखता छोड़ कर चली गई. इन दिनों में उस ने क्याक्या देखा और महसूस किया, वही जानती थी.

घर मेहमानों और रिश्तेदारों से भरा हुआ था. नन्ही परी मां के लिए बिलखतेबिलखते नेहा की गोदी में ही सो गई थी. दीदी की चचिया सास कनखियों से नेहा को बारबार घूर रही थीं.

''बेटा, तुम कौन हो? बहुत देखादेखा चेहरा लग रहा है.''

नेहा ने परी की तरफ इशारा कर के कहा, ''मैं इस की मौसी हूं.''

चाचीजी के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुसकान आ गई. उन्होंने सोती हुई परी के सिर पर हाथ फेरते हुए बड़े व्यंग्यात्मक ढंग से कहा, ''हां भई, परी के लिए तुम मा–सी हो. अब तो तुम ही इस की...''

नेहा गुस्से से तिलमिला गई. चाची के शब्द गले मे अटक कर रह गए. वह परी को ले कर कमरे में चली गई. यह पहली बार नहीं था. इन 13 दिनों में हर आनेजाने वालों की निगाहों में उस ने यही सवाल तैरते देखा था. कितना रोई थी वह उस दिन.

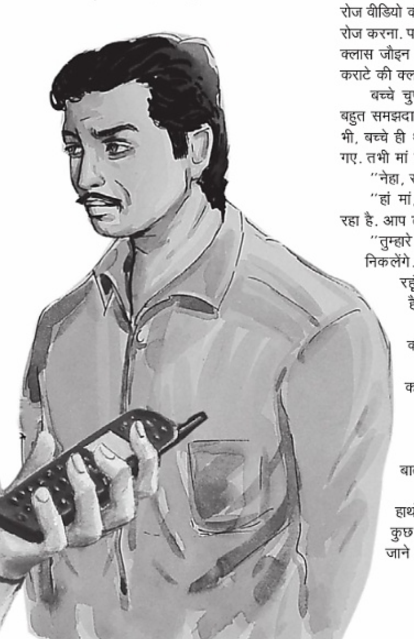

''मां, दीदी को गए चार दिन नहीं हुए और लोग जीजाजी की दूसरी शादी के बारे में भी सोचने लगे,'' यह कह कर वह मां की गोद में सिर कर रख कर सिसकने लगी.

''यह दुनिया ऐसी ही है. जानती हो आज एक महिला आई थी, शायद तुम्हारे जीजाजी के जानने वालों में थी. मुझ से ही तुम्हारे जीजाजी के लिए अपनी तलाकशुदा बेटी के रिश्ते की बात कर रही थी.''

नेहा आश्चर्य से मां को देखती रह गई.

मां कहती रहीं, ''नेहा, दुनिया ऐसी ही है. एक अच्छा जीवन जीने के लिए आलीशान मकान, नौकरचाकर और रुपयापैसा किस को नहीं चाहिए.''

नेहा का मन खिन्न हो गया. दीदी के सपनों का महल यों आहिस्ताआहिस्ता ढह रहा था.

धीरेधीरे सारे मेहमान चले गए. नेहा सामान पैक कर रही थी. तभी परी और गोलू ने आ कर चौंका दिया.

''मौसी, आप जा रही हैं?''

दीदी के जाने के बाद दोनों बहुत अकेले पड़ गए थे.

''हां बेटा, मेरी छुट्टियां खत्म हो गई हैं. औफिस भी जाना है न. तुम उदास क्यों हो. हम रोज वीडियो कौल से बात करेंगे. अपना होमवर्क रोज करना. परी कल से तुम अपनी कत्थक की क्लास जौइन करोगी और गोलू, तुम भी अपनी कराटे की क्लास जाना शुरू करोगे.''

बच्चे चुपचाप सुनते रहे. दीदी के बच्चे बहुत समझदार और आत्मनिर्भर थे. पर फिर भी, बच्चे ही थे. बच्चे नेहा को छोड़ कर चले गए. तभी मां कमरे में आ गईं.

''नेहा, सामान पैक हो गया?''

''हां मां, औफिस से बारबार फोन आ रहा है. आप लोग कब निकल रहे हो?''

''तुम्हारे पापा और भैया कल सुबह निकलेंगे. मैं...मैं अभी कुछ दिन यहीं रहूंगी. बच्चे एकदम अकेले पड़ गए हैं.''

''हां...'' नेहा सिर झुकाए मां की बात सुनती रही.

''नेहा, तुझ से एक बात कहनी थी.''

''हां, बोलो मां, सुन रही हूं.''

''यहां मेरे पास बैठो.''

''क्या हुआ मां, ऐसी भी क्या बात है?''

मां ने नेहा का हाथ अपने हाथों में ले लिया, ''नेहा, तुम से कुछ भी नहीं छिपा. तुम्हारी दीदी के जाने के बाद हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है. तुम्हारी दीदी ने मरने से पहले मुझ से एक वादा लिया था. वह चाहती थी कि उस के मरने के बाद तुम उस के बच्चों की जिम्मेदारी संभालो. तुम... तुम प्रवीणजी से शादी कर लो.''

नेहा छटपटा कर रह गई, ''मां, तुम ऐसा सोच भी कैसे सकती हो. जीजाजी के साथ मेरी... छी... मां तुम भी न,'' गुस्से और वितृष्णा से नेहा का चेहरा लाल हो गया.

''नेहा, समझने की कोशिश करो. आखिर तुम्हारी भी शादी करनी ही है. देखाभाला परिवार है. बच्चों को मां मिल जाएगी. वैसे भी एक लड़की को क्या चाहिए. आलीशान घर, नौकरचाकर, रुपयापैसा. तुम्हारे पापा की भी यही इच्छा है.''

नेहा आश्चर्य से मां को देखती रह गई, ''तुम ने जीजाजी से भी एक बार पूछा है?''

''पूछना क्या है उन के मातापिता तो हैं नहीं. चाचाचाची से बात हो गई है. उन्हें भी यह रिश्ता मंजूर है.''

''रिश्ता..?'' नेहा को सारा घटनाक्रम समझ में आ गया.

''मां, मैं तुम से इस बात की उम्मीद नहीं कर रही थी. तुम भी छि... दीदी की चिता की आग अभी ठंडी भी नहीं हुई और तुम?''

मां का चेहरा गंभीर हो गया, ''हो सकता है आज तुम्हें मेरी बातें अच्छी न लगें पर तुम्हारी दीदी के जाने के बाद प्रवीणजी और उन के बच्चों की जिम्मेदारी भी मुझ पर है. तुम सोचविचार कर जल्द मुझे जवाब दे दो. कहते हैं मरने वाले की अंतिम इच्छा न पूरी की जाए तो उसे कभी शांति नहीं मिलती.''

अंतिम वाक्य कहते वक्त मां ने नेहा को अजीब सी निगाहों से देखा. पता नहीं उन निगाहों में ऐसा क्या था. वह उन आंखों में तैर रहे हजारों सवाल के तीर झेल नहीं पाई और मुंह घुमा लिया.

एक हफ्ते में मां ने पचासों बार फोन कर दिया था. हर बार एक ही सवाल और नेहा एक ही जवाब देती, 'मां, मुझे सोचने का वक्त दो.' नेहा हर बार एक ही बात पर आ कर अटक जाती. सब को मरी हुई दीदी की अंतिम इच्छा की पड़ी है. पर किसी ने एक बार, हां सिर्फ एक बार, उस से पूछा कि उस की इच्छा क्या है. मरने वाला तो मर कर चला गया. पर लोग उसे जिंदा लाश बनाने पर क्यों तुले हैं.

शनिवार की रात थी. इन दिनों वह बहुत व्यस्त रही. शारीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी. सप्ताहभर की दौड़भाग से शरीर थक कर चूर हो गया था. हाथ में कौफी का मग लिए वह छत पर आ गई. कितने दिनों बाद वह छत पर सुकून के चंद

पलों की तलाश में आ कर बैठी थी. आसमान में चांद, बादलों से लुकाछिपी कर रहा था. वह सोचने लगी, बादलों और तारों के बीच रह कर भी चांद कितना अकेला है. वह भी तो आज कितनी अकेली थी. कोई उसे समझने को तैयार नहीं. किसी ने एक बार भी उस के बारे में नहीं सोचा. सब अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहते हैं और वह...? वह आखिर क्या चाहती है. नेहा सोचती रही. उस की आंखों के सामने जीजाजी का थका हुआ चेहरा, परी और गोलू का मासूम चेहरा, तो कभी मां का गंभीर चेहरा उभर कर आ जाता. नेहा ने आंखें मूंद लीं.

आखिर एक लड़की को क्या चाहिए अपनी जिंदगी से. एक खुशहाल परिवार, रुपयापैसा, घर बस. बस, क्या यही चाहिए था उसे. आज अगर वह मां की बात मान कर शादी कर ले तो इस रिश्ते में उसे क्या मिलेगा. दीदी की परछाईं होने का दर्जा? दूसरी पत्नी, दूसरी मां? नेहा मन ही मन मुसकराने लगी. दूसरी मां नहीं, सौतेली मां. लोगों के ताने, समाज का हर कदम पर तुलनात्मक अध्ययन. बड़ी बहन ज्यादा सुंदर थी. दूसरी तो ऐसी ही आएगी. बच्चे पैदा करने की क्या जरूरत है, पहली से 2 पहले हैं ही. जिंदगी गुजर जाएगी एक अच्छी मां बनने और सिद्ध करने में. उस के बाद भी इस की गारंटी नहीं कि वह यह सिद्ध कर भी पाएगी या नहीं. शायद समाज की नजर में स्वयं का मातृत्व सुख उठाना भी अपराध ही होगा.

प्रवीण की निगाहें हर चीज, हर रंग, हर त्योहार, हर खुशबू, हर स्वाद में दीदी को ही ढूंढेंगीं. तिनकातिनका जोड़ कर अरमानों से सजाया हुए दीदी के उस घर में एक फूलदान सजाने में भी मेरे हाथ कांपेंगे. हर पार्टी, हर उत्सव में लोगों की सवालिया निगाहें मुझे तारतार करेंगी, 'देखने में तो ठीक लगती है, फिर ऐसी क्या गरज पड़ी थी 2 बच्चों के बाप से शादी करने की. अकेली आई है या बच्चे भी.'

घूमने से पहले पचास बार सोचना होगा कि न जाने लोग क्या कहें, 'घरगृहस्थी संभालनी चाहिए. पर यह तो हनीमून के मूड में है. शादी में इतनी धूम और रिश्तेदारों की क्या जरूरत. चुपचाप कोर्ट मैरिज से कर लेती. शर्म नहीं आती. इतने बड़ेबड़े बच्चों के सामने इतना तैयार हो कर खड़ी हो जाती है.' नेहा ने घबरा कर आंखें खोल दीं और आसमान में तारों के बीच दीदी को ढूंढ़ने लगी, 'दीदी, मुझे माफ कर देना, शायद आज मैं तुम्हें और सब को स्वार्थी लगूं, पर मैं इतनी मजबूत नहीं कि जीवनभर लोगों के सवालों का जवाब दे सकूं.

'पर मैं आज तुम से यह वादा करती हूं कि एक मौसी के तौर पर हमेशा तुम्हारे बच्चों के साथ खड़ी हूं.' हफ्तों से घुमड़ते सवालों का मानो उसे जवाब मिल गया था. नेहा अपनी मां को फोन करने के लिए छत से नीचे उतर गई. ●

जब गर्लफ्रैंड हो खर्चीली

गर्लफ्रैंड को खुश रखने का सब से अच्छा तरीका होता है उसे तरहतरह के गिफ्ट दे कर खुश रखना, उसे घुमानाफिराना, खिलाना लेकिन यह सब हर बौयफ्रैंड के लिए मैनेज करना आसान नहीं. ऐसे में बौयफैंड क्या करें?

पार्टनर का एकदूसरे के साथ टाइम बिताना जरूरी है. लेकिन, हैंगआउट और घूमते हुए गर्लफ्रैंड पर खर्च भी करना पड़ता है. कई बार गर्लफ्रैंड के संग आउटिंग, लंच, गिफ्ट, शौपिंग पर खर्च बजट से बाहर होने लगता है. तब, बौयफ्रैंड के लिए एकदम से हाथ खींच लेना भी ठीक नहीं लगता. ऐसे में बौयफ्रैंड कुछ ट्रिक्स अपना कर इस सिचुएशन से निबट सकता है :

- गर्लफ्रैंड को अपनी मौजूदा स्थिति बता सकते हैं. जैसे, वायरस और वर्क फ्रौम होम के चलते सैलरी कुछ कट कर मिल रही है. कुछ की किन्हीं कारणों से नौकरी छूट गई है. यानी, गर्लफ्रैंड को फाइनैंशियल कंडीशन बता दें. अब यह सब जानने के बाद गर्लफ्रैंड का रिऐक्शन कैसा रहा, यह आप को नोटिस करना है. वैसे भी, रिलेशन में पार्टनर एकदूसरे की मुश्किल न समझें, तो फायदा ही क्या ऐसे रिलेशन का.
- गलफ्रैंड को गिफ्ट दे कर बौयफ्रैंड को गुड फील होता है. लेकिन कई बार ये गिफ्ट्स जेब पर भारी पड़ जाते हैं जब हाथ टाइट हो. बाजार में ढेरों औप्शंस हैं जो आप के बजट में फिट हो सकते हैं. सिंपल गिफ्ट भी गलफ्रैंड को भा सकते हैं.
- गर्लफ्रैंड के साथ आउटिंग कम कर सकते हैं. खर्च कम होगा और आप दोनों क्वालिटी टाइम साथसाथ बिता लेंगे.
- यदि गर्लफ्रैंड जौब करती है, खर्चा उठा सकती है तो आपस में एक्सपैंसेस बांट सकते हैं. गर्लफ्रैंड इस बात से कंफर्टेबल है तो इस से अच्छी बात और क्या होगी. हर डेट पर जो खर्चा होगा, वह आधा हो जाएगा. आप की पौकेट पर ज्यादा भार नहीं पड़ेगा.
- डेट पर जाने या टाइम बिताने के लिए महंगी जगहों का चुनाव न करें. किसी मौल में जा सकते हैं. रैस्तरां के बजाय कैफे अच्छा औप्शन हो सकता है. वहां स्नैक्स व अन्य चीजें ज्यादा महंगी नहीं होतीं.

देखा, गर्लफ्रैंड के साथ स्मार्टनैस से पेश आएंगे, तो खर्च भी कम होगा और रिलेशनशिप में मिठास भी बनी रहेगी. वैसे, यह कहते भी हैं, एडवाइज फौलो करो, फायदे में रहोगे.

– किरण आहूजा ●

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY

SURE SAFE SECURE

Now Available on 1mg

स्वास्थ्य का रखे ख्याल
जीवन रहे खुशहाल

आपकी सेवा में 25 साल का भरोसा

STOMAFIT®

Tablets & Liquid

एसिड़ीटी, गैस, बदहजमी, उल्टी, पेट दर्द, ढ़ीला पैखाना, डायरिया, कब्ज, आँव, इत्यादी !

HAEMOCAL

Delicious Taste

Iron Tonic Loaded with Glucose

खून व ताकत बढ़ाऐ

COVISAFE

Rinse-Free & Non-Sticky

Kills germs without water.

जब हाथ सुरक्षित रहेंगे तभी हम सुरक्षित रहेंगे

Suntuss

गले में खराश, सूखी खाँसी, बलगम, हरारत व ऐलर्जी वाली खाँसी में आराम पहुँचाने में प्रभावशाली एवं गुणकारी दवा

Scabicid

LOTION

सिर की जूँओ, रूसी व स्केबीस का नाशक

PYROGUM

TOOTH DROPS

मसूड़ों से खून बहना बंद करे

CLEAR ON XTRA

With Aloe & Allantoin

इसके एंटिबायटिक गुण कील-मुहाँसो को भगाने में मदद करते हैं

Geltop

Antiseptic & Pain Relieving Mouth Ulcer Gel

इसके एंटिसेपटिक गुण मुँह के छालो को सफाया करने में मदद करते हैं

SALTEX®

दाद, खाज, खुजली व एक्जिमा को दूर करे

FLAMISUN™

GEL & SPRAY

चोट, मोच, गठिया, कमर दर्द, सूजन, स्पोटस इन्जरी, गुम चोट के दर्द में जल्द आराम पहुँचाऐ

Pain RELIEF

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735,

मेल:info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

Bevitone

Multivitamins, Multiminerals & Iron Supplements Capsules

मल्टीविटामिन, मिनरल्स एवं आयरन का भंडार जो बनाए शरीर ताकतवर व उर्जावान

Follow us at https://www.facebook.com/SuncareGroup https://twitter.com/Suncare_Group https://www.instagram.com/suncare_group

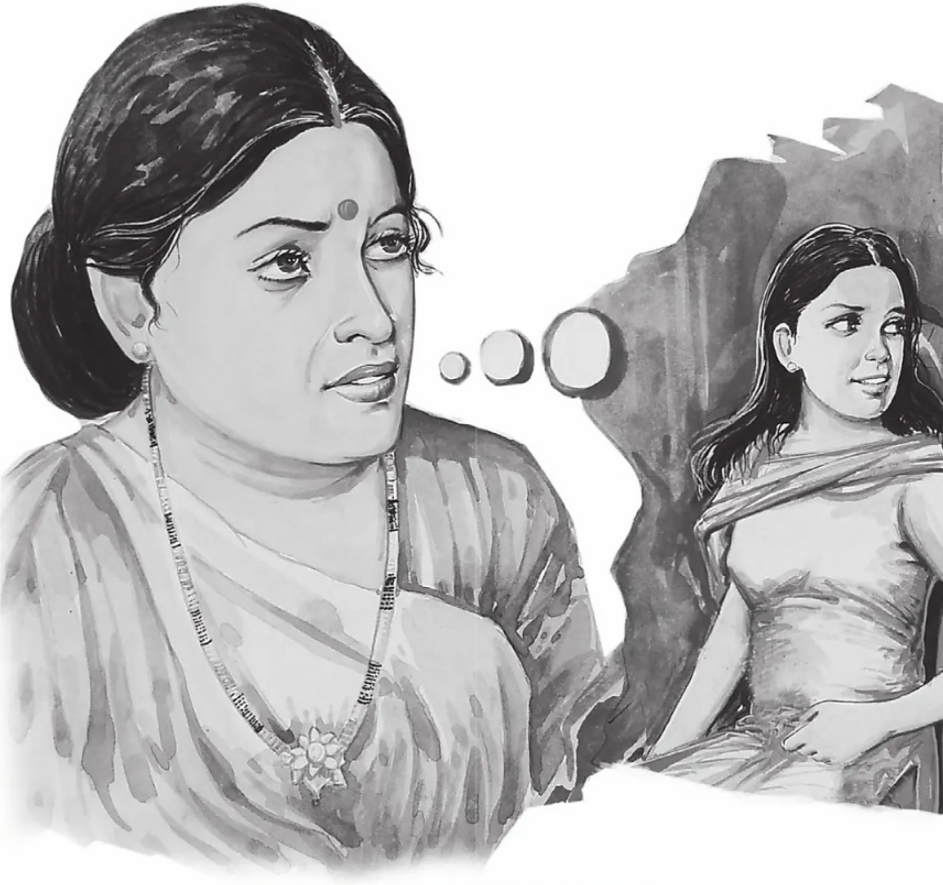

अपनापन

एक अनजान डर चैताली को भीतर से खाए जा रहा था. वह आशंकित थी कहीं शादी के बाद उस की इच्छाएं न खत्म हो जाएं, कहीं उसे ससुराल से अपनापन ही न मिले. और फिर शादी के तुरंत बाद ही...

कहानी • राजेश कुमार सिन्हा

करण और चैताली ने प्रेम विवाह किया था. दोनों साथसाथ एमबीए कर रहे थे. करण मार्केटिंग में था और चैताली एचआर में, कैंपस में दोस्ती हुई और धीरेधीरे दोनों एकदूसरे को चाहने लगे और पढ़ाई पूरी होने तक उन्होंने एकदूसरे के साथ रहने का फैसला कर लिया. दोनों को अच्छी प्लेसमैंट मिली, पर करण को पुणे और चैताली को मुंबई औफिस मे रिपोर्ट करना

था. यह बात दोनों को ही नागवार गुजरी. पर चूंकि पैकेज अच्छा था, इसलिए दोनों ने स्वीकार कर लिया.

करण पंजाबी परिवार से ताल्लुक रखता था और चैताली बंगाल से थी. जब दोनों ने इस का जिक्र अपनेअपने घरों मे किया तो जैसा कि डर था, पहले तो दोनों ही परिवारों ने अपनीअपनी असहमति दिखाई. करण के परिवार वाले शुद्ध शाकाहारी थे और चैताली का परिवार बिलकुल इस के विपरीत था. इस के अलावा भी बहुत सारे मुद्दे थे जिन पर सहमति के आसार दूरदूर तक नजर नहीं आते थे. पर करण और चैताली भी अपनी जिद पर अड़े थे. दोनों ने तय कर लिया था कि शादी तो करनी है, चाहे देर में ही सही, पर दोनों परिवारों की रजामंदी से ही.

लंबे समय तक चले मानमनुहार के बाद आखिर दोनों के परिवार वाले शादी के लिए मान गए और अगले महीने में शादी की तारीख भी तय कर दी गई. दोनों की मनचाही मुराद पूरी हो रही थी, इसलिए दोनों ही बहुत खुश थे. पर करण की मां की एक शर्त चैताली को बहुत परेशान कर रही थी. मां यह चाहती थीं कि शादी के बाद चैताली छुट्टी ले कर कम से कम एक महीने उन के परिवार के साथ रहे, करण बेशक चाहे तो पुणे जौइन कर ले या साथ रहे. चैताली को यह शर्त ही अजीब सी लगी. पर करण ने इस पर ज्यादा तवज्जुह नहीं दी. उस ने चैताली को बड़े ही सहज तरीके से समझाया था.

''देखो चैताली, अगर मां ऐसा चाहती हैं तो इस में बुराई क्या है. उन का भी तो मन करता होगा कि उन की बहू कुछ दिन उन के साथ रहे. रह लो न. कौन सा तुम वहां हमेशा के लिए रहने वाली हो.''

चैताली कोई भी दलील देती तो करण उसे मानने से इनकार कर देता था. उसे कई बार महसूस होता था कि कहीं उस ने गलत निर्णय तो नहीं ले लिया. क्या शादी के बाद भी करण पहले जैसा ही रहेगा या बदल जाएगा? जबकि करण उसे हमेशा ही बड़े प्यार से समझाया करता था और फिर उस का विश्वास लौट आता था.

इसी ऊहापोह में शादी की तारीख कब करीब आ गई, पता ही न चला. शादी दिल्ली में होनी थी जहां करण का घर था, क्योंकि उस के दादाजी लंबे समय से अस्वस्थ चल रहे थे. चैताली के घर से सभी लोग 2 दिन पहले ही दिल्ली आ चुके थे और सभी खुशीखुशी शादी की तैयारियों में व्यस्त थे.

पर, चैताली एक अनजाने डर से परेशान थी. कैसे रहेगी वह इतने दिन बिना करण के? करण की मां और बाकी लोगों का व्यवहार कैसा होगा? उस के घर के तौरतरीके कैसे होंगे? करण की मां बहुत सख्त मिजाज और उसूलों वाली हैं, ऐसा करण ने खुद बताया था. चैताली की मां शायद यह सब समझ रही थीं, इसीलिए उन्होंने भी उसे समझाया था. पर फिर भी, उस अज्ञात भय का डर उसे बारबार सता रहा था.

आज वह घड़ी भी आ ही गई जब उस ने करण के संग 7 फेरे ले ही लिए. सभी लोग उसे बधाई दे रहे थे. दोस्त, यार, रिश्तेदार, पूरा माहौल खुशियों से भरा हुआ था. करण भी अपने प्यार को शादी में बदलते देख बेहद खुश नजर आ रहा था.

अब विदाई का वक्त था, चैताली की मां और पापा दोनों के चेहरे गमगीन दिख रहे थे. कुछ औपचारिकताओं के बाद उसे करण के साथ गाड़ी में बैठा दिया गया. उस की आंखें भर आई थीं. करण ने उस के हाथों को अपने हाथ में ले लिया. उस की आंखों से टपके आंसू करण के हाथों को भिगो रहे थे.

करण के घर पहुंचते ही सब ने उस का खूब स्वागत किया. वह एक पल के लिए भी अकेली नहीं रही. घर के सभी लोग उस की खूबसूरती, उस की पढ़ाई और उस की नौकरी की खूब तारीफ कर रहे थे. करण अपने रिश्तेदारों के साथ बातें कर रहा था और बीचबीच में आ कर उस से मिल कर चला जाता था. उस के दोस्तयार उस का मजाक भी उड़ाते थे. उसे यहां पलभर के लिए भी नहीं लगा कि वह किसी नई जगह आ गई है. पर जैसे ही उसे करण की मां की बात याद आती कि वह फिर उसी अज्ञात भय की गिरफ्त में आ जाती. वह कुछ क्षणों के लिए ही अकेली रही होगी कि करण की मां कमरे में आती हुई दिखीं. वह उन्हें देख कर खड़ी हो गई. उन्होंने उसे इशारे से बैठने के लिए कहा और खुद उस की बगल में बैठ गईं.

''यहां अच्छा लग रहा है बेटा?'' उन की आवाज में स्नेह और दुलार दोनों ही था.

''हां, मम्मी,'' उस ने धीरे से कहा.

''बेटे, यह तुम्हारा ही घर है. इसे तुम्हें ही संभालना है. तुम करण की पसंद जरूर थीं पर अब तुम हम सब की पसंद हो. अगर तुम यहां खुश रहोगी तो हम सभी खुश रहेंगे. मुझे करण ने बताया था कि तुम एक महीने रहने वाली बात से काफी डरी हुई हो. पगली, इस में डरने जैसा क्या है.

''मैं भी तुम्हारी मां ही हूं. जब साथ रहोगी, तभी तो मुझे, हम सभी को समझ पाओगी. मुझे भी तो चाहिए जिस से मैं अपना दुखसुख शेयर कर सकूं. उस से अपने मन की बात कह सकूं.

''मेरी कोई बेटी तो है नहीं, बस, यही सोच कर मैं ने कहा था. बेटे, अपनापन अपना समझने से ही बढ़ सकता है. अब यह तुम पर है, तुम अगर करण के साथ जाना चाहती हो तो मुझे कोई प्रौब्लम नहीं है.''

चैताली सास का दूसरा रूप ही देख रही थी. उन की बातों से उसे बहुत सुकून मिला. उस ने सास का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा, ''मम्मी, आप जब कहेंगी तभी जाऊंगी. आप की बातों ने मुझे बहुतकुछ समझा दिया है. प्लीज, मुझे माफ कर दें.'' उस की आंखें भर आईं.

''मेरे बच्चे, रोते नहीं,' यह कहते हुए सास ने उसे गले से लगा लिया. ●

बबल रैप

फोड़ने का मजा

बबल रैप फोड़ने पर पुटपुट होने वाली पन्नी, जिसे एक बार फोड़ना शुरू करते हैं तो फोड़ते ही चले जाते हैं, लेकिन क्या हम जानते हैं ऐसा क्यों करते हैं.

इस दीवाली मेरे पड़ोस वाले अंकल के घर एक नया फ्रिज आया था. फ्रिज को कंपनी वालों ने काफी अच्छे से पैक कर रखा था. पहले गत्ते का कवर, उस के अंदर फोम और प्लास्टिक पौलिथीन की पैकिंग, फिर सब से अंत में बबल रैप, अरे वही जिस पन्नी को फोड़ते हुए पुटपुट की आवाज आती है. अब जैसे ही बबल रैप से फ्रिज को बाहर निकालने की बारी आई, तो सब से पहले मेरा हाथ बबल रैप के बबल को फोड़ने के लिए आगे बढ़ा. मैं ने 2–3 बबल फोड़े ही होंगे कि अंकल के छोटे बच्चे भी लगे फोड़ने साथ में.

बबल के फूटतेफुटाते फ्रिज को बाहर निकाला ही होगा कि अगले आधे घंटे तक वहां मौजूद सभी लोगों ने एकआध हाथ मार कर बबल से पुटपुट की आवाज निकालने में अपना जरूरी योगदान देने में कोई कसर नहीं छोड़ी. छोटे तो छोटे, घर के बड़े सदस्य भी लगे पुटपुटाने. इस वाकए से मुझे अपने बचपन के वाकए भी याद आने लगे.

बचपन में जब भी हमारे घर में कोई नया सामान आता जो बबल रैप में पैक होता था, तो हम सब भाईबहन उस बबल रैप को तब तक नहीं छोड़ते जब तक उस के सारे बबल फूट नहीं जाते. स्कूल के दिनों में बबल रैप अकसर हम बच्चों के हाथों में दिख जाया करता था, जिसे हम आपस में छीनछान के फोड़ा करते थे. इसे फोड़ते हुए हमें तो मजा आता था लेकिन आमतौर पर दूसरे व्यक्ति को उलझन हुआ करती थी, और जैसे ही उस के हाथ में बबल रैप का पैकेट आ जाता, तो वह भी उसे फोड़ता हुआ दिखाई देता.

इंसान चाहे उम्र में कितना भी बड़ा क्यों न हो, चाहेअनचाहे हाथ लगते वह इसे फोड़ता चला जाता है. अब ऐसे में फ्रिज वाले वाकए से यह बात मेरे दिमाग में खटकने लगी कि क्या यह इंसान के जीवन में बचाखुचा बचपना है या इस का जुड़ाव ह्यूमन साइकोलौजी से है?

कुछ जानकार मानते हैं, यह इंसान के भीतर हर उम्र में बन रहे कुलबुलाहट का हिस्सा है, जिसे आमतौर पर उस का बचपना समझा जाता है, लेकिन है यह ह्यूमन साइकोलौजी का हिस्सा. यह ठीक उसी तरह है जैसे किसी क्लिक वाले पेन को बारबार क्लिक करने को इंसान का मन करता है. बहुत बार यह इतना आदतन होता है कि आप अनजाने में ही पेन को क्लिक करते चले जाते हैं. दिलचस्प यह है कि ऐसा करने वाले व्यक्ति को इस का एहसास तक नहीं होता.

बहुत बार किसी की बात सुनते वक्त ऐसे व्यक्ति देखे जा सकते हैं जो अपने पावों को हिलाते हों, बहुत बार तो एकांत में वे ऐसे करते देखे जा सकते हैं, यह इतना फ्रीक्वैंट होता चला जाता है कि बहुत बार खुद को रोकने की कोशिश के बावजूद एक समय तक यह नहीं रुकता. यहां तक कि पांव हिलना या हिलाना इतना स्वाभाविक हो जाता है कि व्यक्ति के पांव सोते हुए भी हिलते रहते हैं.

एकाग्रता में खलल

खैर, कुछ लोगों का इस बारे में मानना है कि ऐसी कुलबुलाहट काफी डिस्ट्रेक्टिंग होती है. यह अटैंशन खींचती है और लोगों को इस कारण अपनी एकाग्रता को बनाए रखने में परेशानी का सामना करना पड़ता है. लेकिन माफ कीजिएगा, एक शोध के मुताबिक, यह एकाग्रता उक्त व्यक्ति की नहीं बल्कि दूसरे लोगों की भंग होती है, जो उस के कृत्य की आवाज को सुन या मूवमैंट को देख रहे होते हैं.

दरअसल, यह स्टडी कहती है कि व्यक्ति को टास्क के सफल होने की भारी उत्सुकता होती है. किसी पेन के क्लिक होने, बबल रैप के बबल के फूटने से तुरंत संतुष्टि व्यक्ति को मिलती है. यह संतुष्टि उसे उक्त टास्क के पूरा होने का एहसास दिलाती है. शोध कहता है, जब हमारे हाथ में कोई स्पंजी, या दबने वाली छोटी चीज आती है तो हमारे हाथों में एक खास तरह की खलबली मचने लगती है, जो ऐसी चीजों को फोड़ने या दबाने के लिए मजबूर कर देती है.

स्टडी कहती है कि बबल रैप फोड़ने से व्यक्ति खुद को तनावमुक्त और अलर्ट महसूस करता है. यह एक तरह का प्लेजर होता है, जिसे व्यक्ति का दिमाग खुद को फ्री करने के लिए अपनेआप करने को प्रोत्साहित हो जाता है. यह व्यक्ति को रिलैक्स करता है, उस के भीतर के तनाव और एंग्जाइटी को कम करता है. बबल रैप के बबल फूटने पर आने वाली आवाज अंगूठे और उंगली के दबाव के साथ माइंड को रिफ्लैक्ट करती है जो संतुष्टि का एहसास दिलाती है.

दिमाग की संतुष्टि

वैज्ञानिकों का कहना है, कि कुछ लोग जब ज्यादा तनाव में होते हैं और अपनी परेशानियों के बारे में सोचते हैं तो जानेअनजाने वे अपने हाथ और पैरों को हिलाने लगते हैं. यही कारण है कि उम्रदराज और मैच्योर व्यक्ति भी बबल रैप फोड़ते हुए तुरंत संतुष्टि महसूस करने लगते हैं. यह दिमाग को सुकून प्रदान करता है कि आप का टास्क पूरा हो गया है. इस से हमारे दिमाग के हैप्पी हार्मोन जारी रखने का सिग्नल मिलता है.

यह बहुत कम लोग जानते हैं कि यह बबल रैप सिर्फ पुटकाने या खुद को संतुष्ट करने के ही काम नहीं आता, बल्कि यह ठंडे फर्श पर बिछाने के लिए बेहतर मैट के काम भी आता है. इस के बबल जमीन की ठंड को ऊपर तक पहुंचने नहीं देते. आमतौर पर पिकनिक में जाते हुए जमीन पर बिछाने के लिए इस का इस्तेमाल काफी फायदेमंद होता है.

चलो, अब अगर बबल रैप के बारे में इतनी बातें हो ही गई हैं तो यह भी बता दें कि यह सब से पहले सील्ड एयर कौर्पोरेशन द्वारा 1957 में लाया गया था. हैरानी वाली बात यह है कि इसे इन्वैंट करने वाले अल्फ्रेड और मार्क ने इसे 'बबल रैप' के तौर पर नहीं खोजा था बल्कि वे 'थ्री डाइमैंशन प्लास्टिक वालपेपर' बनाना चाहते थे जो उन की खोज फेल हुई. इस तरह, हमें बबल रैप मिला जिसे सामान की पैकिंग में इस्तेमाल किया जाने लगा. हालांकि अब 2015 से बिना बबल के 'आई–बबल रैप' बाजारों में आने लगे हैं, लेकिन कलबुलाहट वाले लोगों के लिए चिंता की बात नहीं क्योंकि अभी भी बबल रैप का विकल्प बाजारों में मौजूद रहता है. –प्रतिनिधि ●

लेख • लोकमित्र गौतम

खुद को करें ऐसे प्रैजेंट

किसी भी इंटरव्यू देने से पहले जाने पर थोड़ीबहुत घबराहट होना स्वाभाविक है. कई बार इस घबराहट के चलते लोग ऐसी गलतियां कर बैठते हैं कि अपनी क्षमता व प्रतिभा से कम आंके जाते हैं.

इंटरव्यू के बारे में लोगों की अलगअलग प्रतिक्रियाएं होती हैं. कुछ लोगों का पसीना छूट जाता है, कुछ लोग हकलाने लगते हैं, कुछ लोग महीनों में याद की गई तमाम बातें उस क्षण भूल जाते हैं, अच्छेअच्छे वाचाल लोगों के मुंह से कई बार एक शब्द भी नहीं निकलता. जबकि, कई लोग ऐसे भी होते हैं जो बड़ी सहजता से इंटरव्यूर को फेस करते हैं और कुछ तो ऐसे भी होते हैं जो आम समय पर भले अपने को स्मार्ट ढंग से पेश न कर पाएं, लेकिन इंटरव्यू देते समय पता नहीं

कहां से उन में स्मार्टनैस आ जाती है और वे शानदार इंटरव्यू देते हैं.

सवाल है आखिरकार इंटरव्यू के संबंध में इतनी सारी अलगअलग प्रतिक्रियाएं क्यों होती हैं? न्यूयौर्क की पैमेला स्किलिंग्स इंटरव्यू को बेहतर तरीके से देने की कोचिंग देती हैं. उन के मुताबिक. ''इंटरव्यू फेस करना एक किस्म की कला है. यह कला बहुत कम लोगों में होती है.'' हालांकि, पैमेला के मुताबिक, इस कला को सीखा जा सकता है. दूसरे शब्दों में, इंटरव्यू देते वक्त आत्मविश्वास से भरे होने की कला सीखी जा सकती है.

इंटरव्यू देते समय किसी किस्म की दहशत में न आना, कूल बने रहना आदि तमाम कुशलताएं हम अभ्यास के जरिए सीख सकते हैं, ऐसा इंटरव्यू कला की कोचिंग देने वाली पैमेला स्किलिंग्स का मानना है.

क्या इंटरव्यू देने की कला न होने या न सीख पाने की वजह से हमें अपनी जिंदगी में इस का नुकसान उठाना पड़ता है? इस सवाल का जवाब है बिलकुल उठाना पड़ता है. पैमेला के पास ऐसे उदाहरणों की लंबी फेहरिस्त है, जो अच्छा इंटरव्यू न दे पाने की वजह से जिंदगीभर अपनी प्रतिभा और क्षमता से कम आंके गए या उन्हें अपनी क्षमता व प्रतिभा के बराबर सम्मान नहीं मिला.

जैसा कि हम ने शुरु में जिक्र किया कि ऐसे तमाम लोग हैं जो वैसे तो चीजों के बहुत अच्छे जानकार थे व अपनी जानकारी को बहुत अच्छे तरीके से व्यक्त भी कर लेते थे, लेकिन इंटरव्यू के समय उन में कंपकंपाहट शुरू हो गई. वे हकलाने लगे. वे सहज शब्दों का भी अटपटा उच्चारण करने लगे. दरअसल, यह सब उन के अंतर्मुखी होने की वजह से था. विशेषज्ञ कहते हैं इन कमियों से छुटकारा पाया जा सकता है. पर सवाल है कैसे?

पैमेला ने अपने एक क्लाइंट को सुझाव दिया कि वे सवालों के जवाब पर काम करें. उन्होंने अपने क्लाइंट को बोलने के स्टाइल के बारे में बताया और यह आत्मविश्वास भरा कि अगर अपनी बात शुरू करने के पहले एकदो जुमले में आप हकला भी जाते हैं तो इस से कोई फर्क नहीं पड़ता. आप फोकस्ड रहें, आप तुरंत ट्रैक पर लौट सकते हैं और अच्छे जवाब देना शुरू कर सकते हैं.

दरअसल, इंटरव्यू एक किस्म से अपनेआप को बेचने की कला है, अपनेआप को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने का कौशल है. यह तभी संभव है जब आप अपनेआप का सम्मान करें. अपने अंदर यह भावना रखें कि आप भी कुछ हैं. ईमानदारी से चीजों को जानें, पढ़ें, समझें और फिर अपनी समझदारी पर यकीन करें. साथ ही, यह भी मानें कि किसी भी सवाल का कोई एक रटारटाया जवाब नहीं हो सकता. अगर आप चीजों को जानते हैं तो आप उन चीजों को कई तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं, वह प्रस्तुति आप की मौलिक होगी. इसलिए इंटरव्यू के समय किसी सवाल का रटारटाया जवाब याद न करें. इंटरव्यू देते समय सवाल पूछने वाले के चेहरे पर नजर मिला कर आत्मविश्वास से देखें, होंठों से फूट रहे उस के शब्दों की बौडी लैंग्वेज समझें और बजाय सवाल के जवाब देने के पहले, एक क्षण को यह सोचें कि आखिर यह बंदा जानना क्या चाहता है.

जब आप सवाल को अच्छे ढंग से सुनेंगे तो वह सवाल सिर्फ ध्वनि का एक टुकड़ा नहीं होगा, आप के सामने उस का चित्र सा भी बन जाएगा और वह चित्र विस्तार से आप को बता रहा होगा कि यह सवाल आप से क्या जानना चाहता है. लब्बोलुआब यह है कि अगर आप इंटरव्यू देते समय इंटरव्यूर के सवाल को अच्छी तरह से सुनते हैं, उस की आंखों में आंखें डाल कर उस की बौडी लैंग्वेज को समझते हैं तो अगर आप वाकई उस सवाल के बारे में जानते हैं तो तुरंत अपनी जानकारी तक पहुंच जाएंगे और उसे अपने तरीके से व्यक्त कर देंगे.

अगर आप को लगता है कि आप ने जो सवाल सुना है, उस में कुछ कंफ्यूजन है, तो बिना इस बात की चिंता किए हुए कि इस का कोई नकारात्मक असर पड़ेगा, आप बड़ी सहजता से कहिए, 'सौरी, मैं सवाल नहीं समझ सका, कृपया इसे दोहरा दें.' और इंटरव्यूअर के सवाल दोहराते समय अपना अधिकतम फोकस सवाल को समझने में लगाएं. आप को निश्चितरूप से कोई जवाब सूझ जाएगा. यहां तक कि अगर सवाल का जवाब आप ने नहीं भी पढ़ा होगा तो भी सवाल अच्छे से सुनने पर आप को कुछ न कुछ जवाब सूझ ही जाएगा. कहने का मतलब यह है कि आप हकलाएंगे नहीं और इंटरव्यू अच्छा हो जाएगा. ●

वैडिंग सीजन में ग्लैमरस लुक

शादी, फंक्शन में खूबसूरत दिखना किसे पसंद नहीं. लड़कियां, खासतौर से चाहती हैं उन्हें एक नजर देख सभी 'वाउ' टाइप रिऐक्शन दें. लेकिन यह तभी होगा जब...

लेख • किरण आहूजा

वैडिंग में सजीधजी लडकियां हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींचती हैं. लेकिन ऐसा तभी होता है जब वे बला की खूबसूरत और ग्लैमरस लुक देती हैं. इसलिए गर्ल्स ध्यान रखें कि आप का मेकअप और ड्रैसिंग सैंस ऐसा हो कि देखने वाले आप की क्यूटनैस व ड्रैसिंग स्टाइल को सराहे बिना न रह सकें.

सो, ये 5 टिप्स फौलो करना न भूलें–

यूनीक हो ड्रैस : आप को देखते साफ लगना चाहिए कि आप यंग कालेजगोइंग गर्ल हैं, न कि आंटीजी. कई बार ड्रैसिंग के कारण लड़कियां बड़ी उम्र की दिखने लगती हैं. गर्ल्स को भारीभरकम कुछ पहनने के बजाय सिंपल, ब्राइट, यूनीक ड्रैस का चुनाव करना चाहिए. इस उम्र में क्यूटनैस वैसे ही होती है, इसलिए सिंपल में आप वैसे ही प्रीटी लगेंगी. वैस्टर्न पहनने का मन है, तो मिडी, फ्रौक या गाउन पहनें. क्लासिक दिखना चाहती हैं, तो शरारा, लहंगा, अनारकली सूट ट्राई कर सकती हैं.

साड़ी पहनने का मन है, तो यूनीक स्टाइल से पहनें.

एक्सेसरीज का चुनाव : एक्सेसरीज और ज्वैलरी का चुनाव सोचसमझ कर करें. एक हाथ में ब्रैसलेट तो दूसरे हाथ में घड़ी पहनें. कानों में बड़ेबड़े झुमके हों, तो गले में कुछ न भी पहना हो, चलता है.

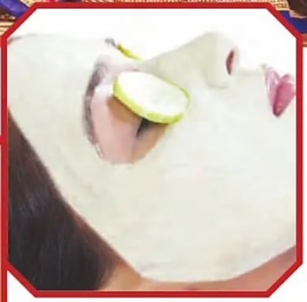

ज्वैलरी आप की ड्रैस से मिक्स एंड मैच करे.

बालों का स्टाइल : हेयर स्टाइल पूरी लुक बदल देता है. फंकी एंड सिंपल हेयर स्टाइल आप को परफैक्ट बना सकता है. खुले बाल हर ड्रैस के साथ जंचते हैं. स्टाइलिश सा हाफ बाल या हाफ चोटी क्लासी लगती है.

ओवर मेकअप हरगिज नहीं : मेकअप को ज्यादा आर्टिफिशियल न बनाएं. फाउंडेशन का उपयोग ओवर मेकअप का लुक देता है. चेहरे पर दागधब्बे और पिंपल्स हैं, तो बीबी या सीसी क्रीम का इस्तेमाल ठीक रहेगा. मेकअप ट्रिक्स बड़े होने पर ही अच्छे लगते हैं, जैसे स्मोकी साइज और बोल्ड लिप्स गर्ल्स पर अच्छे नहीं लगते और इंप्रैशन भी अच्छा नहीं जाता.

आकर्षक बनाएं अपने बैस्ट फीचर्स : आप के बैस्ट फीचर्स कौन से हैं, यह बात आप अच्छी तरह जानती हैं. जैसे अगर आप को पता है कि आप की आंखें ज्यादा खूबसूरत हैं तो मेकअप करते समय आंखों को ज्यादा शार्प रखें. लिप्स ज्यादा क्यूट हैं, तो लिपस्टिक शेड्स का चुनाव सोचसमझ कर करें. डार्क लिपस्टिक बिलकुल न लगाएं.

गड़बड़ियों से बचे रहना चाहती हैं, तो इन टिप्स को जरूर फौलो करें, जिस से कि आप पार्टी में सब से ग्लैमरस और खूबसूरत दिखें. ●

दिल्ली प्रैस

वार्षिक ग्राहक बनें!

अब निश्चित डिलीवरी रजिस्टर्ड डाक से कहीं भी

गृहशोभा
मेकअप टिप्स और समर ब्राइड
समर फैशन ट्रैंड 2018
इंटरनैट दांपत्य में दीवार
दिशा पटानी

घर बैठे पाएं

वार्षिक ₹ 950 में

भारत की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली महिलाओं की हिंदी पत्रिका

सरिता
सीबीएसई पेपर लीक परीक्षा ही फेल

घर बैठे पाएं

वार्षिक ₹ 999 में

विश्वसनीय, निर्भीक, सुखद, सदा युवा पत्रिका

आफर क्रमांक	पत्रिका	प्रतियों की संख्या	अंक	अवधि	प्रति मूल्य	वार्षिक मूल्य	सब्सक्रिप्शन आफर (रजिस्टर्ड डाक)*	चिह्नित करें
1.	गृहशोभा	1	पाक्षिक	1 वर्ष	45.00	1080.00	950.00	☐
2.	सरिता	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	999.00	☐

यह फार्म अपने चैक / डी.डी. के साथ भेजें

नाम: .... जन्मतिथि: DD ☐☐ MM ☐☐ YY ☐☐
पता: ....
.... पिन: ☐☐☐☐☐☐
मोबाइल नं.: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ फोन नं.: ☐☐☐☐☐☐☐ ई–मेल: ☐ Yes ☐ No ☐
चैक / डी.डी. नं.: ☐☐☐☐☐☐ तिथि: ☐☐☐☐☐☐
DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.
क्रैडिट कार्ड: ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ अंतिम तिथि: MM ☐☐ YY ☐☐
जारी करने वाले बैंक का नाम: ☐
हस्ताक्षर .... तिथि ....

नियम व शर्तें : कृपया इस फार्म को चेक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें-

DELHI PRAKASHAN VITRAN PVT. LTD. ई-8, झन्डेवालान एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली - **110055** चेक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए कृपया **4-5** हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आपको रजिस्टर डाक के द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधिन है. अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रैस के सब्सक्रिप्शन विभाग से संपर्क करें: फोन-टोल फ्री नबंर **1800 103 8880** फोन नबंर **41398888** (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह **10:00** से शाम **6:00** [illegible] ईमेल : **subscription@delhipress.in,** आप औनलाइन **http://www.delhipress.in/subscribe** पर भी सब्सक्राइब कर सकते है.

सफलता के लिए पढ़ना जरूरी

समय बहुत कीमती होता है. जो समय को भांप गया, सफल हो गया. समय विद्यार्थीजीवन में सफल होने का मौका हरेक को देता है.

लेख • धीरज कुमार

रिचा साइंस की स्टूडैंट थी. जब उस का एडमिशन अच्छे कालेज मे हुआ तो वह लगभग रोज ही कालेज जाया करती थी. कालेज में उस की ढेर सारी फ्रैंड्स बन गई थीं. वह रोज नई ड्रैस पहन कर कालेज जाती थी. सहेलियों के साथ वह तरहतरह के वीडियोज बनाती थी, फोटोशूट करती थी, दोस्तों के साथ सैल्फी लेती थी और उन्हें एकदूसरे को शेयर करती थी. कालेज से घर आते हुए जितने भी रैस्टोरैंट व होटल थे, सभी में वह अलगअलग दिन दोस्तों के साथ डिशेज का स्वाद लेती थी.

परीक्षा में अच्छे मार्क्स के लिए ट्यूशन भी पढ़ रही थी. ट्यूशन से आने के बाद कौपीकिताब एक तरफ रख कर आराम करती थी. इतना कुछ करने के बाद उस के पास एनर्जी नहीं बच पाती थी कि वह घर पर नियमित पढ़ाई कर सके. ट्यूशन व कालेज में पढ़ाई गई बातों को दोहराने का उसे समय नहीं मिल पाता था. थोड़ाबहुत खाली समय मिलने पर मोबाइल से गाने सुनती थी. कुछ समय अपने दोस्तों से मोबाइल पर चैटिंग करती थी. लगभग यही उस की प्रतिदिन की दिनचर्या थी.

चिंता का कारण

जैसे ही परीक्षा का समय आया. वह काफी चिंतित हो गई थी. पढ़ाई पूरी नहीं हुई थी. वह टैंशन में रहने लगी थी. इसीलिए परीक्षा पास नहीं कर पाई. उस की पढ़ाई अधूरी रह गई थी. जब पढ़ने के दिन थे तो दोस्तों के साथ मौजमस्ती करती रही. यही कारण था कि पढ़ाई में पिछड़ गई थी. सो, स्वाभाविक था कि परीक्षा में अच्छे अंक नहीं आ पाएंगे. वह फेल हो चुकी थी.

इस प्रकार वह 2 साल का कीमती समय बरबाद कर चुकी थी. उस की सारी दोस्त अगली कक्षा में जाने के लिए तैयार थीं. उस की कुछ दोस्त अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आगे की रणनीति बना रही थीं और उस पर काम कर रही थीं. जबकि, रिचा 2 साल व्यर्थ गए समय के बारे में अफसोस कर रही थी. कुछ दिन तो उस के अंदर इतनी हिम्मत नहीं बच पाई थी कि वह फिर से परीक्षा की तैयारी कर सके. लेकिन जब उस के मातापिता और गुरुजनों ने मार्गदर्शन किया तो वह अपनी गलती सुधारने को तैयार हो गई.

नकारात्मक सोच की उत्पत्ति

रिचा की तरह कम स्टूडैंट्स होते हैं जो असफल होने के बाद सफलता के लिए दोबारा मेहनत कर पाते हैं. कुछ स्टूडैंट्स होते हैं जो असफलता से निराश हो कर बीच में पढ़ाई छोड़ चुके होते हैं. कुछ ऐसे भी स्टूडैंट्स होते हैं जो असफलता से निराश हो कर आत्महत्या तक कर लेते हैं. जबकि, आत्महत्या करना किसी भी समस्या का निदान नहीं है.

समय के सदुपयोग के फायदे

12वीं क्लास में पढ़ने वाली श्रुति दिनरात घर पर पढ़ाई कर रही थी. स्कूल से आने के बाद वह नोट्स का घर पर प्रतिदिन रिवीजन करती थी. दिक्कत होने पर ट्यूशन में डिस्कस करती थी. उसे हर विषय में सैल्फ स्टडी के कारण सभी विषयों के कौन्सैप्ट्स क्लीयर रहते थे.

यही कारण था कि वह परीक्षा में 90 प्लस मार्क्स स्कोर कर पाई थी. वह सभी सब्जैक्ट्स को टाइम मैनेजमैंट के हिसाब से पढ़ती थी.

पढ़ाई के दौरान वह मोबाइल से दूर रहती थी. हां, मोबाइल से अपने कठिन विषयों के वीडियोज, स्पीच आदि जरूर सुनती थी और देखती थी. उस के दोस्तों की संख्या सीमित थी. वह उन्हीं दोस्तों से कनैक्ट रहती थी जिन से पढ़ाईलिखाई में मदद मिल सके. वह हंसते हुए बताती है, ''मैं पढ़ाईलिखाई में रुचि नहीं रखने वाले दोस्तों से जल्द ही किनारा कर लेती हूं. मेरे मोबाइल में उन्हीं फ्रैंड्स के नंबर हैं जो पढ़ाईलिखाई में अच्छी हैं और जो मुझे भी पढ़नेलिखने में मदद कर पाती हैं. फालतू लोगों के नंबर मैं ब्लौक कर देती हूं.''

फालतू दोस्तों से नुकसान

एक बात तो स्पष्ट है कि पढ़ाईलिखाई के दौरान

फालतू दोस्तों से बातें करना समय बरबाद करना ही है. कुछ पढ़ने वाले स्टूडैंट्स की ये शिकायतें जरूर रहती हैं कि पढ़ाईलिखाई के दौरान दोस्तों का जमावड़ा लक्ष्यप्राप्ति में बाधक होता है. पढ़ाईलिखाई के दौरान दोस्तों की संख्या सीमित होनी चाहिए. कुछ दोस्त पढ़ाईलिखाई के बजाय मौजमस्ती की ओर डायवर्ट करने की कोशिश करते रहते हैं, जिस से पढ़ाई में बाधा पहुंचती है.

अनियमित पढ़ाई से सफलता में देरी

बिहार के औरंगाबाद जिला निवासी सतीश कुमार का कहना है कि वे इंटर लैवल यानी एसएससी परीक्षा की तैयारी कई सालों से कर रहे हैं. लेकिन अभी तक सफलता नहीं मिली है. उन का कहना है, ''असफलता का मुख्य कारण है प्रतिदिन टाइम मैनेजमैंट के अनुसार पढ़ाई का अभ्यास नहीं कर पाना. मैं विगत 3 सालों से तैयारी कर रहा हूं. अपनी व्यक्तिगत परेशानियों के कारण पढ़ाईलिखाई नियमित नहीं कर पाता हूं. यही कारण है कि अभी तक मुझे सफलता नहीं मिल पाई है. किसी भी परीक्षा की तैयारी करते समय नियमित पढ़ाई करना जरूरी है. व्यक्तिगत परेशानियों में फंसे रह जाने के कारण पढ़ाईलिखाई बाधित हो जाती है, इसीलिए मुझे अभी तक सफलता नहीं मिली है.''

सफलता के लिए टाइम मैनेजमैंट जरूरी

यूपीएससी परीक्षा 2019 के टौपर, हरियाणा के सोनीपत जिले के तेवड़ी गांव के निवासी प्रदीप सिंह का कहना था कि वे सफलता के लिए पूरे सप्ताहभर का टाइम मैनेजमैंट तैयार करते थे. अगर किसी कारण किसी दिन तय की गई पढ़ाई पूरी नहीं कर पाता था तो अगले दिन उस को भी जरूर पूरा करता था. सप्ताह के अंत तक वे बनाए गए टारगेट को पूरा कर लेते थे. तभी उन्हें इतनी बड़ी सफलता मिली. उन्होंने इस सफलता के लिए नियमित पढ़ाई के महत्त्व को स्वीकार किया.

लक्ष्यप्राप्ति के लिए रोज पढ़ें

किसी भी परीक्षा में टाइम मैनेजमैंट का पूरा ध्यान रखना पड़ता है, इसलिए रोज पढ़ना जरूरी होता है. तभी सफलता की उम्मीद की जा सकती है. अगर आप प्रतिदिन पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं तो सफलता की उम्मीद नहीं कर सकते. सफलता के लिए खुद के पैमाने पर स्टूडैंट्स खुद को तोल लेते हैं. जिस प्रकार से स्टूडैंट्स की तैयारी होती है, उस के मुताबिक वे सफलता और असफलता का अनुमान खुद ही लगा लेते हैं.

सैल्फ स्टडी के फायदे

कंपीटिशन में सफलता के लिए लगातार अभ्यास की आवश्यकता होती है. नियमित अभ्यास से ही सफलता की उम्मीद की जा सकती है. कोचिंग क्लास में स्टूडैंट्स की प्रौब्लम्स को सौल्व किया जाता है.

सो, वह सहायक हो सकता है, परंतु उसे सफलता की गारंटी नहीं कहा जा सकता. लेकिन अगर आप सैल्फ स्टडी लगातार कर रहे हैं, तो सफलता की उम्मीद कर सकते हैं.

नियमित पढ़ाई जरूरी

आप किसी प्रकार की पढ़ाई कर रहे हों– चाहे सामान्य डिग्री हासिल करना चाहते हों, किसी कंपिटिशन की तैयारी कर रहे हों, कोई भाषा सीख रहे हों, कानून की पढ़ाई कर रहे हों, मैनेजमैंट की पढ़ाई कर रहे हों, हर पढ़ाई में जरूरी है कि पढ़ाईलिखाई नियमित हो. नियमित पढ़ाई से ही सफलता हासिल होती है.

पढ़ाईलिखाई में शौर्टकट नहीं

किसी प्रकार के भी कोर्स को पूरा करने के लिए प्रतिदिन पढ़ना जरूरी है. कोर्स की संरचना इस प्रकार से की जाती है कि नियमित पढ़ाई से ही कोर्स पूरा किया जा सकता है. कुछ लोग सफलता के लिए शौर्टकट फार्मूला अपनाने की नाकाम कोशिश करते हैं. जीवन के अन्य क्षेत्रों में शौर्टकट अपनाया जा सकता है किंतु पढ़ाईलिखाई में यह संभव नहीं है. शौर्टकट तरीके से सफलता हासिल नहीं की जा सकती है.

आज के विद्यार्थी प्रतियोगिता के युग में जी रहे हैं. किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता की तैयारी के लिए टफ कंपीटिशन से गुजरना पड़ता है. आज के कौंपिटिटिव एनवायरमैंट में अनियमित पढ़ाई से सफलता मिलना बहुत ही मुश्किल है. विद्यार्थियों को काफी सोचसमझ कर और रणनीति बना कर तैयारी करने की जरूरत है. विद्यार्थियों को सफलताप्राप्ति के लिए अपना ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित करना पड़ता है. इसलिए अच्छी तैयारी के लिए अच्छी किताबें, कोचिंग सैंटर, गुरुजनों एवं मातापिता के मार्गदर्शन के साथसाथ नियमित पढ़ाई जरूरी है. ●

वैब सीरीज रिव्यू

क्या देखें

स्कैम 1922 : द हर्षद मेहता स्टोरी

डायरैक्टर–हंसल मेहता
स्टारकास्ट–प्रतीक गांधी, श्रेया धनवंतरी, शारिब हाशमी, निखिल द्विवेदी, रजत कपूर, सतीश कौशिक, हेमंत खेर
प्लेटफौर्म–सोनी लिव
जौनर–क्राइम, ड्रामा.

हर्षद मेहता, 80–90 दशक का वह नाम है, जिसे ले कर उन दिनों आएदिन न्यूजपेपर और मैगजीन के बिसनैस पेज में कौलम छपा करते थे. जिस के चर्चे बौम्बे स्टौक एक्सचेंज से ले कर पार्लियामैंट में गूंजा करते थे. जिस का नाम 1992 में बड़े बैंक स्कैम के तौर पर सामने आया और जिस के एकाएक उठने और फिर धड़ाम से गिर पड़ने की कहानी उद्योग जगत के सब से कंट्रोवर्शियल चेहरे को मिसाल के तौर पर देखा जाने लगा. आज 2020 में यह नाम और इस नाम के पीछे छिपा इस का काला इतिहास लोगों की याददाश्त में कितना रैलिवैंट है, यह इस बात से बखूबी समझ आ सकता है कि वैब सीरीज 'स्कैम 1992' इस साल की वह सीरीज बन गई है जिस ने आईएमडीबी में अच्छे रेटिंग में सभी का रिकौर्ड तोड़ दिया है.

इस लिहाज से यह समझा जा सकता है कि डायरैक्टर हंसल मेहता की फिल्माई गई यह वैब सीरीज कितनी ज्यादा दर्शकों के सिर चढ़ कर बोल रही है. अच्छे क्रिटिक के तौर पर इसे अपने डायलौग, ऐक्टिंग, स्टोरी लाइन, कंटैंट और डायरैक्शन के लिए काफी सराहना मिल चुकी है.

कहानी शुरू होती है हर्षद मेहता (प्रतीक गांधी) से, जिस के पिता का कपड़े का व्यापार है, लेकिन वह बंद हो जाता है. घर के हालात सुधारने के लिए हर्षद और उस का भाई अश्विन मेहता (हेमंत खेर) सभी छोटेबड़े काम करने लगते हैं. हर्षद अपना रुख शेयर मार्केट की तरफ करता है, जहां उस का कोई उसूल नहीं है. 'रिस्क है तो इश्क है' की तर्ज पर वह शेयर मार्केट से खेलने लगता है. वह काफी जल्दी अपना पैर वहां जमाते हुए मार्केट को कंट्रोल करने लगता है. जिस के पास मनी, उस का शनि भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता वाली सोच रख कर पैसा बनाने के चक्कर में हर्षद शेयर मार्केट के साथ मनी मार्केट के बीच घालमेल करने लगता है. और वह इस घालमेल में 'बिग बुल' और इस धंधे का अमिताभ बच्चन बन कर उभरता है. लेकिन इस के साथसाथ इस स्कैम का परदाफाश करने के लिए अखबार की एक पत्रकार सुचेता दलाल पूरी जीजान से जुट जाती है. फिर शेयर मार्केट, मनी मार्केट, बैंक और पौलिटीशियन से जुड़ी ऐसी कहीअनकही बातें उजागर होती हैं कि सबकुछ पलट जाता है.

इस सीरीज की खासीयत इस का डायरैक्शन और कलाकारों का अभिनय है, जो काफी उम्दा है. डायलौग्स और शानदार पंच की भरमार है जो आजकल युवाओं के लिए मीम मैटीरियल बने हुए हैं. मतलब, फुल टू एंजौयमैंट. यही कारण है कि इस का मस्ट वाच कैटेगरी होना बनता है.

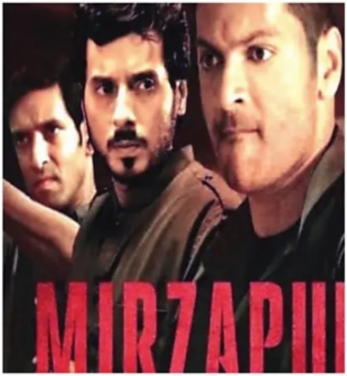

मिर्जापुर (सीजन 2)

डायरैक्टर–गुरमीत सिंह, मिहिर देसाई, करण अंशुमन
स्टारकास्ट–पंकज त्रिपाठी, अली फजल, दिव्येंदु शर्मा, कुलभूषण खरबंदा, श्वेता त्रिपाठी, रसिका दुग्गल, विजय व अन्य
प्लेटफौर्म–अमेजोन प्राइम
जौनर–ऐक्शन, क्राइम, ड्रामा.

मैं तो... व्यूअर्स की चहेती, मीमर के लिए भरपूर कंटैंट देने वाली, 'मिर्जापुर सीजन 2' वैब सीरीज ओटीटी पर आ चुकी है. अब नाम तो सुना ही होगा, पूरे 2 साल दर्शकों ने इस वैब सीरीज का बेसब्री से इंतजार जो किया था. 'चाचा...ओ चाचा..' और 'क..ख..ग' वाले मीम भी तो शेयर किए थे.

चलो यह अब आ गई है तो पहले सीजन की कहानी जहां से खत्म होती है, ठीक वहीं से इसे आगे बढ़ाया गया है. जैसी उम्मीद व्यूअर्स ने इस सीरीज से लगाई थी, ठीक वैसा ही इस का प्रदर्शन रहा है. बाहुबल, क्राइम, थ्रिल और डार्क पौलिटिक्स जो इस सीरीज की स्पैशियलिटी थी, फिर उसी तड़के के साथ यह परोसी गई है. लेकिन इस बार मिर्जापुर के बाहर के बड़े कांड और बड़े लैवल की पौलिटिक्स का भौकाल इस में देखने को मिला है.

कहानी गुड्डू पंडित (अली फजल) के बदले और मिर्जापुर की गद्दी पर राज करने के इर्दगिर्द रची गई है, जिस की प्रैग्नैंट वाइफ स्वीटी और छोटे भाई बबलू पंडित को मुन्ना त्रिपाठी (दिव्येंदु शर्मा) शादी के फंक्शन में मार डालता है. अब मसला सिंपल बदले का लग रहा है, लेकिन यह इतना सिंपल है नहीं. यह जज जरूर किया जा सकता है लेकिन देखने पर रोमांच कई गुना बढ़ जाता है. इस सीजन में नए किरदारों की एंट्री हुई है जिस ने मिर्जापुर का दायरा बढ़ा दिया. जौनपुर और मिर्जापुर के अलावा इस बार बिहार के गैंग को भी इस में शामिल किया गया है. इसी दायरे में नई दुश्मनी, दुश्मन का दुश्मन दोस्त, दोस्त का दोस्त दुश्मन जैसी चालबाजियां गुड्डू और त्रिपाठी खानदान के बीच देखने को मिलीं. एक नौर्मल बदले की कहानी को भी दिलचस्प तरीके से कैसे प्लौट किया जा सकता है, यह मिर्जापुर में देखा जा सकता है. दिलचस्प यह कि इस बार सीजन की महिला कलाकार को मजबूत भूमिकाओं में बांधा गया है, जो इस के खास होने की चर्चा का बिंदु बना रहा.

सीजन 2 में भी पहले सीजन जैसा भौकाल है. चहेते मुन्ना भैया की हरकतें, पंकज त्रिपाठी, अली फजल व अन्य कलाकारों की ऐक्टिंग देखने लायक है. अब जिस ने पहला सीजन देख लिया है, वह तो इसे तुरंत देख ले और जिस ने अभी तक पहला ही नहीं देखा है तो भाई एडवाइस है, थोड़ा फन लाओ जिंदगी में.

स्मोक

डायरैक्टर– नील गुहा
स्टारकास्ट– जिम सरभ, कल्कि कोचलिन, गिरीश कुलकर्णी, गुलशन देवय्या, मंदिरा बेदी, टौम अल्टर.
प्लेटफौर्म– इरोज नाउ
जौनर– क्राइम, थ्रिल.

यह पूरी सीरीज मुंबई और गोवा में फिल्माई गई है. यह जरूरी इसलिए भी था क्योंकि सीरीज की कहानी ड्रग्स और गैंगवार पर आधारित है. भारतीय वैब सीरीज का इन विषयों पर बगैर 'नार्कोस' और 'सेक्रेड गेम्स' से तुलना किए बच निकल पाना मुश्किल है. नार्कोस जहां ड्रग पैडलिंग और इस से जुड़े कार्टेल्स के बीच क्रिमिनल वार जौनर सीरीज है वहीं 'सैक्रेड गेम्स' गैंगवार को ले कर सब से क्रिटिकली सराही गई सीरीज है.

बेजोड़ कलाकारों की टीम के साथ यह सीरीज भी इस फेहरिस्त में खरी उतरती है. कहानी में नशे की जन्नत गोवा में रूसी मोशे बराक (टौम अल्टर) और मराठी विलास साटम (प्रकाश बेलावड़ी) मिल कर ड्रग्स का धंधा चलाते हैं, जो गोवा के सब से बड़े ड्रग्स माफिया कहलाए जाते हैं. ये दोनों हमेशा इस धंधे में अपनी पकड़ जमाने की फिराक में तैयार रहते हैं. इन दोनों के फिक्शन की उपज ही इस सीरीज की कहानी को निकाल कर दर्शकों के सामने ला देती है.

सीरीज में सभी कलाकारों के दिलचस्प किरदार हैं. सभी कलाकारों की दमदार ऐक्टिंग देखने को मिलती है. स्मोक इन्हीं किरदारों की दिलचस्प ट्रेजैक्ट्री है. टौम अल्टर इस सीरीज में खलनायक हैं. उन की लाउड ऐक्टिंग प्रशंसकों के लिए दिलचस्पी पैदा करती है. सीरीज के डायलौग अच्छे हैं जो कहानी के साथ फिट बैठते हैं. स्मोक के ट्विस्ट एंड टर्न अंत तक बांधे रखते हैं. किरदारों की प्लौटिंग डायरैक्टर द्वारा बेहतरीन ढंग से की गई है. इस सीरीज को देख कर लगता है कि भले ही भारतीय सिनेमा में डाइवर्सिटी न के बराबर देखने को मिलती हो, लेकिन वैब सीरीज की दुनिया में क्रिएटिव कंटैंट के लिए काफी स्पेस नजर आ रहा है. नईनई पटकथा और सधी ऐक्टिंग इंडियन सिनेमा को दूसरे लैवल पर ले जाने को तैयार है. इस लिहाज से इस सीरीज को एक बार तो देखना बनता है बौस.

–रोहित ●

दिल वर्सेस दौलत

कहते हैं, सच्चे प्यार के आगे सारी की सारी धनदौलत धरी की धरी रह जाती है. लाली और अबीर का प्यार दौलत के तराजू से तुलने वाला नहीं था. ऐशोआराम में पलीबढ़ी लाली और मध्यवर्गीय परिवार के अबीर का प्यार भी आसमान छू रहा था. लेकिन...

कहानी • रेणु गुप्ता

''किस का फोन था, पापा?''

''लाली की मम्मी का. उन्होंने कहा कि किसी वजह से तेरा और लाली का रिश्ता नहीं हो पाएगा.''

''रिश्ता नहीं हो पाएगा? यह क्या मजाक है? मैं और लाली अपने रिश्ते में बहुत आगे बढ़ चुके हैं. नहीं, नहीं, आप को कोई गलतफहमी हुई होगी. लाली मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकती है? आप ने ठीक से तो सुना था, पापा?''

''अरे भाई, मैं गलत क्यों बोलने लगा. लाली की मां ने साफसाफ मुझ से कहा, ''आप अपने बेटे के लिए कोई और लड़की ढूंढ़ लें. हम अबीर से लाली की शादी नहीं करा पाएंगे.''

पापा की ये बातें सुन अबीर का कलेजा छलनी हो आया. उस का हृदय खून के आंसू रो रहा था. उफ, कितने सपने देखे थे उस ने लाली और अपने रिश्ते को ले कर. कुछ नहीं बचा, एक ही झटके में सब खत्म हो गया, भरे हृदय के साथ लंबी सांस लेते हुए उस ने यह सोचा.

हृदय में चल रहा भीषण झंझावात आंखों में आंसू बन उमड़नेघुमड़ने लगा. उस ने अपना लैपटौप खोल लिया कि शायद व्यस्तता उस के इस दर्द का इलाज बन जाए लेकिन लैपटौप की स्क्रीन पर चमक रहे शब्द भी उस की आंखों में घिर आए खारे समंदर में गड्डमड्ड हो आए. झट से उस ने लैपटौप बंद कर दिया और खुद पलंग पर ढह गया.

लाली उस के कुंआरे मनआंगन में पहले प्यार की प्रथम मधुर अनुभूति बन कर उतरी थी. 30 साल के अपने जीवन में उसे याद नहीं कि किसी लड़की ने उस के हृदय के तारों को इतनी शिद्दत से छुआ हो. लाली उस के जीवन में मात्र 5–6 माह के लिए ही तो आई थी, लेकिन इन चंद महीनों की अवधि में ही उस के संपूर्ण वजूद पर वह अपना कब्जा कर बैठी थी, इस हद तक कि उस के भावुक, संवेदनशील मन ने अपने भावी जीवन के कोरे कैनवास को आद्योपांत उस से साझा कर लिया. मन ही मन उस ने उसे अपने आगत जीवन के हर क्षण में शामिल कर लिया. लेकिन शायद होनी को यह मंजूर नहीं

था. लाली के बारे में सोचतेसोचते कब वह उस के साथ बिताए सुखद दिनों की भूलभुलैया में अटकनेभटकने लगा, उसे तनिक भी एहसास नहीं हुआ.

शुरू से वह एक बेहद पढ़ाकू किस्म का लड़का था जिस की जिंदगी किताबों से शुरू होती और किताबों पर ही खत्म. उस की मां लेखिका थीं. उन की कहानियां विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में छपती रहतीं. पिता को भी पढ़नेलिखने का बेहद शौक था. वे एक सरकारी प्रतिष्ठान में वरिष्ठ वैज्ञानिक थे. घर में हर कदम पर किताबें दिखतीं. पुस्तक प्रेम उसे नैसर्गिक विरासत के रूप में मिला. यह शौक उम्र के बढ़तेबढ़ते परवान चढ़ता गया. किशोरावस्था की उम्र में कदम रखतेरखते जब आम किशोर हार्मोंस के प्रभाव में लड़कियों की ओर आकर्षित होते हैं, उन्हें उन से बातें करना, चैट करना, दोस्ती करना पसंद आता है, तब वह किताबों की मदमाती दुनिया में डूबा रहता.

बचपन से वह बेहद कुशाग्र था. हर कक्षा में प्रथम आता और यह सिलसिला उस की शिक्षा खत्म होने तक कायम रहा. पीएचडी पूरी करने के बाद एक वर्ष उस ने एक प्राइवेट कालेज में नौकरी की. तभी यूनिवर्सिटी में लैक्चरर्स की भरती हुई और उस के विलक्षण अकादमिक रिकौर्ड के चलते उसे वहीं लैक्चरर के पद पर नियुक्ति मिल गई. नौकरी लगने के साथसाथ घर में उस के रिश्ते की बात चलने लगी.

वह अपने मातापिता की इकलौती संतान था. सो, मां ने उस से उस की ड्रीमगर्ल के बारे में पूछताछ की. जवाब में उस ने जो कहा वह बेहद चौंकाने वाला था.

मां, मुझे कोई प्रोफैशनल लड़की नहीं चाहिए. बस, सीधीसादी, अच्छी पढ़ीलिखी और समझदार नौनवर्किंग लड़की चाहिए, जिस का मानसिक स्तर मुझ से मिले. जो जिंदगी का एकएक लमहा मेरे साथ शेयर कर सके. शाम को घर आऊं तो उस से बातें कर मेरी थकान दूर हो सके.

मां उस की चाहत के अनुरूप उस के सपनों की शहजादी की तलाश में कमर कस कर जुट गई. शीघ्र ही किसी जानपहचान वाले के माध्यम से ऐसी लड़की मिल भी गई.

उस का नाम था लाली. मनोविज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएशन की हुई थी. संदली रंग और बेहद आकर्षक, कंटीले नैननक्श थे उस के. फूलों से लदीफंदी डैलनुमा थी वह. उस की मोहक शख्सियत हर किसी को पहली नजर में भा गई.

उस के मातापिता दोनों शहर के बेहद नामी डाक्टर थे. पूरी जिंदगी अपने काम के चलते बेहद व्यस्त रहे. इकलौती बेटी लाली पर भी पूरा ध्यान नहीं दे पाए. लाली नानी, दादी और आयाओं के भरोसे पलीबढ़ी. ताजिंदगी मातापिता के सान्निध्य के लिए तरसती रही. मां को ताउम्र व्यस्त देखा तो खुद एक गृहिणी के तौर पर पति के साथ अपनी जिंदगी का एकएक लमहा भरपूर एंजौय करना चाहती थी.

विवाह योग्य उम्र होने पर उस के मातापिता उस की इच्छानुसार ऐसे लड़के की तलाश कर रहे थे जो उन की बेटी को अपना पूरापूरा समय दे सके, कंपेनियनशिप दे सके. तभी उन के समक्ष अबीर का प्रस्ताव आया. उसे एक उच्चशिक्षित पर घरेलू लड़की की ख्वाहिश थी. आजकल अधिकतर लड़के वर्किंग गर्ल को प्राथमिकता देने लगे थे. अबीर जैसे नौनवर्किंग गर्ल की चाहत रखने वाले लड़कों की कमी थी. सो, अपने और अबीर के मातापिता के आर्थिक स्तर में बहुत अंतर होने के बावजूद उन्होंने अबीर के साथ लाली के रिश्ते की बात छेड़ दी.

संयोगवश उन्हीं दिनों अबीर के मातापिता और दादी एक घनिष्ठ पारिवारिक मित्र की बेटी के विवाह में शामिल होने लाली के शहर पहुंचे. सो, अबीर और उस के घर वाले एक बार लाली के घर भी हो आए. लाली अबीर और उस के परिवार को बेहद पसंद आई. लाली और उस के परिवार वालों को भी अबीर अच्छा लगा.

दोनों के रिश्ते की बात आगे बढ़ी. अबीर और लाली फोन पर बातचीत करने लगे. फिर कुछ दिन चैटिंग की. अबीर एक बेहद समझदार, मैच्योर और संवेदनशील लड़का था. लाली को बेहद पसंद आया. दोनों में घनिष्ठता बढ़ी. दोनों को एकदूसरे से बातें करना बेहद अच्छा लगता. फोन पर रात को दोनों घंटों बतियाते. एकदूसरे को अपने अनुकूल पा कर दोनों कभीकभार वीकैंड पर मिलने भी लगे. एकदूसरे को विवाह से पहले अच्छी तरह जाननेसमझने के उद्देश्य से अबीर शुक्रवार की शाम फ्लाइट से उस के शहर पहुंच जाता. दोनों शहर के टूरिस्ट स्पौट्स की सैर करतेकराते वीकैंड साथसाथ मनाने लगे. एकदूसरे को गिफ्ट्स का आदानप्रदान भी करने लगे.

दिन बीतने के साथ दोनों के मन में एकदूसरे के लिए चाहत का बिरवा फूट चुका था. सो, दोनों की तरफ से ग्रीन सिगनल पा कर लाली के मातापिता अबीर का घरबार देखने व उन के रोके की तारीख तय करने अबीर के घर पहुंचे. अबीर का घर, रहनसहन, जीवनशैली देख कर मानो आसमान से गिरे वे.

अबीर का घर, जीवनस्तर उस के पिता की सरकारी नौकरी के अनुरूप था. लाली के रईस और अतिसंपन्न मातापिता

HEMODEX®

Family Tonic

SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Hemodex, Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें हैं भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्बीटॉल 70%. जो कि चेहरा, जीभ या आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दमफूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गंभीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी एवं मुँह में छाले

PROTECTIVE COATING ACTION

जैसी सभी तकलीफों से!

Stomaquar पेप्टिक अल्सर, जलन, अपच, हाइपर– एसीडीटी, पेट में ज्यादा गैस का होना, हिचकी आना, कब्ज एवं पेट के अन्य तकलीफों से निजात दिलाने में काफी उपयोगी, साथ ही रक्तचाप को सही रखने में, पुराना आँव (क्रोनिक डीसेंट्री), पुराना कब्ज (कॉन्स्टीपेशन), सिरदर्द एवं बेचैनी तथा मुँह के छाले में इसका नियमित सेवन काफी लाभदायक है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

Website : www.growmed.in
CALL : 0612-2311837, 8987383154

की अमीरी की बू मारते रहनसहन से कहीं बहुत कमतर था. उन के 2 बैडरूम के फ्लैट में ससुराल आने पर उन की बेटी शादी के बाद कहां रहेगी, वे दोनों इस सोच में पड़ गए. एक बैडरूम अबीर के मातापिता का था, दूसरा बैडरूम उस की दादी का था.

अबीर की दादी की घरभर में तूती बोलती. वे काफी दबंग व्यक्तित्व की थीं. बेटाबहू उन को बेहद मान देते. उन की तुलना में अबीर की मां का व्यक्तित्व उन्हें तनिक दबा हुआ प्रतीत हुआ.

अबीर के घर सुबह से शाम तक एक पूरा दिन बिता कर उन्होंने पाया कि उन के घर में दादी की मरजी के बिना पत्ता तक नहीं हिलता. उन की सीमित आय वाले घर में उन्हें बातबात पर अबीर के मातापिता के मितव्ययी रवैए का परिचय मिला.

अगले दिन लाली के मातापिता ने बेटी को सामने बैठा उस से अबीर के रिश्ते को ले कर अपने खयालात शेयर किए.

लाली के पिता ने लाली से कहा, 'सब से पहले तो तुम मुझे यह बताओ, अबीर के बारे में तुम्हारी क्या राय है?'

'पापा, वह एक सीधासादा, बेहद सैंटीमैंटल और सुलझा हुआ लड़का लगा मुझे. यह निश्चित मानिए, वह कभी दुख नहीं देगा मुझे. मेरी हर बात मानता है. बेहद केयरिंग है. दादागीरी, ईगो, गुस्से जैसी कोई नैगेटिव बात मुझे उस में नजर नहीं आई. मुझे यकीन है, उस के साथ हंसीखुशी जिंदगी बीत जाएगी. सो, मुझे इस रिश्ते से कोई आपत्ति नहीं.'

तभी लाली की मां बोल पड़ीं, 'लेकिन, मुझे ऑब्जेक्शन है.'

'यह क्या कह रही हैं मम्मा? हम दोनों अपने रिश्ते में बहुत आगे बढ़ चुके हैं. अब मैं इस रिश्ते से अपने कदम वापस नहीं खींच सकती. आखिर बात क्या है? आप ने ही तो कहा था, मुझे अपना लाइफपार्टनर चुनने की पूरीपूरी आजादी होगी. फिर, अब आप यह क्या कह रही हैं?'

'लाली, मैं तुम्हारी मां हूं. तुम्हारा भला ही सोचूंगी. मेरे खयाल से तुम्हें यह शादी कतई नहीं करनी चाहिए.'

'मौम, सीधेसीधे मुद्दे पर आएं, पहेलियां न बुझाएं.'

'तो सुनो, एक तो उन का स्टेटस, स्टैंडर्ड हम से बहुत कमतर है. पैसे की बहुत खींचातानी लगी मुझे उन के घर में. क्यों जी, आप ने देखा नहीं, शाम को दादी ने अबीर से कहा, एसी बंद कर दे. सुबह से चल रहा है. आज तो सुबह से मीटर भाग रहा होगा. तौबा उन के यहां तो एसी चलाने पर भी रोकटोक है.

'फिर दूसरी बात, मुझे अबीर की दादी बहुत डौमिनेटिंग लगीं. बातबात पर अपनी बहू पर रोब जमा रही थीं. अबीर की मां बेचारी चुपचाप मुंह सीए हुए उन के हुक्म की तामील में जुटी हुई थी. दादी मेरे सामने ही बहू से फुसफुसाने लगी थीं, बहू मीठे में गाजर का हलवा ही बना लेती. नाहक इतनी महंगी दुकान से इतना महंगी मूंग की दाल का हलवा और काजू की बर्फी मंगवाई. शायद कल हमारे सामने हमें इंप्रैस करने के लिए ही इतनी वैराइटी का खानापीना परोसा था. मुझे नहीं लगता यह उन का असली चेहरा है.'

'अरे मां, आप भी न, राई का पहाड़ बना देती हैं. ऐसा कुछ नहीं है. खातेपीते लोग हैं. अबीर के पापा ऐसे कोई गएगुजरे भी नहीं. क्लास वन सरकारी अफसर हैं. हां, हम जैसे पैसेवाले नहीं हैं. इस से क्या फर्क पड़ता है?'

'लेकिन मैं सोच रही हूं अगर अबीर भी दादी की तरह हुआ तो क्या तू खर्चे को ले कर उस की तरफ से किसी भी तरह की टोकाटाकी सह पाएगी? खुद कमाएगी नहीं, खर्चे के लिए अबीर का मुंह देखेगी. याद रख लड़की, बच्चे अपने बड़ेबुजुर्गों से ही आदतें विरासत में पाते हैं. अबीर ने भी अगर तेरे खर्चे पर बंदिशें लगाईं तो क्या करेगी? सोच जरा.'

'अरे मां, क्या फुजूल की हाइपोथेटिकल बातें कर रही हैं? क्यों लगाएगा वह मुझ पर इतनी बंदिशें? इतना बढ़िया पैकेज है उस का.

फिर अबीर मुझे अपनी दादी के बारे में बताता रहता है. कहता है, वे बहुत स्नेही हैं. पहली बार जब वे लोग हमारे घर आए थे, दादी ने मुझे कितनी गर्माहट से अपने सीने से चिपकाया था. मेरे हाथों को चूमा था.'

'तो लाली बेटा, तुम ने पूरापूरा मन बना लिया है कि तुम अबीर से ही शादी करना चाहती हो. सोच लो बेटा, तुम्हारी मम्मा की बातों में भी वजन है. ये पूरी तरह से गलत नहीं. उन के और हमारे घर के रहनसहन में मुझे भी बहुत अंतर लगा. तुम कैसे ऐडजस्ट करोगी?'' पापा ने कहा था.

'अरे पापा, मैं सब ऐडजस्ट कर लूंगी. जिंदगी तो मुझे अबीर के साथ काटनी है न. और वह बेहद अच्छा व जैनुइन लड़का है. कोई नशा नहीं है उस में. मैं ने सोच लिया है, मैं अबीर से ही शादी करूंगी.'

'लाली बेटा, यह क्या कह रही हो? मैं ने दुनिया देखी है. तुम तो अभी बच्ची हो. यह सीने से चिपकाना, आशीष देना, चुम्माचाटी थोड़े दिनों के शादी से पहले के चोंचले हैं. बाद में तो, बस, उन की रोकटोक, हेकड़ी और बंधन रह जाएंगे. फिर रोतीझींकती मत आना मेरे पास कि आज सास ने यह कह दिया और दादी सास ने यह कह दिया.

'और एक बात जो मुझे खाए जा रही है वह है उन का टू बैडरूम का दड़बेनुमा फ्लैट. हर बार त्योहार के मौके पर तुझे ससुराल तो जाना ही पड़ेगा. एक बैडरूम में अबीर के पेरैंट्स रहते हैं, दूसरे में उस की दादी. फिर तू कहां रहेगी? तेरे हिस्से में ड्राइंगरूम ही आएगा? न न न, शादी के बाद मेरी नईनवेली लाडो को अपना अलग एक कमरा भी नसीब न हो, यह मुझे बिलकुल बरदाश्त नहीं होगा.

'समझा कर बेटा, हमारे सामने यह खानदान एक चिंदी खानदान है. कदमकदम पर तुझे इस वजह से बहू के तौर पर बहुत स्ट्रगल करनी पड़ेगी. न न, कोई और लड़का देखते हैं तेरे लिए. गलती कर दी हम ने, तुझे अबीर से मिलाने से पहले हमें उन का घरबार देख कर आना चाहिए था. खैर, अभी भी देर नहीं हुई है. मेरी बिट्टो के लिए लड़कों की कोई कमी है क्या?'

'अरे मम्मा, आप मेरी बात नहीं समझ रहीं हैं. इन कुछ दिनों में मैं अबीर को पसंद करने लगी हूं. उसे अब मैं अपनी जिंदगी में वह जगह दे चुकी हूं जो किसी और को दे पाना मेरी लिए नामुमकिन होगा. अब मैं अबीर के बिना नहीं रह सकती. मैं उस से इमोशनली अटैच्ड हो गई हूं.'

'यह क्या नासमझी की बातें कर रही है, लाली? तू तो मेरी इतनी समझदार बेटी है. मुझे तुझ से यह उम्मीद न थी. जिंदगी में सक्सैसफुल होने के लिए प्रैक्टिकल बनना पड़ता है. कोरी भावनाओं से जिंदगी नहीं चला करती, बेटा. बात समझ. इमोशंस में बह कर आज अगर तू ने यह शादी कर ली तो भविष्य में बहुत दुख पाएगी. तुझे खुद अपने पांव पर कुल्हाड़ी नहीं मारने दूंगी. मैं ने बहुत सोचा इस बारे में, लेकिन इस रिश्ते के लिए मेरा मन हरगिज नहीं मान रहा.'

'मम्मा, यह आप क्या कह रही हैं? मैं अब इस रिश्ते में पीछे नहीं मुड़ सकती. मैं अबीर के साथ पूरी जिंदगी बिताने का वादा कर चुकी हूं. उस से प्यार करने लगी हूं. पापा, आप चुप क्यों बैठे हैं? समझाएं न मां को. फिर मैं पक्का डिसाइड कर चुकी हूं कि मुझे अबीर से ही शादी करनी है.'

'अरे भई, क्यों जिद कर रही हो जब यह कह रही है कि इसे अबीर से ही शादी करनी है तो क्यों बेबात अड़ंगा लगा रही हो? अबीर के साथ जिंदगी इसे बितानी है या तुम्हें?' लाली के पिता ने कहा.

'आप तो चुप ही रहिए इस मामले में. आप को तो दुनियादारी की समझ है नहीं. चले हैं बेटी की हिमायत करने. मैं अच्छी तरह से सोच चुकी हूं, उस घर में शादी कर मेरी बेटी कोई सुख नहीं पाएगी. सास और ददिया सास के राज में 2 दिन में ही टेसू बहाते आ जाएगी. जाइए, आप के ऑफिस का टाइम हो गया. मुझे हैंडल कर लेने दीजिए यह मसला.'

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए

GROWMED® AD VITAMIN

बेबी ऑयल

आपके बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की ज्यादा मजबूती के लिए। ताकि आपके बच्चे हमेशा रहें चुस्त एवं दुरूस्त और हो सम्पूर्ण शारीरिक विकास।

अब चंदन एवं गुलाब के खुशबू में भी

नक्कालों से सावधान ग्रोमेड देखकर ही लें।

GROWMED
AD
VITAMIN
BABY OIL
VITAMIN A, D, E AND OLIVE OIL

GROWMED®

Kills 99.9% Germs

Antiseptic Hand Sanitizer

70% Alcohol

Available in GEL : 100ml, 200ml, 500ml

GUJARAT

Website : www.growmed.in

• CALL : 9431237784, 8987383154

500 ml
GROWMED
Rinse-Free & Non-Sticky
Antiseptic Hand Sanitizer

इस के साथ लाली की मां ने पति को वहां से जबरन उठने के लिए विवश कर दिया और फिर बेटी से बोलीं, 'यह क्या बेवकूफी है, लाली? यह तेरा प्यार पप्पी लव से ज्यादा और कुछ नहीं. अगर तू ने मेरी बात नहीं मानी तो सच कह रही हूं, मैं तुझ से सारे रिश्ते तोड़ लूंगी. न मैं तेरी मां, न तू मेरी बेटी. जिंदगीभर तेरी शक्ल नहीं देखूंगी. समझ लेना, मैं तेरे लिए मर गई.' यह कह कर लाली की मां अतीव क्रोध में पांव पटकते हुए कमरे से बाहर चली गईं.

मां का यह विकट क्रोध देख लाली समझ गई थी कि अब अगर कुदरत भी साक्षात आ जाए तो उन्हें इस रिश्ते के लिए मनाना टेढ़ी खीर होगा. मां के इस हठ से वह बेहद परेशान हो उठी. उस का अंतर्मन कह रहा था कि उसे अबीर जैसा सुलझा हुआ, समझदार लड़का इस जिंदगी में दोबारा मिलना असंभव होगा. आज के समय में उस जैसे सैंसिबल, डीसैंट लड़के बिरले ही मिलते हैं. अबीर जैसे लड़के को खोना उस की जिंदगी की सब से बड़ी भूल होगी.

लेकिन मां का क्या करे वह? वे एक बार जो ठान लेती हैं वह उसे कर के ही रहती हैं. वह बचपन से देखती आई है, उन की जिद के सामने आज तक कोई नहीं जीत पाया. तो ऐसी हालत में वह क्या करे? पिछली मुलाकात में ही तो अबीर के साथ जीनेमरने की कसमें खाई थीं उस ने. दोनों ने एकदूसरे के प्रति अपनी प्रेमिल भावनाएं व्यक्त की थीं.

पिछली बार अबीर के उस के कहे गए प्रेमसिक्त स्वर उस के कानों में गूंजने लगे, 'लाली माय लव, तुम ने मेरी आधीअधूरी जिंदगी को कंप्लीट कर दिया. दुलहन बन जल्दी से मेरे घर आ जाओ. अब तुम्हारे बिना रहना शीयर टौर्चर लग रहा है.'

क्या करूं क्या न करूं, यह सोचतेसोचते अतीव तनाव से उस के स्नायु तन आए और आंखें सावनभादों के बादलों जैसे बरसने लगीं. अनायास वह अपने मोबाइल स्क्रीन पर अबीर की फोटो देखने लगी और उसे चूम कर अपने सीने से लगा उस ने अपनी आंखें मूंद लीं.

तभी मम्मा उस का दरवाजा पीटने लगीं... ''लाली, दरवाजा खोल बेटा.''

उस ने दरवाजा खोला. मम्मा कमरे में धड़धड़ाती हुई आईं और उस से बोलीं, ''मैं ने अबीर के पापा को इस रिश्ते के लिए मना कर दिया है. सारा टंटा ही खत्म. हां, अब अबीर का फोनवोन आए, तो उस से तुझे कुछ कहने की कोई जरूरत नहीं. वह कुछ कहे, तो उसे रिश्ते के लिए साफ इनकार कर देना और कुछ ज्यादा बात करने की जरूरत नहीं. ले देख, यह एक और लड़के का बायोडाटा आया है तेरे लिए. लड़का खूब हैंडसम है. नामी एमएनसी में सीनियर कंसल्टैंट है. 40 लाख रुपए से ऊपर का ऐनुअल पैकेज है लड़के का. मेरी बिट्टो राज करेगी राज. लड़के वालों की दिल्ली में कई प्रौपर्टीज हैं. रुतबे, दौलत, स्टेटस में हमारी टक्कर का परिवार है. बता, इस लड़के से फोन पर कब बात करेगी?''

''मम्मा, फिलहाल मेरे सामने किसी लड़के का नाम भी मत लेना. अगर आप ने मेरे साथ जबरदस्ती की तो मैं दीदी के यहां लंदन चली जाऊंगी. याद रखिएगा, मैं भी आप की बेटी हूं.'' यह कहते हुए लाली ने मां के कमरे से निकलते ही दरवाजा धड़ाक से बंद कर लिया.

मन में विचारों की उठापटक चल रही थी. अबीर उसे आसमान का चांद लग रहा था जो अब उस की पहुंच से बेहद दूर जा चुका था. क्या करे क्या न करे, कुछ समझ नहीं आ रहा था.

सारा दिन उस ने खुद से जूझते हुए बेपनाह मायूसी के गहरे कुएं में बिताया. सांझ का धुंधलका होने को आया. वह मन ही मन मना रही थी, काश, कुछ चमत्कार हो जाए और मां किसी तरह इस रिश्ते के लिए मान जाएं. तभी व्हाट्सऐप पर अबीर का मैसेज आया, ''तुम से मिलना चाहता हूं. कब आऊं?''

उस ने जवाब में लिखा, 'जल्दी' और एक आंसू बहाती इमोजी भी मैसेज के साथ उसे पोस्ट कर दी. अबीर का अगला मैसेज एक लाल धड़कते दिल के साथ आया, ''कल सुबह पहुंच रहा हूं. एयरपोर्ट पर मिलना.''

लाली की वह रात आंखों ही आंखों में कटी. अगली सुबह वह मां को एक बहाना बना एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गई.

क्यूपिड के तीर से बंधे दोनों प्रेमी एकदूसरे को देख खुद पर काबू न रख पाए और दोनों की आंखों से आंसू बहने लगे. कुछ ही क्षणों में दोनों संयत हो गए और लाली ने उन दोनों के रिश्ते को ले कर मां के औब्जेक्शंस को विस्तार से अबीर को बताया.

अबीर और लाली दोनों ने इस मुद्दे को ले कर तसल्ली से, संजीदगी से विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अब जो कुछ करना है उन दोनों को ही करना होगा.

''लाली, इन परिस्थितियों में अब तुम बताओ कि क्या करना है? तुम्हारी मां हमारी शादी के खिलाफ मोरचाबंदी कर के बैठी हैं. उन्होंने साफसाफ लफ्जों में इस के लिए मेरे पापा से इनकार कर दिया है. तो इस स्थिति में अब मैं किस मुंह से उन से अपनी शादी के लिए कहूं?'' अबीर ने कहा.

''हां, यह तो तुम सही कह रहे हो. चलो, मैं अपने पापा से इस बारे में बात करती हूं. फिर मैं तुम्हें बताती हूं.''

''ठीक है, ओके, चलता हूं. बस, यह याद रखना मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं. शायद खुद से भी ज्यादा. अब तुम्हारे बिना मेरा कोई वजूद नहीं.''

लाली ने अपनी पनीली हो आई आंखों से अबीर की तरफ एक फ्लाइंग किस उछाल दिया और फुसफुसाई, 'हैप्पी एंड सेफ जर्नी माय लव, टेक केयर.''

लाली एयरपोर्ट से सीधे अपने पापा के औफिस जा पहुंची और उस ने उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया. उस की बातें सुन पापा ने कहा, ''अगर तुम और अबीर इस विषय में निर्णय ले ही चुके हो तो मैं तुम दोनों के साथ हूं. मैं कल ही अबीर के घर जा कर तुम्हारी मां के इनकार के लिए उन से माफी मांगता हूं और तुम दोनों की शादी की बात पक्की कर देता हूं. इस के बाद ही मैं तुम्हारी मां को अपने ढंग से समझा लूंगा. निश्चिंत रहो लाली, इस बार तुम्हारी मां को तुम्हारी बात माननी ही पड़ेगी.''

लाली के पिता ने लाली से किए वादे को पूरा किया. अबीर के घर जा कर उन्होंने अपनी पत्नी के इनकार के लिए उन से हाथ जोड़ कर बच्चों की खुशी का हवाला देते हुए काफी मिन्नतें कर माफी मांगी और उन दोनों की शादी पक्की करने के लिए मिन्नतें कीं.

इस पर अबीर के पिता ने उन से कहा, ''भाईसाहब, अबीर के ही मुंह से सुना कि आप लोगों को हमारे इस 2 बैडरूम के फ्लैट को ले कर कुछ उलझन है कि शादी के बाद आप की बेटी इस में कहां रहेगी? आप की परेशानी जायज है, भाईसाहब. तो, मेरा खयाल है कि शादी के बाद दोनों एक अलग फ्लैट में रहें. आखिर बच्चों को भी प्राइवेसी चाहिए होगी. यही उन के लिए सब से अच्छा और व्यावहारिक रहेगा. क्या कहते हैं आप?''

''बिलकुल ठीक है, जैसा आप उचित समझें.''

''तो फिर, दोनों की बात पक्की?''

''जी बिलकुल,'' अबीर के पिता ने लाली के पिता को मिठाई खिलाते हुए कहा.

बेटी की शादी उस की इच्छा के अनुरूप तय कर, घर आ कर लाली के पिता ने पत्नी को लाली और अबीर की खुशी के लिए उन की शादी के लिए मान जाने के लिए कहा. लाली ने तो साफसाफ लफ्जों में उन से कह दिया, ''इस बार अगर आप हम दोनों की शादी के लिए नहीं माने तो मैं और अबीर कोर्ट मैरिज कर लेंगे.'' और लाली की यह धमकी इस बार काम कर गई. विवश लाली की मां को बेटी और पति के सामने घुटने टेकने पड़े.

आखिरकार, दिल वर्सेस दौलत की जंग में दिल जीत गया और दौलत को मुंह की खानी पड़ी. ●

प्रेम समस्याएं

मेरी उम्र 25 वर्ष है. मेरा बौयफ्रैंड है और हम रिलेशनशिप में हैं. वैसे तो मेरे और बौयफ्रैंड के बीच सब ठीक है. हम जब भी मिलते हैं वह मुझ पर जी भर कर प्यार लुटाता है. मेरी सारी बातें मानता है. मुझे पूरा यकीन दिला देता है कि उस की जिंदगी में मैं बहुत इंर्पोटैंट हूं. लेकिन दोबारा मिलने का वादा कर के जैसे ही हम अलग हो अपनीअपनी राह चल पड़ते हैं मुझे ऐसा लगता है जैसे वह मुझे भूल गया है. न तो फोन करता है और न ही कोई मैसेज. मैं जब कोई मैसेज करती हूं तो उस का टू दी पौइंट जवाब दे देता है.

जब फोन पर मैं उस से यह शिकायत करती हूं कि अलग होते ही तुम्हारा बिहेवियर चेंज क्यों हो जाता है तो वह कहता है कि यह मेरी गलतफहमी है. उस का नेचर ही कुछ ऐसा है. फोन पर ज्यादा मैसेज और लंबी बात करने की उस की आदत नहीं है. जौब ऐसी है कि बिजी रहता हूं. दोबारा जब फिर मिलता है तो अपने प्यार और लुभावनी बातों से मेरा गुस्सा शांत कर देता है लेकिन दूर जाते ही फिर उसी ढर्रे पर आ जाता है. उस का ऐसा व्यवहार मुझे परेशान कर देता है. ऐसा लगता है जैसे मैं ही उस के प्यार में दीवानी हूं उसे मेरी परवाह ही नहीं. क्या मेरा ऐसा सोचना ठीक है?

आप कुछ ज्यादा ही सोच रही हैं. आप खुद मानती हैं कि जब आप का बौयफ्रैंड आप से मिलता है तो पूरी तरह से आप का होता है. अपना 100 परसैंट बेस्ट देने की कोशिश करता है. रही बात उस के कम फोन करने की और मैसेज न करना तो हो सकता है वाकई वह अपने काम में बिजी रहता हो. आप खाली बैठे हों तो जरूरी नहीं कि वह भी खाली हो.

अगर आप उस का प्यार आजमाना ही चाहती हैं तो उस से कहें कि वह रात में या सुबह जागने के बाद एक बार आप को फोन करे, ऐसा पूरा एक हफ्ता करे. देखिए वह ऐसा करता है या नहीं. अगर करता है तो वाकई वह आप को खुश रखना चाहता है, वो दूसरी बात है कि वह सच में पूरा दिन काम में बिजी रहता हो.

रिलेशनशिप में अपने पार्टनर की स्थिति को समझना चाहिए. उस की नेचर के साथ थोड़ाबहुत समझौता करना पड़ता है. जो समझौता नहीं करते तो बात आखिर में ब्रेकअप पर खत्म होती है. आप खुद थोड़ा समझदार बनिए. अपने बौयफ्रैंड की कंडीशन समझने की कोशिश करें.

प्यार के साथ जौब भी तो जरूरी है. फिर आगे चल कर अगर आप दोनों विवाह कर लेते हैं तो आप की यह शिकायत दूर हो जाएगी कि वह आप से अलग होने के बाद बिजी हो जाता है. विवाह के बाद तो सारा सिनेरियो ही चेंज हो जाएगा. प्यार तो वह आप से करता ही है. शादी के बाद वह आप के प्यार में कितना और कैसे डूबा रहे यह आप बेहतर जानती हैं.

मैं 24 वर्षीय युवती हूं. अपने ही औफिस में काम करने वाले युवक के प्रति आकर्षित हूं. हमारे बीच बातचीत भी होती है लेकिन उस ने मुझे कभी नहीं जताया कि वह मुझे पसंद करता है. मुझे लगने लगा है कि मेरा उस के प्रति प्यार एकतरफा है. क्या मुझे उस की तरफ अपने कदम आगे बढ़ाने चाहिए?

आप का प्यार एकतरफा तो नहीं, यह प्रश्न हर प्यार करने वाले को खुद से पूछना चाहिए और अगर जवाब है कि आप का प्यार एकतरफा है, तो आप को इस प्यार के रास्ते से अपने कदम वापस खींच लेने चाहिए. लेकिन अगर आप का प्यार एकतरफा नहीं है, तो आप आगे बढ़ सकते हैं. इतनी समझदार तो आप होंगी ही कि उस युवक की बातों से पता लगा लें कि आप के बारे में वह क्या सोचता है. आप को ले कर सीरियस है या नहीं. अकसर लड़के अपना प्यार जाहिर करने में झिझकते हैं या कई बार उन का इगो आगे आ जाता है कि अगर लड़की ने उन्हें मना कर दिया तो.

असव को वाकई उस लड़के से प्यार हो गया है तो आप खुद भी उसे प्रपौज कर सकती हैं, जरूरी नहीं कि लड़का ही प्रपौज करे. वक्त और समय आप खुद डिसाइड करें. हो सकता है आप प्रपौज करें और लड़का अपना दिल खोल कर आप के सामने रख दे. यह बात आजमा कर देखिए, क्या फर्क पड़ता है. सब क्लीयर तो हो जाएगा.

मैं अजीब दुविधा में हूं. मेरी उम्र 26 साल की है. लौकडाउन से पहले इसी साल दीदी की शादी में अपने जीजू के दोस्त को अपना दिल दे बैठी हूं. शादी के दौरान हम दोनों के बीच खूब हंसीमजाक हुआ. अब मुझे रातदिन उस का ख्याल आता रहता है. लेकिन मुझे यह नहीं पता कि वह भी मेरे बारे में वही महसूस कर रहा है जो मैं कर रही हूं. क्या मुझे घरवालों से बात करनी चाहिए क्योंकि वे अब मेरे विवाह के लिए लड़का ढूंढ़ने लगे हैं.

इस में मुश्किल क्या है. आप सब से पहले अपनी दीदी से बात कीजिए. वह आप के जीजू से बात कर के पहले उस लड़के के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर ले. वह आप के जीजू का दोस्त है तो उन्हें पता ही होगा कि कहीं उस का पहले से कोई अफेयर तो नहीं या शादी के बारे में उस का क्या ख्याल है और आप के बारे में क्या विचार हैं. दो बातें हो सकती हैं– पहली, कि वह लड़का भी आप को पसंद करने लगा हो या दूसरी, कि उस का हंसीमजाक, आप से बातें करना दीदी की शादी तक ही सीमित हो.

पहले दीदीजीजू को उस लड़के से बात करने दीजिए. सब ठीक रहा तो वे ही घरवालों से बात कर लेंगे. अगर उस लड़के की तरफ से आप के लिए उन्हें कोई सिग्नल नहीं मिला तो आप भी उस लड़के को भूलने की कोशिश करें, समझदारी इसी में है. ●

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रैस भवन, **ई–8**, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली–110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

“अभी की डिमांड ऐक्शन और रिऐलिटी है” -टीना आहूजा

अभिनय की दुनिया में एक और स्टारपुत्री का सफलता के साथ पदार्पण हो गया. नामचीन कलाकार गोविंदा की क्रेजी बेटी व नई अदाकारा टीना आहूजा का मानना है कि ऐक्शन, हौरर व अन्य के दौर आजा सकते हैं लेकिन मनोरंजन सदाबहार है, इसे हमेशा पसंद किया जाता रहेगा.

बातचीत • सोमा घोष

पंजाबी फिल्म ‘सैकंडहैंड हसबैंड’ से अभिनय कैरियर की शुरुआत करने वाली अभिनेत्री टीना आहूजा मुंबई से हैं. वे नामचीन कलाकार गोविंदा की बेटी हैं. टीना ने फैशन डिजाइनिंग में स्नातक किया है और अभिनय की बारीकियों को सीखने के लिए फिल्म इंस्टिट्यूट औफ लंदन से कोर्स किया है. उन के अभिनय से सजी एक शौर्ट फिल्म ‘ड्राइविंग मी क्रेजी’ जी5 पर रिलीज हो चुकी है. इस फिल्म में उन के अभिनय को सराहा जा रहा है. टीना अपनी इस कामयाबी से बहुत खुश हैं. उन से बातचीत करना मजेदार रहा. यहां पेश हैं उन से हुई बातचीत के अंश :

‘ड्राइविंग मी क्रेजी’ की सफलता से आप कैसा महसूस कर रही हैं?

फिल्म ‘ड्राइविंग मी क्रेजी’ में मेरी भूमिका एक यंग गर्ल की है, जो संपन्न परिवार से है

और एक ऐप में खुद को एनरोल कर समय बिताती है. ऐप के जरिए वह किसी से मिलती है, फिर क्याक्या होता है, इस बारे में कहानी कही गई है. मुझे बहुत अच्छा लगा कि मेरा काम दर्शकों को पसंद आ रहा है. किसी फिल्म के लिए जब आप मेहनत करते हैं और वह फिल्म अच्छी बनती है, तो महसूस होता है कि मेहनत साकार हो गई है.

यह फिल्म औनलाइन डेटिंग पर बनी है, आप इसे पार्टनर की खोज के लिए कितना अच्छा मानती हैं और क्या आप ने कभी औनलाइन डेटिंग की है?

मैं ने डेटिंग के लिए कभी ऐप का प्रयोग नहीं किया है. मैं ने देखा है कि ऐसी बहुत सी ऐप्स हैं जिन में यूथ प्यार की खोज में खुद को एनरोल करते हैं और शादी तक पहुंच जाते हैं. कुछ यूथ का अनुभव अच्छा रहता है, तो कुछ का खराब. मुझे लगता है कि आप कितने लकी हैं, उस पर यह आधारित है, जिस से आप को एक अच्छा जीवनसाथी मिल जाए.

क्या अपनी भूमिका से आप खुद को रिलेट कर पाती हैं?

कुछ चीजों से मैं खुद को रिलेट कर सकती हूं, कुछ से नहीं, क्योंकि मैं ने डेटिंग ऐप कभी यूज नहीं किया है और न ही इस ऐप को यूज करने का मुझ में कौन्फिडैंस है. किसी भी अनजान व्यक्ति से मिल कर बातचीत करना मुझ से नहीं हो सकता.

अपने पिता गोविंदा की कौन सी सीख आप अपने जीवन में उतारती हैं और वे कैसे पिता हैं?

वे एक स्वीट और सपोर्टिव पिता हैं. उन्होंने हमेशा सिखाया है कि जो भी काम करो, मेहनत, ईमानदारी, लगन और दिल से करो. इस से काम करने में भी मजा आता है. मुझे उन की यह बात बहुत अच्छी लगी और इसे मैं ने अपने जीवन की सीख माना है.

किसी भी फिल्म को करने से पहले क्या आप पिता से चर्चा करती हैं?

चर्चा मैं अवश्य करती हूं. वे मेरी राय जानने की कोशिश करते हैं. अगर मुझे अच्छा लगता है, तो ही मैं उसे करती हूं, क्योंकि ऐसा करने पर फिल्म सफल हो या न हो, कुछ फर्क नहीं पड़ता क्योंकि यह आप की चौइस है.

क्या कभी गोविंदा के अभिनय हुनर से आप की तुलना की गई?

ऐसा सामना मुझे कभी नहीं करना पड़ा, क्योंकि दर्शकों ने मेरे काम की तुलना पिता के काम से कभी नहीं की. सब ने मेरे काम की तारीफें की हैं. इस के अलावा, मैं अपने पिता के साथ उन का काम करती हूं. अगर कोई कुछ कहे, तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता.

क्या बचपन से आप ने अभिनय के बारे में सोचा है?

मुझे पहले फैशन इंडस्ट्री में जाना था, लेकिन पिता को फैशन का क्षेत्र पसंद नहीं था. उन्हें मेरा डिजाइनर बनना पसंद नहीं था. उसे छोड़ कर मैं अभिनय की तरफ मुड़ी और इस का प्रशिक्षण लेने लंदन गई.

आप एक अभिनेत्री के अलावा फैशन की जानकारी भी रखती हैं. ऐसे में फिल्मों में आप जो कपड़े पहनती हैं, क्या उन की डिजाइनिंग आप ही करती हैं?

फिल्म में पहनने वाले मेरे कपड़ों की डिजाइनिंग मैं नहीं करती, पर पिता के फिल्मों और स्पैशल अपीयरैंसेस की स्टाइलिंग मैं करती हूं. एक विज्ञापन में भी मैं ने स्टाइलिंग की है, जिसे लोगों ने काफी सराहा है.

आप का ड्रीम क्या है?

मेरा ड्रीम खुद को आगे अच्छी ऐक्टिंग के लिए तैयार करना है.

पिता की कौनकौन सी फिल्में आप को बहुत अधिक पसंद हैं?

मुझे पिता की सभी फिल्में पसंद हैं. उन्होंने हर तरह की फिल्में कीं और सफल रहे. उन की फिल्में 'स्वर्ग', 'दूल्हे राजा,' 'भागमभाग,' 'किलबिल' आदि सभी अच्छी लगती हैं. मैं अपने पिता की सब से बड़ी फैन हूं. मेरे पिता एक बढ़िया डांसर भी रहे हैं. मैं ने भी डांस सीखा है, पर अभी किसी को पता नहीं है. मैं किसी फिल्म या म्यूजिक वीडियो के द्वारा अपने इस हुनर को दर्शकों तक लाना चाहती हूं. मेरे घरवाले कहते हैं कि मैं अपने पिता की तरह डांस करती हूं.

फिल्मों की कहानियों में आजकल मनोरंजन से अधिक रिऐलिटी है, इस बारे में आप की सोच क्या है?

मेरे हिसाब से हर चीज का एक वक्त होता है और हर चीज की एक मांग होती है. अभी की डिमांड ऐक्शन और रिऐलिटी है, लेकिन मनोरंजन हर युग में सब को पसंद आता है. वह खत्म नहीं होना चाहिए, क्योंकि आज लोगों में तनाव और डिप्रैशन बहुत है. मनोरंजन ही उन्हें अच्छा महसूस करवाता है. कलाकार को समय के हिसाब से चलना जरूरी है, लेकिन सब में खुशियां बांटने की कोशिश हमेशा करनी चाहिए. मुझे मनोरंजक फिल्में, खासकर, रोमांटिक और रोमांटिक कौमेडी फिल्में ज्यादा पसंद हैं.

अभिनय के अलावा क्या करती हैं?

मैं ऐक्टिंग के अलावा पिता के साथ काम करती हूं. उन का व्यवसाय भी संभालती हूं. इस के अलावा, मेरा खुद का फूड का एक ब्रैंड हैल्दी क्रश है, जिस के लिए भी काम करती हूं. अगर मौका मिला तो मैं फिल्म प्रोड्यूस करना पसंद करूंगी. मुझे फैशन और स्टाइल भी बहुत पसंद हैं.

क्या किसी डिजाइनर को आप फौलो करती हैं?

मुझे कई डिजाइनर्स के काम पसंद हैं. मुझे डिजाइनर सब्यसाची, अकी नरूला, मनीष अरोड़ा, ऋतु कुमार, अनीता डोंगरे आदि सभी के स्टाइलसैंस बहुत अच्छे लगते हैं.

पिता की किस फिल्म का आप रीमेक देखना चाहती हैं?

मैं पिता की किसी भी फिल्म का रीमेक नहीं देखना चाहती, क्योंकि जो ओरिजिनल फिल्म है, उसे ही दर्शकों ने पसंद किया है. उस से छेड़खानी मुझे अच्छी नहीं लगती. ●

सांझा दुख

कुछ रिश्ते खून के नहीं होते, वे आत्मीयता से जुड़े होते हैं. ऐसे रिश्ते कई बार खून के रिश्तों से भी बढ़ कर हो जाते हैं. ऐसा ही भाईबहन का रिश्ता था बिट्टू और शरद का. लेकिन एक दिन ऐसी खबर आई कि...

कहानी • कात्यायनी दीप

कोरोनाकाल चल रहा है. हम सब अपनेअपने घरों में लौकडाउन का पालन करते हुए भी डरे हुए हैं. पता नहीं कब किस को क्या हो जाए. एक ही तरह की दिनचर्या निभाते हुए मन की उलझन और बढ़ती ही जा रही है. कब, कहां, और कैसे? हर मौत पर दिमाग में ये सवाल कौंध रहे हैं.

अरे, अभी उन से 10 दिनों पहले ही तो बात हुई थी और आज... विवशता, हताशा और पीड़ा का मिलाजुला रूप हम सब पर भारी है. कैसी महामारी है कि हम अपनों तक पहुंच नहीं पा रहे हैं जब उन को हमारी सब से ज्यादा जरूरत है.

स्पर्श, प्यार के दो बोल और सेवा के लिए तड़पते हमारे अपने, अकेले में किस से गुहार कर रहे होंगे? तकलीफ को सांझा कर मन शांत हो जाता है. हम ऐसी डरावनी बीमारी के खौफ से घिरे हैं कि उस के पास हम बैठ भी नहीं सकते जिस से हमारा जीवनभर का नाता है.

दूर से अपनों की परेशानी देख मन तड़प जाता है और एक टीस कि काश.. ऐसा नहीं होता. हमारे अपने बिछुड़ रहे हैं और ऐसी बिछुड़न, कि हम फिर से मिलने की आस भी नहीं संजो पा रहे हैं.

मेरे दिल में यही सब बातें चल रही थीं कि मां आ कर मेरे पास खड़ी हो गईं. नम आंखें बहुतकुछ कह रही थीं. मुझे सीने से लगाते हुए बोलीं, ''शरद नहीं रहा, बिट्टू. कोरोना के काल ने उस को अपनी चपेट में ले लिया.''

मैं स्तब्ध मां का चेहरा देखती रही. खामोशी के बीच हमारे अंदर दिल चीर डालने वाला दुख सांझा हो रहा था. आंखें उमड़ रही थीं.

मां के जाते ही औंधेमुंह बिस्तर पर कटे पेड़ की तरह ढह गई मैं. आंसू हमारे सुखदुख की साथी तकिया को भिगोते रहे.

शरद भैया से मेरा खून का रिश्ता नहीं था, पर खून के रिश्तों पर हमेशा भारी रहा है यह आत्मिक रिश्ता. बचपन से ही वे हमारे लिए रोलमौडल रहे. भैया के कंधे पर बैठ हम कहांकहां की सैर कर आते थे. मैं छोटीछोटी समस्याओं पर उन के पास पहुंच, रोते हुए और अपनी फ्रौक से आंसू पोंछते हुए उन की गोद में सिर रख कर शिकायतों का पुलिंदा खोल दिया करती थी. कभी मां सा, कभी भाई सा, तो कभी सहेलियों सा बरताव करते.

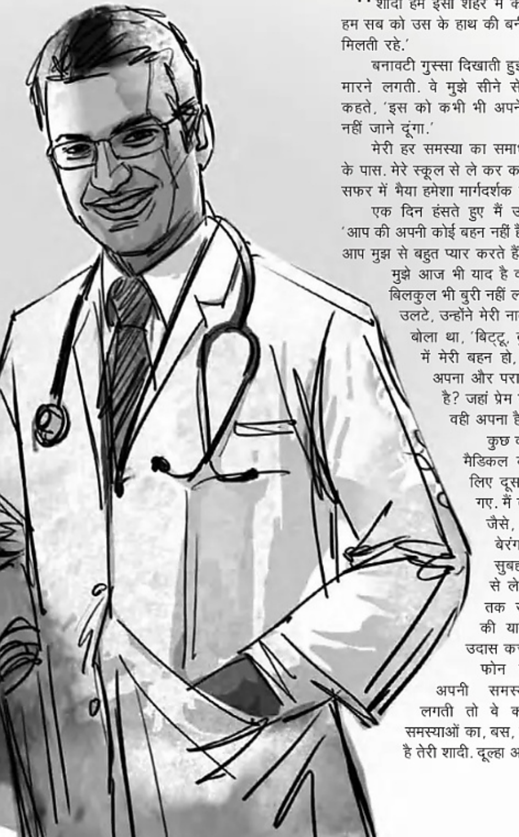

वे हंसते हुऐ कहते, 'थोड़ा रूक जा बिट्टू. जब मैं डाक्टर बन जाऊंगा, तब इन सब को इंजैक्शन लगा कर दर्द का एहसास करवाऊंगा.'

खूब हंसती मैं, और तरहतरह की ऐक्टिंग कर के बताती कि दर्द के कारण वे सब कैसे बिलबिलाएंगे. थोड़ी बड़ी हुई. उन के आने पर चाय मैं ही बनाती थी, क्योंकि उन को मेरे हाथ की बनी चाय पसंद थी.

चाय पीते हुए वे कहते, 'चाची, बिट्टू की शादी हम इसी शहर में कराएंगे, ताकि हम सब को उस के हाथ की बनी चाय हमेशा मिलती रहे.'

बनावटी गुस्सा दिखाती हुई मैं भैया को मारने लगती. वे मुझे सीने से लगाते हुए कहते, 'इस को कभी भी अपनेआप से दूर नहीं जाने दूंगा.'

मेरी हर समस्या का समाधान था भैया के पास. मेरे स्कूल से ले कर कालेज तक के सफर में भैया हमेशा मार्गदर्शक रहे मेरे.

एक दिन हंसते हुए मैं उन से बोली, 'आप की अपनी कोई बहन नहीं है न, इसीलिए आप मुझ से बहुत प्यार करते हैं.'

मुझे आज भी याद है वह दिन. उन्हें बिलकुल भी बुरी नहीं लगी मेरी बात. उलटे, उन्होंने मेरी नाक पकड़ कर बोला था, 'बिट्टू, तुम हर जन्म में मेरी बहन हो, और रहोगी. अपना और पराया क्या होता है? जहां प्रेम की लौ जगी, वही अपना है.'

कुछ वर्षों बाद भैया मैडिकल की पढ़ाई के लिए दूसरे शहर चले गए. मैं बहुत रोई थी. जैसे, मेरी दुनिया बेरंग हो गई हो. सुबह के उजाले से ले कर देररात तक उन के साथ की यादें मुझे और उदास कर जातीं.

फोन पर जब मैं अपनी समस्याएं बताने लगती तो वे कहते, 'इतनी समस्याओं का, बस, एक समाधान है तेरी शादी. दूल्हा आ जाएगा तेरी जिंदगी में, तब जा कर इस निरीह भाई को राहत मिलेगी.'

गुस्से से कहती मैं, 'अच्छा, तो आप मुझ से छुटकारा चाहते हैं. इतनी जल्दी नहीं छोड़ने वाली मैं आप को. और वैसे भी, पहले आप की शादी होगी, तब मेरी.'

भैया के डाक्टर बनते ही उन की शादी हो गई. खूब नाची थी मैं. खुशी मेरे दामन में नहीं समा रही थी.

बाद के दिनों में वे मुझे चिढ़ाते, 'चाची, मेरी शादी में नागिन डांस के लिए तो इस को पद्मश्री अवार्ड मिलना चाहिए था.'

वक्त के साथ हम सब बदलते गए. मेरी भी शादी हो गई. जिम्मेदारियों ने पैरों में बेड़ियां डाल दीं. मां की आवाज सुन कर मैं आंसू पोंछते हुए बैठ गई.

अपनी गोद में मेरा सिर रख कर प्यार से हाथ फेरते हुए मां बोलीं, ''बिट्टू, तुम्हारे अंदर एक जीव पल रहा है, वह भी तो तुम्हारे खाने का इंतजार कर रहा है.''

पेट पर हाथ रख कर सोचने लगी मैं, 'काश, भैया मेरी कोख में आ जाते. मैं मां बन कर उन का खूब खयाल रखती और अपने से कभी भी दूर न जाने देती.'

बहुत प्रयास करने के बाद मैं ने खुद को संयत कर भाभी को कौल किया. उन के रोने की आवाज मेरे कानों में पिघले सीसे की तरह आहत कर रही थी.

''शरद बगैर मुझ से कुछ बोले चले गए, बिट्टू. मैं अब किस को प्यार करूंगी? किस के सहारे रहूंगी? चारों तरफ अंधेरा दिख रहा है? मेरे तो सिर का ताज ही बिखर गया, बिट्टू.''

''समय के सामने हम सब विवश हैं, भाभी. धैर्य रखिए. अमन का खयाल रखिए. उस पर इन दुखों का असर नहीं होना चाहिए. टूट जाएगा तो बिखरे को समेटना बहुत मुश्किल होगा, भाभी.''

तभी अमन की आवाज ने मेरी बची हुई हिम्मत को भी तोड़ कर रख दिया, ''मैं पापा के साथ खेलना चाहता हूं. पापा से मिले हम को एक महीना हो गया है बूआ. सब के पापा हैं, तो मेरे पापा हमें छोड़ कर क्यों चले गए? बताओ बूआ?''

सांत्वना के शब्द यहीं पर खत्म हो गए थे मेरे. मैं शून्य में निहारते हुए बोली, ''इस का जवाब किसी के पास भी नहीं होगा, अमन बेटा.''

मां के हाथों में खाने की थाली दिखी, तो आंखों ने सवाल किया और जबान पूछ बैठी, ''मां, पीर पराई है या अपनी है?''

''वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे,'' गाती हुई मां वहां से चली गईं. ●

Styl

रौकिंग स्टार अंजलि ततारी

अंजलि सीरियल 'मेरे डैड की दुलहन' में निया शर्मा का किरदार निभा कर सब की लाड़ली बेटी बन गई हैं.

मोहक चेहरा, लुभावनी हंसी और सिंपल लुक्स वाली अंजलि ने अपनी 23 साल की उम्र में अच्छीखासी शोहरत बटोर ली है. इंस्टाग्राम पर उन के 1 लाख 53 हजार फौलोअर हैं. जो भी फोटो वीडियो शेयर करती हैं उस पर हजारों लाइक्स आते हैं.

अंजलि उत्तराखंड में जन्मी और इन की पढ़ाई उत्तराखंड और मुंबई दोनों जगह हुई. अपने कैरियर की शुरुआत उन्होंने एक फैशन ब्लौगर के रूप में की. बाद में मुथूट गोल्ड, ओप्पो मोबाइल्स और ईवा डिओडोरैंट्स के टीवी विज्ञापनों में काम किया. जानेमाने रैपर एमिअवे बंटाई के साथ एक संगीत वीडियो 'जल्लाद' किया था. लेकिन 'मेरे डैड की दुलहन' से इन्हें खूब शोहरत मिली है.

नृत्य और नई जगहों को एक्सप्लोर करना पसंद है. फास्ट फूड की क्रेजी हैं और उत्तर भारतीय व्यंजनों को भी पसंद करती हैं. ●

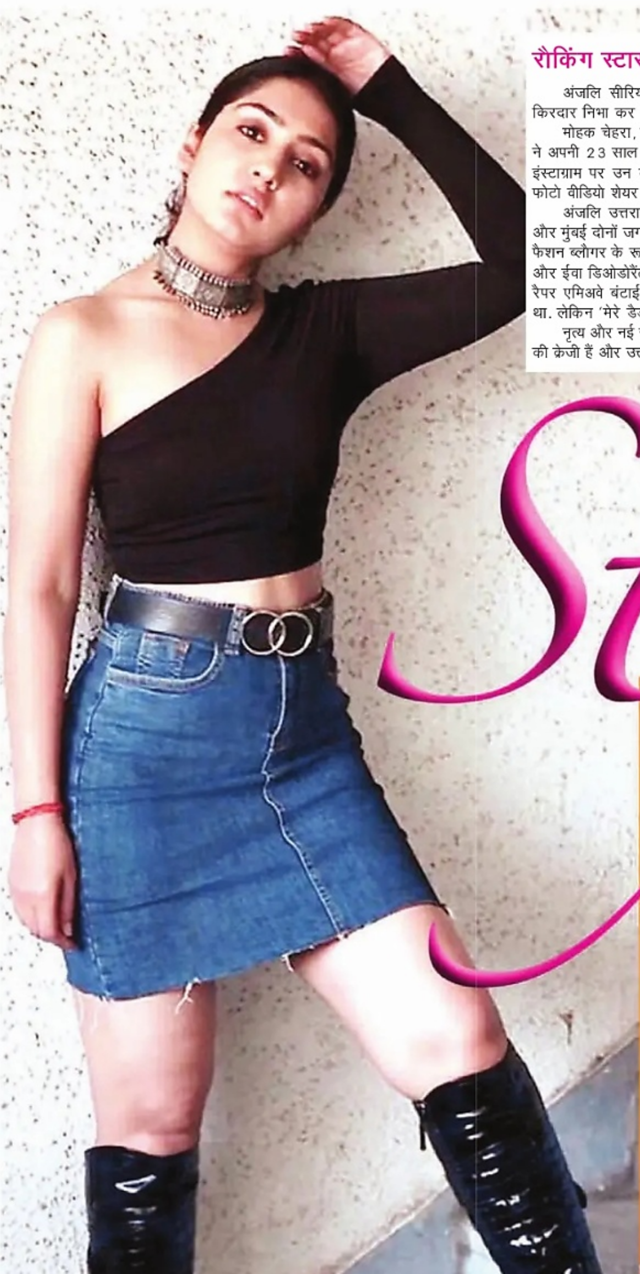

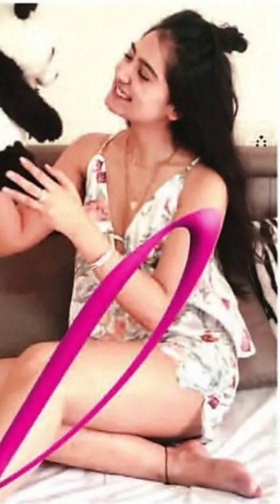

le OF THE MONTH

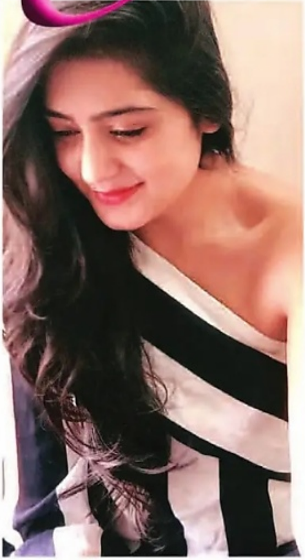

RITU PHOGAT

"मेरा संघर्ष मुझ से बेहतर कोई नहीं जान सकता"

रितु फोगाट

मिक्स मार्शल आर्टिस्ट

मन में जज्बा और फोकस अपने गोल पर हो तो सफलता हासिल हो कर रहती है और यह साबित कर दिखाया है मिक्स मार्शल आर्टिस्ट रितु फोगाट ने. आइए इन की जर्नी के बारे में और जानें.

राष्ट्रमंडल कुश्ती चैंपियनशिप की स्वर्ण पदक विजेता व भारत की महिला पहलवान रितु फोगाट भारतीय खेल में प्रसिद्ध फोगाट परिवार से आती हैं. फोगाट परिवार की वे पहली सदस्य हैं जो अखाड़े में ताल ठोंकने के बाद अब मिक्स मार्शल आर्ट्स यानी एमएमए में उतरी हैं.

अगर आप में आत्मविश्वास, मेहनत, लगन, हिम्मत आदि हो तो आप को मंजिल तक पहुंचने से कोई रोक नहीं सकता, ऐसी सोच रखती हैं रितु. मिक्स मार्शल आर्टिस्ट रितु फोगाट, जिन्हें इंडियन टाईग्रेस के नाम से भी जाना जाता है, ने 30 अक्तूबर को सिंगापुर में आयोजित 'वन चैंपियनशिप' में जीत हासिल की है और एशिया की पहली महिला मिक्स मार्शल आर्टिस्ट बन चुकी हैं.

पूर्व पहलवान महावीर सिंह फोगाट की तीसरी पुत्री रितु ने 8 वर्ष की उम्र से अपने पिता से कुश्ती की ट्रेनिंग लेनी शुरू कर दी थी. उन्होंने कुश्ती के कैरियर पर ध्यान देने के लिए 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी. कुश्ती में सफलता हासिल करने के बाद वे मार्शल आर्ट की तरफ मुड़ीं और कई चैंपियनशिप जीतीं.

26 साल की रितु अपनी इस जीत से बहुत खुश हैं. यह जीत उन के मार्शल आर्ट कैरियर की सब से महत्त्वपूर्ण जीत है.

इस जीत से आप क्या महसूस कर रही हैं?

कोरोना महामारी के दौरान मैं ने जितनी मेहनत की है, उस का फल मुझे मिला. मैं भारत की ओर से मार्शल आर्ट को ऊंचाइयों तक ले जाना चाहती हूं. कोरोना में जब सबकुछ बंद था, मैं प्रैक्टिस करती रही, क्योंकि मेरे कोच मुझे वीडियो की सहायता से ट्रेनिंग देते थे. मैं परिवार, दोस्तों और सभी देशवासियों की आभारी हूं जिन्होंने मुझे यहां तक पहुंचने में मेरे मनोबल को ऊंचा किया. मेरी कोच भी धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने मुझे इस मुश्किल समय में भी हर दिन ट्रेनिंग दी. अभी मैं ग्रैंड प्रिक्स की तैयारी कर रही हूं ताकि मैं वर्ल्ड चैंपियनशिप को जीत सकूं.

फाइट करते समय आप अपने मनोबल को ऊंचा कैसे रखती हैं?

इस के लिए अधिक मात्रा में अभ्यास, आत्मविश्वास और दर्शकों की आवाज मनोबल को बढ़ाती है. इस के अलावा, एक एथलीट को मानसिक रूप से मजबूत होने की जरूरत होती है, जिस के लिए मैं व्यायाम करती हूं. जब मैं फाइट के लिए जाती हूं, तो वहां सिर्फ प्रतिद्वंद्वी ही मुझे सामने दिखते हैं और जीत के लिए खुद की सौ प्रतिशत शक्ति वहां लगा देती हूं.

खुद को मजबूत रखने के लिए आप की डाइट क्या होती है?

जब मैं अपने घर में रहती हूं तो घर में सारी चीजें देसी मिल जाती हैं, इस से प्रोटीन और विटामिन की कमी नहीं होती, लेकिन बाहर जाने से प्रोटीन की कमी हो जाती है, तब विटामिन की गोली लेती हूं. कोच के हिसाब से डाइट लेनी पड़ती है.

आप का नाम इंडियन टाईग्रेस कैसे पड़ा?

जब मैं कुश्ती करती थी तो सभी मुझे कहते थे कि मैं शेरनी की तरह अपने प्रतिद्वंद्वी पर झपटती हूं और उसे हिलने नहीं देती. इस से प्रेरित हो कर मैं ने अपना नाम इंडियन टाईग्रेस रखा है.

कुश्ती से मिक्स मार्शल आर्ट में आने पर आप को किस तरह का लाभ मिला?

बहुत अधिक लाभ मिला है. इस से जमीन पर प्रतिद्वंद्वी को होल्ड करना आसान हुआ है. शुरूशुरू में थोड़ी मुश्किलें मिक्स मार्शल आर्ट सीखने में आई थीं, पर अब सही हो चुका है.

ग्रैंड प्रिक्स टाइटिल से आप कितनी दूर हैं?

अभी तो मुझे वन चैंपियनशिप का यह खिताब मिला है. आगे मैं और अधिक तैयारियां कर रही हूं, क्योंकि ग्रैंड प्रिक्स में केवल एक लड़की इंडिया से चुनी जाएगी और मैं वह लड़की होना चाहती हूं. देश के लिए वर्ल्ड चैंपियनशिप की बैल्ट ले कर आऊंगी. मैं हमेशा प्रतिद्वंद्वी की कमजोरी और मजबूत पौइंट को समझने की कोशिश कर उसी हिसाब से खुद को तैयार करती हूं. इस के अलावा मैं प्रसिद्ध मिक्स मार्शल आर्टिस्ट खबीब नुरमागोमेदोव की वीडियोज बहुत देखती हूं और वैसा स्टाइल अपनाने की कोशिश करती रहती हूं.

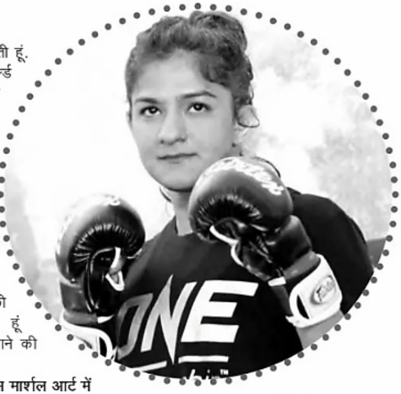

हमारे देश में मिक्स मार्शल आर्ट में बहुत कम लड़कियां है, वजह क्या है? आप इसे और अधिक पौपुलर करने के लिए क्या करना चाहती हैं?

पहले इस खेल के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी थी, वे समझते थे कि यह मारपीट का खेल है, लेकिन अब मीडिया की कवरेज की वजह से लोग इस में रुचि लेने लगे हैं. इंडिया में अब प्रतिभा की कमी नहीं है, पर उस को निखारने और प्लेटफौर्म देने की जरूरत है. इसलिए मैं वर्ल्ड चैंपियनशिप जीत कर सब का ध्यान इस ओर लाना चाहती हूं ताकि मिक्स मार्शल आर्ट को भी दूसरे स्पोर्ट्स की तरह जगह मिले. इस के अलावा, मैं सभी लड़कियों से यह कहना चाहती हूं कि खेल चाहे कोई भी हो, अनुशासन और मेहनत के साथ अपने टारगेट को पाने की कोशिश करनी चाहिए.

फाइट के समय मानसिक स्थिति कैसी होनी चाहिए?

एक खिलाड़ी को सब से अधिक जरूरत मानसिक रूप से मजबूत रहने की होती है. मेहनत करने के बाद भी अगर आप की मानसिक स्थिति मजबूत नहीं है तो जीत हासिल करने में मुश्किल होती है. इस के लिए मैं व्यायाम करती हूं. हालांकि, मैं मानसिक रूप से बहुत स्ट्रौंग हूं.

आप के यहां तक पहुंचने में पिता का सहयोग कितना रहा. पूरे परिवार ने कैसे सहयोग दिया?

मेरे पिता ने बहुत सहयोग दिया है. शुरू में जब मैं कुश्ती से मिक्स मार्शल आर्ट की तरफ मुड़ी, तो पहले बहनों से बात की, उन्होंने पिता से कहा. पिता ने एक बार भी मना नहीं किया. उन्होंने कहा कि अगर मेरी रुचि मिक्स मार्शल आर्ट में जाने की है, तो मैं जा सकती हूं, लेकिन इस बात का ध्यान रखूं कि देश का झंडा हमेशा ऊंचा रहे. मैं वही कर रही हूं. मेरे यहां तक पहुंचने में मेरे पूरे परिवार ने बहुत सहयोग दिया है. उन के बिना यहां तक पहुंचना संभव नहीं था. जब भी मैं ने परिवार को मिस किया, बड़ी बहन की बेटी के साथ बात की.

परिवार से दूर रह कर जीत हासिल करना कितना मुश्किल होता है?

दूसरे देश में जा कर जीत हासिल करना बहुत मुश्किल होता है. कई बार ट्रेनिंग के बाद इतनी थकान हो जाती है कि खुद खाना बनाना संभव नहीं होता. ऐसे में बाहर से खाना ला कर खाना पड़ता है. परिवार के साथ होने पर खानेपीने की चिंता नहीं रहती और ट्रेनिंग अच्छी तरह से हो जाती है.

खाली समय में क्या करना पसंद करती हैं?

रविवार को मेरी ट्रेनिंग नहीं होती. तब मैं घर की साफसफाई करती हूं. कुछ अलग डिशें, जो मैं ट्रेनिंग के दौरान नहीं खा सकती, उन्हें बनाती हूं, जिन में हलवा और खीर खास हैं.

अगर आप की बायोपिक बनती है, तो उस में बौलीवुड की किस अभिनेत्री को देखना पसंद करेंगी?

मैं कामयाबी के लिए बहुत मेहनत कर रही हूं. मेरी जर्नी और संघर्ष को मुझ से अधिक बेहतर कोई नहीं जान सकता. इसलिए मैं ही उस बायोपिक को बनाने की इच्छा रखती हूं.

महिलाओं को क्या मैसेज देना चाहती हैं?

आप जो भी सोचें वह कर सकती हैं. खुद पर विश्वास रखें और आगे बढ़ती जाएं. इस के अलावा परिवार की भी पूरी जिम्मेदारी होती है कि वे अपनी लड़कियों को उन की मनचाही दिशा में आगे बढ़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें. –सोमा घोष ●

लात्वियन फिल्म 'मन्नी' में सोनल सहगल का रोमांस

लात्वियाई निर्देशक डेस प्यूस निर्देशित फिल्म 'मन्नी' में रूसी अभिनेता जौर्जिस डायकोनोव्स और लात्वियाई अभिनेता डार्टा डेनविका के साथ सोनल सहगल मुख्य भूमिका में हैं. इस फिल्म में रूसी, ब्रिटिश, लात्वियाई, फ्रैंच और भारतीय कलाकारों ने अभिनय किया है. यह लात्वियाई फिल्मकार डैस प्यूस द्वारा निर्देशित और माराना प्रोडक्शन (लात्विया) द्वारा निर्मित है. फिल्म के संगीतकार 'कैलासा' फेम नरेश कामथ हैं, जो कि निजी जिंदगी में सोनल सहगल के पति भी हैं. सोनल सेहगल किसी परिचय की मुहताज नहीं हैं. उन्होंने भले ही फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अब पहला कदम रखा हो, मगर वे बेहतरीन लेखिक व अभिनेत्री हैं.

इस बात को वे कई बार साबित भी कर चुकी हैं. उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत कौपीराइटर के रूप में की थी. उन्होंने फिल्म 'लिहाफ' की पटकथा का सहलेखन किया था. निर्देशक प्रदीप सरकार के साथ बतौर सहायक निर्देशक काम किया. फिर फेयरनैस क्रीमों से प्रेरित नस्लवाद को ले कर एक लघु फिल्म 'डांसिंग इन द डार्क' का निर्देशन किया. कई टीवी सीरियल और फिल्मों में अभिनय किया. एक किताब 'द डे' लिखी. अब वे इंडो–लात्वियाई फिल्म 'मन्नी' के साथ निर्मात्री बन गई हैं, जिस में वे एक अभिनेत्री के रूप में भी दिखाई दीं.

साइंस फिक्शन रोमाचंक फिल्म 'मन्नी' एक भारतीय महिला की यात्रा का अनुसरण करती है, जो एक लेखक के रिट्रीट के लिए कैथरीनिस के रूप में काम करने के लिए एक लेखक की वापसी के वास्ते लात्विया की यात्रा करती है. इस यात्रा के दौरान उस का जीवन 3 प्रेम हितों के माध्यम से प्रकट होता है– एक जो वास्तविक है, दूसरा जिस की कल्पना उस ने की है और तीसरा आभासी पुरुष, इस कहानी में रोमांच जबरदस्त है क्योंकि वह उन में से एक के घर में फंस जाती है और एक ही समय में अपने सच्चे आत्म का सामना करने और बंधक स्थिति से बचने के लिए साहस खोजने की कोशिश करती है.

1946 में स्थापित 'इंटरनैशनल डेल सिनेमा डि सालेर्नो' कान्स फिल्म फैस्टिवल जितना ही पुराना है और इस ने औस्कर जीतने वाली कई फिल्मों को अपने सिनेमाघरों में डैब्यू किया है. यह महोत्सव मैट डेमन, सुसान सारंडन, मोनिका बेलुची सहित कई हौलीवुड और यूरोपीय फिल्म सितारों के लिए एक वार्षिक कार्यक्रम रहा है.

लघु फिल्म 'टिंडे' न्यूजर्सी इंटरनैशनल फिल्म फैस्टिवल में पुरस्कृत

फिल्म निर्देशक सीमा देसाई अपनी पहली लघु फिल्म 'टिंडे' के लिए लगातार कई पुरस्कार हासिल करती जा रही हैं. अब हाल ही में 'तीसरे न्यू जर्सी इंडियन एंड इंटरनैशनल फिल्म फैस्टिवल' में सीमा देसाई की लघु फिल्म 'टिंडे' को सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार मिला, वहीं इस में अभिनय करने वाली अदाकारा अश्विनी कलसेकर को 'सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री' के पुरस्कार से नवाजा गया.

इस पर अश्विनी कलसेकर कहती हैं, ''मैं अतिउत्साहित और विनम्र हूं कि तीसरे न्यू जर्सी इंडियन एंड इंटरनैशनल फिल्म फैस्टिवल में ह्यूमरस फिल्म 'टिंडे' के लिए मुझे पुरस्कृत किया गया. मेरी जिंदगी में इस खुशी को भरने के लिए मैं सभी का धन्यवाद अदा करती हूं. मैं निर्देशक सीमा देसाई की भी आभारी हूं, जिन्होंने मुझे इस फिल्म में बहुत ही अलग अंदाज में पेश किया. हर अवार्ड कलाकार का हौसला बढ़ाने के साथ ही उसे अपनी जिम्मेदारी बढ़ने का भी एहसास कराता है. मैं पूरी जिंदगी दर्शकों का मनोरंजन करने का वादा करती हूं.''

वहीं, अपनी फिल्म को पुरस्कृत किए जाने पर निर्देशक सीमा देसाई कहती हैं, ''हमें हमारी लघु फिल्म 'टिंडे' के पुरस्कृत किए जाने पर बहुत खुशी हुई है. यह फिल्म मेरे दिल के काफी करीब है.''

ह्यूमरस लघु फिल्म 'टिंडे' में अदा शर्मा, राजेश शर्मा व अश्विनी कलसेकर ने अभिनय किया है. फिल्म का निर्माण सेजल कौशिक के प्रोडक्शन हाउस बीटस प्रोडक्शंस और पराग देसाई के प्रोडक्शन हाउस 'मुंबई टाकीज' ने मिल कर किया है.

आलिया भट्ट ने लौंच किया ब्रैंड 'एड–ए–मम्मा'

इन दिनों बौलीवुड की लगभग हर अभिनेत्री धीरेधीरे बिजनैस वुमन बनती जा रही है. कई अभिनेत्रियों ने फैशन या ब्यूटी के क्षेत्र में अपने ब्रैंड के 'लेबल' बाजार में उतारे हैं. ऐसे में भला मशहूर अभिनेत्री आलिया भट्ट कैसे पीछे रह जातीं. लौकडाउन के दौरान अक्तूबर माह में आलिया भट्ट ने बच्चों के लिए 'एड–ए–मम्मा' नामक अपना खुद का जागरूक परिधान ब्रैंड लौंच किया. आलिया भट्ट का स्ववित्त पोषित स्टार्टअप यह ब्रैंड 2 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को पसंद आने वाले परिधान बाजार में ले कर आया है. 'एड–ए–मम्मा' पूरी तरह से घरेलू ब्रैंड है, जो स्थानीय 'लोकाचार के लिए' वोकल के साथ गूंजता है.

आलिया भट्ट के 'एड–ए–मम्मा' ब्रैंड के परिधान पर्यावरण के अनुकूल हैं, जो प्लास्टिकमुक्त बटन और ट्रिम्स के साथ प्राकृतिक तंतुओं से बने हैं. ब्रैंड एक कदम आगे जा कर बालों को बांधने और छोटे पोटलिस बनाने के लिए बचे हुए कपड़े का उपयोग करता है. वर्तमान में 'फस्ट डौट कौम' पर उपलब्ध है. इस ब्रैंड के लौंच होने के 6 सप्ताह के अंदर ही पहले सीजन के संग्रह के लगभग 70 प्रतिशत परिधान बिक चुके हैं.

आलिया भट्ट कहती हैं, ''मैं ने बच्चों के बीच प्रकृति के प्रति प्रेम को बढ़ाने के लिए 'एड–ए–मम्मा' की स्थापना की. हमारी कंपनी भारतीय बच्चों के लिए विश्वस्तरीय उत्पाद बनाएगी.

''एड–ए–मम्मा कई स्तरों पर बच्चों को कहानी सुनाने व बच्चों के साथ जुड़ने के लिए तैयार है. इस का मूल लक्ष्य बच्चों/ग्राहकों के साथ वार्त्तालाप करने, अच्छी आदतों को विकसित करने, जानवरों के प्रति दया करने आदि के लिए प्रोत्साहित करना भी है.''

आलिया आगे कहती हैं, ''एड–ए–मम्मा एक ऐसा ब्रैंड है जो बच्चों और पृथ्वी की परवा करता है. हमारे सभी कपड़े प्लांट बेस्ड और डिग्रेडेबल हैं. उन में इस्तेमाल किए गए बटन प्लास्टिकमुक्त हैं. हमारे टैग को बुकमार्क के रूप में फिर से उपयोग किया जा सकता है.''

अभिनेत्री तमन्ना भाटिया कर रही हैं कावेरी मेहंदी कोन को इंडोर्स

बालों, त्वचा और निजी सुरक्षा प्रदान करने वाले उत्पादों यानी कि हेयर केयर, हेयर कलर, हेयर रिमूवर जैसी विभिन्न श्रेणियों के लिए क्रीम, मेहंदी पाउडर, मेहंदी कोन, सैनिटरी पैड, बेबी डायपर आदि उत्पादों के माध्यम से आधुनिक भारतीय महिलाओं में आत्मविश्वास प्रदान करने का काम कर रही इंदौर की एफएमसीजी कंपनी 'वेलकिन इंडिया' ने पिछले कुछ समय से अपने उत्पादों के प्रचार के लिए बौलीवुड अभिनेत्रियों को जोड़ना शुरू किया है.

वेलनिक इंडिया ने पहले अपने हेयर रिमूवर क्रीम ब्रैंड 'इलोइस' के लिए उर्वशी रौतेला को जोड़ा था और अब फिल्म 'बाहुबली' फेम अभिनेत्री तमन्ना भाटिया को 'कोवरी मेंहदी कोन' को इंडोर्स करने के लिए जोड़ा है. इस का पहला विज्ञापन लगभग हर टीवी चैनल व डिजिटल प्लेटफौर्म पर लाइव हो चुका है. कंपनी इस पर तकरीबन 50 करोड़ रुपए खर्च कर रही है.

शादी के मौसम में मेंहदी की बिक्री काफी बढ़ जाती है, इसलिए कंपनी ने आनंद ओबेराय की विज्ञापन एजेंसी की मदद से ममता शर्मा की आवाज में मेंहदी का खास गाना तैयार किया. फिर विज्ञापन फिल्म निर्देशक आनंद ओबेराय ने इस गीत को तमन्ना भाटिया पर 70 भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय डांसरों के साथ फिल्माया जिसे लोग देख रहे हैं.

क्यों उत्साहित हैं आदिल हुसैन

दक्षिण भारतीय फिल्मकार विजय जयपाल के निर्देशन में बनी मनोवैज्ञानिक हौरर फिल्म 'निर्वाण इन' के ओटीटी प्लेटफौर्म 'सिनेमा प्रिन्योर' पर 11 दिसंबर से 99 घंटों के लिए रिलीज होने की खबर से आदिल हुसैन काफी उत्साहित हैं. इस में आदिल हुसैन ने संध्या मृदुल व राजश्री देशपांडे के साथ अभिनय किया है.

वैसे, वर्ष 2019 में '24वें बुसान इंटरनैशनल फिल्म फैस्टिवल में इस फिल्म का विश्व प्रीमियर हो चुका है. 'निर्वाण इन' एशियन प्रोजेक्ट मार्केट के तहत बुसान में चुनी गई एकमात्र भारतीय फिल्म रही. इस के अलावा इस फिल्म को प्रतिष्ठित एशियाई सिनेमा फंड से सम्मानित किया गया. पर अब तक यह फिल्म सिनेमाघरों में नहीं पहुंची है. लेकिन अब ओटीटी प्लेटफौर्म 'सिनेमा प्रिन्योर' पर आने से आदिल हुसैन खूब उत्साहित हैं.

फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने वाले जानेमाने अभिनेता आदिल हुसैन कहते हैं, ''फिल्म 'निर्वाण इन' कथा के स्तर पर बहुत ही अद्वितीय है. हम भारतीय सिनेमा में शायद ही इस शैली को देखते हैं. मुझे मेरे किरदार की यह वास्तविकता बहुत पसंद आई, जो कि आसानी से बुरे सपने से उबर जाता है और बहुत समझदारी से काम लेता है. मैं ने इस तरह की भूमिका अब तक कभी नहीं निभाई. मुझे लगता है कि विजय जयपाल के पास भारतीय सिनेमा को पेश करने के लिए बहुतकुछ है. मुझे आशा है कि उन्हें वह मिलेगा जो वे वास्तव में चाहते हैं.''

मनाली, माजुली (असम) और चेन्नई में फिल्माई गई फिल्म 'निर्वाण इन' की कहानी उस नाविक की है जो आत्महत्या करने के असफल प्रयास के बाद जब पहाड़ों में एक रहस्यमय रिजोर्ट के प्रबंधक के रूप में नौकरी करता है, तब उसे अपने अंधेरे अतीत का सामना करना पड़ता है.

आर्यमान सेठ की नई उड़ान

दिल्ली निवासी आर्यमान सेठ की हीरे व जवाहरात में रुचि थी. वे जौमोलौजिस्ट का प्रशिक्षण हासिल करने के लिए बैल्जियम जाना चाहते थे, पर नहीं जा पाए, तो मुंबई आ कर 'जौमोलौजिस्ट' का प्रशिक्षण लेने लगे. इसी बीच, खाली वक्त में अपने सुंदर व आकर्षक व्यक्तित्व के चलते मौडलिंग में व्यस्त हो गए. फिर शौक के चलते उन्होंने एक सीरियल 'नियति' में अभिनय किया और यहीं से उन की जिंदगी बदल गई. फिर वे जौमोलौजिस्ट बनने के बजाय अभिनेता बन गए. कई सीरियलों में अभिनय किया.

विक्रम भट्ट की वैब सीरीज 'नेकेड' में बोल्ड व मुख्य किरदार निभाया. कोरोना के लौकडाउन के दिनों में अपने मित्र व अभिनेता रित्विक धनजानी के साथ मिल कर अपना प्रोडक्शन हाउस शुरू कर दिया है. अब वे अपने प्रोडक्शन हाउस के तहत वैब सीरीज, लघु फिल्में, सीरियल आदि बनाना चाहते हैं. मगर अपने प्रोडक्शन हाउस की फिल्मों में वे स्वयं अभिनय करने के बजाय नई प्रतिभाओं को अवसर देंगे.

धर्मेंद्र अब अपनी तीसरी पीढ़ी के साथ

धर्मेंद्र अपने परिवार को आगे बढ़ाने के लिए कदम उठाते रहते हैं. जब उन के बेटों सनी देओल व बौबी देओल का कैरियर ढलान पर था, तब 2007 में उन्होंने अनिल शर्मा के निर्देशन में फिल्म 'अपने' का निर्माण करने के साथ ही उस में अपने दोनों बेटों के साथ खुद भी अभिनय किया था. फिल्म को जबरदस्त सफलता मिली थी. अब पूरे 14 वर्ष बाद धर्मेंद्र फिल्म 'अपने' का सीक्वल 'अपने 2' का निर्माण करने जा रहे हैं, जिस का निर्देशन भी अनिल शर्मा करेंगे. इस में इस बार धर्मेंद्र के साथ उन के दोनों बेटे सनी देओल व बौबी देओल के अलावा धर्मेंद्र के पोते व सनी देओल के बेटे करण देओल भी अभिनय करने जा रहे हैं. इस तरह अपनी ही फिल्म में धर्मेंद्र अपनी दूसरी व तीसरी पीढ़ी के साथ अभिनय करने वाले हैं. इतना ही नहीं, अनिल शर्मा बौलीवुड के एकमात्र निर्देशक बनने की राह में कदम रख चुके हैं, जिन्होंने देओल की 3 पीढ़ियों के साथ काम किया है.

धर्मेंद्र कहते हैं, ''फिल्म 'अपने' मेरे जीवन की सब से अच्छी फिल्मों में से एक है. हमारी पूरी टीम द्वारा किया गया संयुक्त प्रयास आप सभी ने बहुत अच्छी तरह से स्वीकार किया. अब मैं बेहद ही खुश हूं क्योंकि मुझे अपने पूरे परिवार, मेरे बेटे सनी, बौबी और मेरे पोते करण के साथ 'अपने 2' की शूटिंग करने का मौका मिलेगा. यह एक बहुत ही खास फिल्म होगी और मैं शूटिंग के लिए उत्सुक हूं.''

ओटीटी प्लेटफौर्म से नाराज हैं नवाजुद्दीन सिद्दीकी

नवाजुद्दीन सिद्दीकी की 7 वर्ष से बंद पड़ीं 'अनवर का अजब किस्सा', 'घूमकेतु', 'सीरियस मैन' और 'रात अकेली है' जैसी फिल्में ओटीटी प्लेटफौर्म की ही बदौलत दर्शकों तक पहुंच पाईं. मगर नवाजुद्दीन सिद्दीकी ओटीटी प्लेटफौर्म के रवैए से खुश नहीं, बल्कि काफी नाराज हैं. वे कहते हैं, ''हम लोग आर्ट को धंधा बना देते हैं.''

ओटीटी प्लेटफौर्म के रवैए की आलोचना करते हुए नवाजुद्दीन कहते हैं, ''जब ओटीटी प्लेटफौर्म की शुरुआत हुई तो हमें लगा था कि दर्शकों को उत्कृष्ट कंटैंट मिलेगा. पर ऐसा नहीं हो रहा है. हर कोई कला के लिए नहीं, बल्कि व्यापार के लिए डिजिटल प्लेटफौर्म पर कुछ करना चाहता है. शुरू में ओटीटी बेहतरीन सामग्री के लिए एक मंच हुआ करता था, जो विशिष्ट बौलीवुड रूप से अलग था. उस का एक विशिष्ट चरित्र था. मैं सामाजिक सामग्री के बारे में बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि दर्शकों की पसंद की बात कर रहा हूं, जो नियमित बौलीवुड से अलग कंटैंट चाहते हैं. फिलहाल भरमार हो रही है. हमारे पास भेड़चाल व झुंड मानसिकता की प्रवृत्ति है. अभी तो इस में और अधिक गिरावट आने वाली है.

''हम कला को व्यापार में बदलने में माहिर हो गए हैं. शुरू में यह कला है और फिर अंत में एक व्यवसाय में बदल जाता है. मुझे डर है कि यह ओटीटी अंतरिक्ष में भी रिस जाएगा. मुझे व्यवसाय के नाम पर कुछ भी और सबकुछ दिखाने की प्रवृत्ति का डर है. ऐसा होगा, वास्तव में ऐसा होना शुरू हो चुका है.''

नवाजद्दीन सिद्दीकी आगे कहते हैं, ''उदाहरण के लिए मुझे उम्मीद नहीं थी कि इस प्रकार की फिल्में नैटफ्लिक्स पर रिलीज होंगी, जिन्हें मैं देख नहीं पाऊंगा. लेकिन उन्हें नैटफ्लिक्स, विशेषकर, भारत में रिलीज किया जा रहा है. जबकि दर्शकों को बेहतरीन कंटैंट के लिए नैटफ्लिक्स और अन्य ओटीटी सेवाओं की बहुत आवश्यकता है.''

फिल्म 'सलार' में प्रभास का नया अवतार

आखिरकार रहस्य खत्म हुआ. 'हौम्बले फिल्म्स' ने विजय किरागंदूर द्वारा निर्मित और प्रशांत नील द्वारा निर्देशित तथा प्रभास के अभिनय से सजी अपनी बहुप्रतीक्षित नई फिल्म का शीर्षक घोषित कर दिया है. इस का नाम है– 'सलार'. इस में पहली बार प्रभास एक हिंसक चरित्र का चित्रण करने वाले हैं, जो कि सिनेप्रेमियों को आश्चर्यचकित करने वाली बात होगी.

एक अंडरवर्ल्ड एक्शन थ्रिलर फिल्म 'सलार' को 2021 की सब से बड़ी प्रदर्शित होने वाली फिल्म माना जा रहा है. निर्माताओं द्वारा फिल्म के आधिकारिक पोस्टर को साझा करने के तुरंत बाद, प्रभास के प्रशंसकों ने उन की उत्तेजना को साझा किया और उसी के लिए शुभकामनाएं दीं.

फिल्म के निर्माता विजय किरागंदूर कहते हैं, हौम्बले फिल्म में हम ने हमेशा अपने दर्शकों को जीवन के लिए सिनेमाई अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य रखा है. यह हमारे लिए बहुत खास है. वास्तव में हम निर्देशक प्रशांत नील और अभिनेता प्रभास का साथ मिलने से बहुत खुश हैं. ये दोनों बहुत अच्छे हैं. हम जल्द ही शूटिंग करने वाले हैं.''

निर्देशक प्रशांत नील ने कहा, ''विजय किरागंदूर और प्रतिभाशाली प्रभास का साथ मिलने से बेहद रोमांचित हूं. हम इस फिल्म को ले कर लंबे समय से बातचीत कर रहे थे. यह एक खास तरह की एक्शन फिल्म होगी. दर्शकों ने अब तक प्रभास को इस अवतार में पहले कभी नहीं देखा होगा, जो मुझे विश्वास है कि सिनेमा प्रशंसकों को पसंद आएगा.''

फिल्म 'सलार' के संदर्भ में प्रभास कहते हैं, ''मैं हमेशा से हौम्बेल फिल्म्स के साथ काम करना चाहता था और हमारी फिल्म के लिए निर्देशक के रूप में प्रशांत नील हैं. मुझे नहीं लगता कि इस के लिए एक बेहतर और रोमांचक अवसर और कोई हो सकता है. यह एक बहुत ही रोमांचक फिल्म है और मेरा किरदार बेहद हिंसक है. इस तरह का किरदार मैं ने पहले कभी नहीं किया है. यह पैन इंडियन फिल्म है और मैं पहले से ही सैट पर आने का इंतजार नहीं कर सकता.''

–शांतिस्वरूप त्रिपाठी ●

कुंआरे नैन

आज की रात फिर नैन कुंआरे रह गए,
दिल में इक कसक इक याद तुम्हारी रह गई.

आज की रात... दिल में इक कसक...

नींद जा पहुंची हैं ख्वाब ए प्रीतम के पास,
सजीसजाई सुहागरात तैयारी रह गई.

आज की रात... दिल में इक कसक...

शायद नीद को भी चाहिए ख्वाबों का दहेज,
गम के अंधेरे में प्यासे नैन बिचारे रह गए.

आज की रात... दिल में इक कसक...

दीवाने हुए हैं नैन गुलाल फागुन की तरह,
इंतजार करती हुई पलकें ही प्यारी रह गईं.

आज की रात... दिल में इक कसक...

कहां से लाऊं ख्वाब सजाऊं सजनी तुम्हें,
अपने तो ख्वाब बस तुम्हारे रह गए.

आज की रात फिर नैन कुंआरे रह गए,
दिल में इक कसक इक याद तुम्हारी रह गई.

–मनोजवम ●

तेरा प्यार नशीला

इन आंखों का पानी,
दर्दों का सैलाब सरीखा है,
तेरा रोज हकीकत में मिलना,
इक ख्वाब सरीखा है.

उंगलियों पर गिनते हैं,
नित तेरा आनाजाना हम,
ये प्यारमुहब्बत का रिश्ता,
एक हिसाब सरीखा है.

छू कर तुझ को महकी है,
जीवन की बगिया अपनी तो,
तेरा खिलता, महका नाजुक बदन,
गुलाब सरीखा है.

नजरों में रख कर पढ़ना चाहेंगे,
ताउम्र तुझे हम,
तेरा मुखड़ा लगता मुझ को,
एक किताब सरीखा है.

मदहोश रहा दिल अपना,
बस तेरी चाहत में साकी,
तेरा प्यार नशीला,
तेरा इश्क शराब सरीखा है.

–गोविंद भारद्वाज ●

अपना गम छिपाना पड़ता है

अपना गम भी छिपाना पड़ता है,
बेवजह मुसकराना पड़ता है.

जीस्त जैसी भी हो मगर हंस के,
बोझ इस का उठाना पड़ता है.

रिश्ता दिल का यों ही नहीं जुड़ता,
मिलने भी आनाजाना पड़ता है.

पेट बातों से ही नहीं भरता,
दो निवाला खिलाना पड़ता है.

आज का दौर है अलग सब से,
कौन क्या है बताना पड़ता है.

दोस्ती का उसूल है साहिर,
वादा कर के निभाना पड़ता है.

–जितेंद्र सुकुमार 'साहिर' ●

गूंगा सा

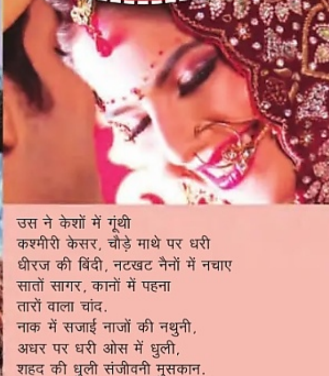

उस ने केशों में गूंथी
कश्मीरी केसर, चौड़े माथे पर धरी
धीरज की बिंदी, नटखट नैनों में नचाए
सातों सागर, कानों में पहना
तारों वाला चांद.
नाक में सजाई नाजों की नथुनी,
अधर पर धरी ओस में धुली,
शहद की धुली संजीवनी मुसकान.

और फिर पूछा उस ने लाज के अंगूठे से,
धरती की गोद को कुरेदते हुए,
सुनो कैसी लगती हूं मैं?

मैं एकटक देखता रह गया,
शब्दकोश फेंटता रह गया,
वह पांव पीट कर लौट गई,
मैं अब तक बैठा हूं,
उपमानों की गली में, गूंगा सा.

–आलोकेश्वर चबडाल ●

Small Screen

टाइगर पौप ने जीता डांस का खिताब

भारत के चर्चित रियलिटी शो 'इंडिया बैस्ट डांसर' के पहले सीजन में टाइगर पौप ने डांसविनर का खिताब जीत लिया है. टाइगर पौप गुरुग्राम से आते हैं, जो डांस के पौपिंग मैथड में माहिर हैं.

22 नवंबर को वे टौप फाइव फाइनलिस्ट में नंबर वन के लिए चुने गए. चुनने का आधार पब्लिक वोट पर आधारित था, जिस में कुल 3 करोड़ 28 लाख लोगों ने शो में वोट किया था.

विनर अवार्ड जीतने पर टाइगर को 15 लाख रुपए का चैक और महंगी कार इनाम में मिली. वहीं, उन की कोरियोग्राफर वर्तिका झा को 5 लाख रुपए इनामस्वरूप मिले. इस रेस में दूसरे नंबर पर मुकुल जैन रहे व तीसरे नंबर पर श्वेता वारीअर रहीं.

जीत के बाद टाइगर पौप ने कहा, ''मैं बहुत खुश हूं कि यह टाइटल मुझे मिला. मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मेरा डांस शो के इतने बड़े मंच में आने का और इस मंच से खिताब जीतने का सपना आज पूरा हो रहा है. मेरा इस मंच पर औडिशन से ले कर पहली परफौर्मैंस और फिर खिताब जीतने तक का सफर काफी दिलचस्प और सीखने वाला रहा है.

टैलेंट में इतना नशा है, उसे पियो

मशहूर टीवी कौमेडियन भारती सिंह और उन के हसबैंड हर्ष लिंबाचिया को एनसीबी ने शनिवार 21 नवंबर को डिटेन कर लिया. यह तब हुआ जब नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो यानी एनसीबी ने उन के अंधेरी (मुंबई) स्थित घर पर रेड मारी थी. उन के घर से 85.5 ग्राम गांजा बरामद हुआ था. पूछताछ के बाद दोनों ने इस के इस्तेमाल को स्वीकार भी किया. उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया. इस घटना के बाद एक बार फिर कलाकारों द्वारा ड्रग्स के सेवन की चर्चा खबरों में है. ऐसे में कौमेडी के दिग्गजों के बयान सामने आए हैं.

मशहूर ऐक्टर जौनी लीवर ने कहा, ''ड्रग्स अब ऐसा हो गया है जैसे पहले के समय में अलकोहल था. ड्रग के यूज से आज की जैनरेशन अपनी लिमिट क्रौस कर रही है. सोचो, अगर आप ऐसे पकड़े जाते हैं तो आप की फैमिली, जो आप की खबर टीवी पर देख रही होगी, पर क्या बीतेगी? अगर यह ऐसा ही चलता रहा तो हमारी इंडस्ट्री बरबाद हो जाएगी.'' वे अपने पुराने दिनों को याद करते हुए आगे कहते हैं कि उन्हें एक बार शराब पीते देख कल्याणजी ने कहा था, 'जौनी भाई, शराब मत पियो, टैलेंट में इतना नशा है उसे पियो.'

वहीं, कौमेडियन राजू श्रीवास्तव ने भारती सिंह के साथ अपने पुराने अनुभव बताए और ड्रग केस में उन की आलोचना की. लेकिन इस पूरे मामले में सरकार की जिम्मेदारी की बात भी कही. उन्होंने कहा, ''छोटे कलाकारों को पकड़ने से बेहतर सरकार को ड्रग की सप्लाईचैन को काटने की जरूरत है. सिर्फ बौलीवुड टारगेट नहीं होना चाहिए. बड़े राजनेता भी ऐसा करते हैं. भारती गुनाहगार है लेकिन सरकार देखे कि यह ड्रग आ कहां से रहा है.''

सना की शादी

टीवी इंडस्ट्री की चर्चित अदाकारा सना खान ने 20 नवंबर को गुपचुप शादी कर ली है. बिग बौस फेम सना की शादी सूरत के रहने वाले मुफ्ती अनस सैयद के साथ हुई है. शादी के बाद सना खान ने अपने पति संग तसवीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की थीं, जो सोशल मीडिया पर काफी शेयर की जा रही हैं.

इस के अलावा सना का एक वीडियो भी वायरल हो रहा है जिसे मशहूर फोटोग्राफर भयानि ने अपने इंस्टा से शेयर किया था. इस वीडियो में सना और अनस दोनों निकाह के जोड़े में नजर आ रहे हैं. दोनों ने वाइट आउटफिट पहना है. शादी के बाद सना का नाम अब सैयद सना खान हो गया है. सना के पति अनस सूरत में एक मौलाना हैं.

सना ने कई टीवी शोज और फिल्मों में काम किया है. सना ने कुछ समय पहले ही फिल्म और टीवी इंडस्ट्री छोड़ने की बात अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर कही थी. जिस से उन के फैन उदास हुए थे. और अब शादी कर उन्होंने जरूर अपने सभी प्रशंसकों को चौंका दिया है.

सना ने शादी की अपनी पहली फोटो शेयर करते हुए लिखा है, ''एकदूसरे के लिए प्यार, हम दोनों को साथ रखे.''

शादी के बाद सना चर्चा में हैं. प्रशंसकों के कई रिऐक्शन आ रहे हैं. उन के इस फैसले से वाकई उन्होंने सभी को हैरान जरूर किया है. –प्रतिनिधि ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां काले घेरे छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for
Strong Immunity
ZEE
ZEE DRUGS

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

(REGISTERED) RNI 6502/60 DL(c)-14/1090/2018-20 WPP U(c) 149/18/2018-20 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20 Published on 20/11/2020, Pgs. 48

PARLE

क्या आपको पार्ले पसंद है?
तो आपको हमारी स्नैक्स और
बेकरी की रेंज भी ज़रूर पसंद आएगी.

PARLE
Rusk
Real Elaichi
PREMIUM RUSK
PARLE
FullToss
Karare Masala Snacks
Noodle Masala
Parle's
Wafers
Masala Masti
PARLE
Chatkeens
Moong Dal
Chatpate Namkeens
Happy Happy Cakes
PINEAPPLE
I am VEG

पेश है स्वादिष्ट स्नैक्स और बेकरी प्रोडक्ट्स की विशाल रेंज हाउस ऑफ पार्ले की ओर से. चाहे क्रिकेट मैच हो या पार्टी, हमारे प्रोडक्ट्स हर लम्हे को यादगार बना देते हैं.

हमारी रेंज:

- चैटकीन्स – 15 वैरिएंट्स • पार्लेज़ वेफर्स – 7 फ्लेवर्स • फुलटॉस– 4 फ्लेवर्स
- हैप्पी हैप्पी केक्स – 3 फ्लेवर्स • रस्क – 2 फ्लेवर्स

Visit our website: www.parleproducts.com